मान् सुखसागरजी महाराजके सघाडानुवर्तिनी श्रीमती गुरुणीजी साहबा श्री पुण्यश्रीजी की शिष्या श्रीमती सौभाग्यश्रीजी की विदुषी स्वर्गस्थ शिष्या

॥ श्री मनोहरश्रीजी ॥
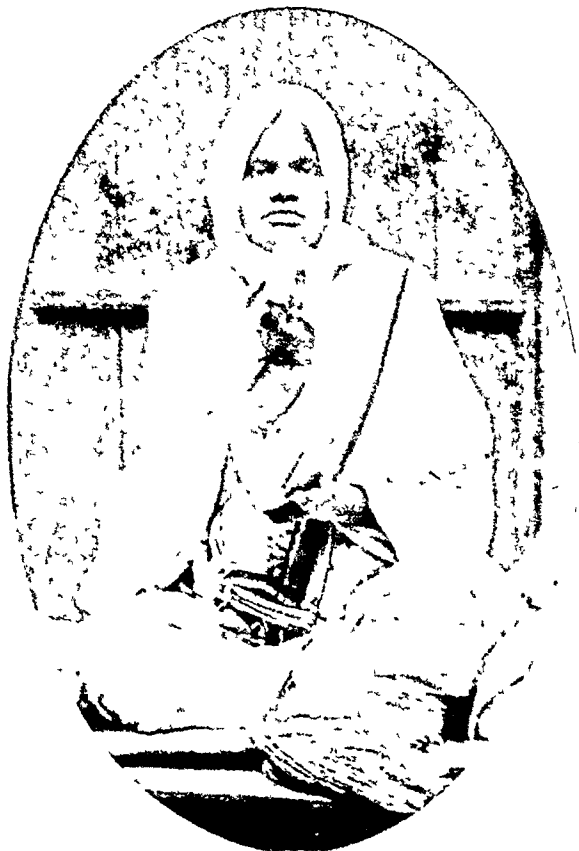
जन्म वि.सं. १९५६] दीक्षा वि.सं. १९७२ [स्वर्गवास वि सं. १९८०

भूमिका

इस ग्रन्थका गुजराती भाषान्तर मुझे साध्वी शिरोमणि श्रीमती सुवर्णश्रीजी महाराज ने दिया व फरमाया कि इसका हिन्दी भाषान्तर होसके तो बनाना जरूरी है। मैने इसको आद्योपान्त पढ़ा व महान् उपकारी जानकर भाषान्तर शुरु किया।

समयाभावसे इसका हिन्दी अनुवाद करनेमे देरी होने लगी अत मैने यह कार्य सीतामहु निवासी श्रीयुत दुलेसिंहजी मेहता को सौंपा उन्होने यथा शक्य गुजराती का हिन्दी अनुवाद किया, पर आशय की कही २ त्रुटियाँ रहजानेसे मुझे पुन संशोधन करनापडा। श्रीयुत दुलेसिंहजी को इस सहायता के लिये मै साधुवाद देताहूँ.—

श्रीयुत भुवन-भानु केवली महाराजने जो अपनी आत्म कथा व अनंत भवोका वर्णन सक्षेपमें किया है, वही आचार्य श्रीने इस ग्रन्थमें बताया है।

हमारे चरित नायक ने कर्म, प्रकृति, सुमति, कुमति, संयम, असत्यादि गुण अवगुणो का अपने भवोंके साथ ऐसा वर्णन किया है कि प्रत्येक प्राणी इसे पढ़कर सरलतया यह जानसकता है कि यह आत्मा ससार मे कैसे २ दुःख सहन करके कितनी कठिनता से मनुष्य भव उच्च कुलादि प्राप्त करता है।

पूर्वक राजासे निवेदन किया कि हे स्वामिन्! आपका नियुक्त किया हुवा पूर्वदिशा का उद्यान पालक भेटकी आज्ञा चाहता है राजा की अनुमति पा जल्द प्रतिहारी ने वापस जा उद्यान पालक को राजा के समक्ष उपस्थित किया।

सन्मुख होतेही विनयपूर्वक प्रणाम करके उद्यान पालक ने हाथजोड़ निवेदन किया कि हेदेव, मैं श्रीमान को वधाई देने उपस्थित हुवा हूँ कि आपके उद्यान मे अनेक देव, दानव, विद्याधर और मनुष्योंके पूज्य, अपने चरण स्पर्श से भूमिको पवित्र करने वाले श्री भुवन भानु केवली पधारे है-इस खुशखबरी के सुनतेही राजा वहुत प्रसन्न हुवा और थोड़ी देर तक अवचनीय सुख का अनुभव कर उसने द्वारपाल को बहुतसा इनाम देकर विदा किया।

तत्पश्चात शीघ्रही सब तरह की सामग्री तय्यार करा कैलाश पर्वत के सद्रश विशालकाय हाथी पर सवार हो देव दानवो से मथित समुद्र के झाग के समान निर्मल और सफेद छत्रसे धूपका निवारण करता हुवा शरद ऋतु के

पूर्वक राजासे निवेदन किया कि हे स्वामिन्! आपका नियुक्त किया हुवा पूर्वदिशा का उद्यान पालक भेटकी आज्ञा चाहता है राजा की अनुमति पा जल्द प्रतिहारी ने वापस जा उद्यान पालक को राजा के समक्ष उपस्थित किया।

सन्मुख होतेही विनयपूर्वक प्रणाम करके उद्यान पालक ने हाथजोड़ निवेदन किया कि हेदेव, मैं श्रीमान को बधाई देने उपस्थित हुवा हूं कि आपके उद्यान में अनेक देव, दानव, विद्याधर और मनुष्योंके पूज्य, अपने चरण स्पर्श से भूमिको पवित्र करने वाले श्री भुवन भानु केवली पधारे है-इस खुशखबरी के सुनतेही राजा बहुत प्रसन्न हुवा और थोड़ी देर तक अवचनीय सुख का अनुभव कर उसने द्वारपाल को बहुतसा इनाम देकर विदा किया।

तत्पश्चात शीघ्रही सब तरह की सामग्री तय्यार करा कैलाश पर्वत के सद्रश विशालकाय हाथी पर सवार हो देव दानवो से मथित समुद्र के झाग के समान निर्मल और सफेद छत्रसे धूपका निवारण करता हुवा शरद ऋतु के

मंत्रियों से घिरा हुवा रत्न जटित सुवर्ण सिंहासन पर बैठा हुवा राज्य दरबार को सुशोभित कररहाथा इस समय सिंहासनारूढ़ राजा के तेज के सामने सूर्य का प्रकाश भी राजभवन में प्रवेश नहीं करसक्ताथा सिंहासन के रत्नों की चमक और राजा के तेजस्वी ललाट की आभामें सारा राजभवन देदीप्यमान हो रहाथा। इसी समय एका एक कहीं से बहुत सुगंधित पवन आकर सारे सभाजनों को सुखी करने लगा और साथही अनेक प्रकार के दैविक वाजित्रों, किन्नर देवताओं के मधुरगीतों और अप्सराओं के नूपुरों की मधुर ध्वनि सबों के कानों में पहुंची-चकित होकर राजा व समस्त सभाजन उत्कण्ठापूर्वक ऊँचे नेत्र करके एकटक आसमान को देखने लगे और आपस में एक दूसरे से पूछने लगे "यह क्या है" इस प्रकार ज्योहीं राजाने भी आश्चर्य चकित हो मंत्रिमण्डल से दर्याफ्त किया कि "यह क्या है" त्योंहीं चन्दन चर्चित ललाट वाला, सूवर्ण दण्डधारी, मुक्ताफलके हारसे सुशोभित एक प्रतिहारी ने सभामण्डप में प्रवेश कर, प्रणामकर अतिहर्ष

पूर्वक राजासे निवेदन किया कि हे स्वामिन्! आपका नियुक्त किया हुवा पूर्वदिशा का उद्यान पालक भेटकी आज्ञा चाहता है राजा की अनुमति पा जल्द प्रतिहारी ने वापस जा उद्यान पालक को राजा के समक्ष उपस्थित किया।

सन्मुख होतेही विनयपूर्वक प्रणाम करके उद्यान पालक ने हाथजोड़ निवेदन किया कि हेदेव, मैं श्रीमान को वधाई देने उपस्थित हुवा हूँ कि आपके उद्यान में अनेक देव, दानव, विद्याधर और मनुष्योंके पूज्य, अपने चरण स्पर्श से भूमिको पवित्र करने वाले श्री भुवन भानु केवली पधारे है-इस खुशखवरी के सुनतेही राजा वहुत प्रसन्न हुवा और थोड़ी देर तक अवचनीय सुख का अनुभव कर उसने द्वारपाल को वहुतसा इनाम देकर विदा किया।

तत्पश्चात शीघ्रही सव तरह की सामग्री तय्यार करा कैलाश पर्वत के सद्रश विशालकाय हाथी पर सवार हो देव दानवो से मथित समुद्र के झाग के समान निर्मल और सफेद छत्रसे धूपका निवारण करता हुवा शरद ऋतु के

महारोगी को अमृतरस के समान मुझे अपने पूर्ण भाग्योदय से श्रीमान् के आगमन की सूचना मिली-आपके आगमन की सूचना मिलते ही मैं घोर संग्राम मे हारा हुआ व्यक्ति के समान आपसरीखे महाबलवान की शरण में दौड़ कर आया हूं अब आप कृपाकर मुझे बताइये कि इस संसार में मेरी रक्षा कौन करेगा –

राजा का यह प्रश्न सुनकर अपनी वाणी से अज्ञान अंधकार को दूर करनेवाले मुनिराज ने उत्तर दिया कि हे महाराज जिसने आप सरीखे अनेक प्राणियों की रक्षा की है और विशेष कर मेरी भी रक्षा की है वही तुम्हारी भी रक्षा करेगा।

यह सुन राजा अचंभित हो कहने लगा-हे महामान्य आपतो संसार के रक्षक है आपको रक्षा करने वाला कोई अन्य व्यक्ति हो यह बड़े आश्चर्य की बात है कृपया साफ २ यह बतलाइये कि वह अति ऊँचा व्यक्ति कौन है?

इस प्रश्न को सुनकर मुनीश्वर कहने लगे, "हे महाराज,

यह विषय बहुत लम्बा है और आपका मन विक्षिप्त है इसलिये इस समय इसका विवरण नहीं कियाजासक्ता"।

ऐसा सुनकर राजाने कहा, हे भगवन! एसा न कह क्योंकि एक मूर्ख प्राणी भी सुधापान की प्राप्ति होतेहुए विषपान की प्राप्ति के लिये उत्सुक नहीं होता तथा जैसे मयूर मेघके आगमन की राह देखता है वैसे ही मैं आपकी राह देखता था इतनेही में आपका यहां पधारना होगया, हे भगवन! मुझे अभी किसी प्रकार का दूसरा व्याक्षेप नहीं है इसलिये हे पूज्य, आप बिनाकिसी विकल्पके अ-पने अमृत मय वचनो से मेरे श्रवणयुगल को सन्न कीजिये राजा की ऐसी जिज्ञासा जानकर ज्ञानी बोले, यदि ऐसा हो तो सावधान होकर सुनो।

अनन्त जीवो का निवासस्थान, सर्व सम्पत्तियों का मन्दिर, समस्त उत्तम जनो से अनियुक्त, समस्त आश्चर्यों का स्थान, ऐसा लोकोदर नाम का एक नगर था, हर एक प्रकार के वर्ण, जाति, गोत्र, फल, पुन्य, शिल्पकला,

इस प्रकार कर्मपरिणाम का गूढार्थ समझकर मोहराज भयभीत हुआ रागकेसरी घबराया, द्वेषगजेन्द्र डोलाय मान होनेलगा और उसका सारा कुटुम्ब चक्रसे ह प्रायः होगया फिर उसके मंत्रीवर्ग एकत्रित हुए स सामन्त आये, उन सबों ने मिलकर मोहराजा को क कि:- "हे देव! आप तीनो लोकों को क्षोभातुर करनेवा हो, आपको इतना बडा रज किसका हुआ"? इस प्रश्न दीर्घ श्वास डालकर वह बोला:- "तुम्हारा कथन सब सच्चा है। मेरा एक छोटासा लडका इन्द्रादि तक क्षोभातुर करसक्ता है मेरे परिवार को कोई दुःख देने सामर्थ नहीं है। परन्तु क्या कियाजाय? हम इस कु गृह विरोध से बिल्कुल कुम्हालगये हैं." इस प्र सुनकर वह बोला:- "हे देव! कर्मपरिणाम के स कोई नई खटपट हुई है क्या"? तब मोहराजा ने क 'सचमुच यह नया तो कुछ नहीं, तुम जानते ही हो. संसारी जीवमध्यस्थमेत्री बनीकर हमको दुःख देनेवा है. इसके पास किसी महपुरुषने हमारा वैरी महागन करने का प्रयत्न किया है, ऐसा सुननेमें आया है वह हम

किया वहां से पीछा मोहराजा उसको एकेन्द्रियादि मे
लेगया और वहां अनन्त काल तक उसको बांध रखा
फिर कर्मपरिणाम उसको मनुष्य क्षेत्र में निमलपुर ना
के नगर में रमण शेठ के घर सुमित्र नाम के पुत्र त
उत्पन्न किया और वह क्रमसे यौवन अवस्थाको प्राप्त हुआ।

एक समय मोहसैन्य से स्खलित अन्तरवाले संवे
श्री से भेट किये हुए, प्रशमालंकार से सुशोभित, क्षमादि
संपत्तिवान, ब्रह्मचारी, सद्गुणी, शुद्ध चारित्र में अच
दर्शन में दृढ, बुद्धिमान तथा श्रुतज्ञान में निष्ठावाले गुण
लक्ष्मी नामके आचार्य को बहुशालक नामके बाग
कर्मपरिणाम लेआया, यह हकिकत जानकर मुनिके
लिये अति उत्कण्ठित राजा अपने मंत्री व श्रेष्ठी सामंत
वगैरा के उन मुनिके पास गये, ज्योंही सुमित्र जाने
तैयार हुआ त्योंही इस बातको सुन मोहराजा बोला:-"अरे
इस संसारी जीव को पकड़ो, नहीं तो अपने सबोंका ना
हुआ ही चाहता है। यह कहकर तुरंत उठकर अपने सुभ
को उसको अटकाने के लिये भेजे। उसने उस प्रव

रचना कर पहिले आलस को उसके शरीर मे प्रवेश कराया, गृहकुटम्ब आदि से मोह उत्पन्न कराया, इस प्रकार की अवज्ञा उत्पन्न कर जाति वगैरा से मदोन्मत्त किया, क्रोध को बढ़ाया, प्रमाद को उत्सुक किया कृपणता बढ़ाई, नरकादि का भय छुडाया, शोक को हाजिर किया, कुदृष्टि के उपदेश से प्राप्त होनेवाला ज्ञान ज्यादे प्रगटाया, घर, हवेली, कृपीकर्म, वगैरा विपयों की चपलता जागृत की। नट, नाटक वगैरा का शोक बढ़ाया द्यूत क्रिड़ा को शुरू की इत्यादि सुभट बहुत हल्ला करते हुए वहां गये और प्रतिदिन हर एक सुभट ने उसको पकड़ कर अटका रखा और गुरू के पास नहीं जाने दिया। फिर गुरु दूसरी जगह विहार कर गये, धीरे २ सुमित्र यमका अतिथी हुआ और फिर पहिले के माफिक एकेन्द्रियादिक में बहुत काल तक फिरा, फिर कर्मपरिणाम उसको मनुष्य गति में ले आया और बड़े कष्ट से उसके पास सदगुरू और सदागमको लाया परंतु आलस्यादि के कारण वह विचारा पहिले के मुवाफिक श्रुति सङ्ग न पासका कुदृष्टि और उसकी प्रतो

ने उसको फिर मारकर एकेन्द्रियादिक में बहुत समय तक फिराया. इस प्रकार अनन्तवार हुआ।

एक समय उज्जैन में गंगादत्त नाम के गृहस्थ के घर मित्रुदत्त नाम का पुत्र उस संसारी जीवको कर्मपरिणाम ने उत्पन्न किया, और उसकी यौवन अवस्था में लेकर कर्मपरिणाम उस प्रदेश में सद्गुरु और सदागमों ले आया और बलात्कार से आलस्यादिक का नाश करके सद्गुरु और सदागम के पास उसको ले आया यह वृत्तान्त जानकर मोहराजा चिंता रूप महासागर में मग्न होकर बोला:- "अहो ! मंत्री और सामन्तो. हमारे में जीतनी स्थान. वह सब निकल गई। इसलिये उस जीव के पास किसको भेजूं? क्योंकि उसको श्रुतिसगम हुआ।" इस प्रकार सुनकर ज्ञानावरण नाम का मंत्री खड़ाहोकर बोला:- "हे देव ! इस प्रकार कायरता मत बताओ. क्योंकि आपके सैन्य बहुत हैं अभी तो समुद्र में से एक भी बिन्दु नहीं गया, अभी तो मेरी पुत्री शून्यता का [illegible] बहुत है, [illegible] उसको श्रुति सद् होते हुए भी मेरी

पुत्री के वश पहुँचतेही वह निष्फल होजावेगा। इसलिये इसको आज्ञाहो" मोहमहिपति ने तुरन्त उसको आज्ञा दी. आज्ञापातेही वह वहां गई। सिंधुदत्त को सद्गुरु और सदागम के समागम से श्रुति ने उसको माफ २ मिथ्यादर्शन. कुदृष्टि और उसकी पुत्री के दोष बनाये. सम्यग्दर्शन और उसकी पुत्री के गुण वर्णन किये मोहका भेद सब कहदिया. उसकी सैना की सब चेष्टा कही और चारित्र धर्म की कृपा से सपत्ति का वर्णन किया उसने हो चारित्र धर्म राजा की सैन्य के समागम से उत्पन्न हुआ सुख का सन्देशा कहा परंतु शून्यता के आने से उसका भाषितार्थ तो दूर रहा मगर 'मै कौन, यह कौन' और यह क्या बात कही गई यह सब उसके समझमें नहीं आया। फिर पर्षदा उठी तो किसी ने पूछाः- 'हे भद्र! तेने क्या सुना' उसने कहा. 'मैं कुछ नहीं जानता, उसके बाद फिर किसी दिन मित्रादिक के आग्रह से वह गुरु के पास गया वहां श्रुति सङ्ग हुआ. परन्तु शून्यता के प्रभाव से उसके हृदय में इस तरह से कुछ नहीं रहा जैसे चालनी में पानी नहीं ठहरता. इससे

गुरु और सदागम दूसरी जगह चलेगये। उसके बाद धर्मबुद्धि सिन्धुदत्त को भागवत आदि अन्य दर्शनीओं के समागम में लेजानेलगी जिस समय शून्यता उसका साथ छोड़देतीथीं उस समय वह उसका सब कथन सुनना और उसके मुआफिक करता था। इस प्रकार महान पाप में एक चित होने से उसको वहां से फि उठाकर एकेन्द्रियादिक में लेजाकर अनन्त काल बांध कर फिराया।

एक समय कर्म राजा ने विचार किया "अहो प विचारा किसी प्रकार चारित्र धर्म की सेना में जा न सक्ता क्योंकि मेरे बाधक यद्यपि बलवान है और उन निर्बल करने का उपाय यद्यपि मेरे ध्यान में है, प इसके करने से उनके शरीर को बड़ा नुकसान पहुंच है और वह मेरे शरीर से अलग नहीं है। इसलिये उन शरीर का नाश होने से मेरे शरीर का नाश होता ह इसलिये अब मेरेको क्या करना चाहिये? अथवा कि कुछ विचारने से जो होने वाला हो वह सही हो। इ

प्रकार चिन्ता करने से क्या ? कहा है किः-

"देहेपि जनितदाहं, सिंधुर्वडवानलं शशीशशकम् ।
नत्यजति कलक करं, प्रतिपन्न पराहि सत्पुरुपाः" ॥ १ ॥

"अपने को जलाकर शोपण करने वाली वडवानल को समुद्र कभी छोड़ता नहीं है और अपने कलक रूप होने पर कभी चन्द्रमा मृग को नहीं छोडता है"। क्योंकि सत्पुरुप स्विकृत किये हुए का पालन करनेवाले होते हैं। सहसात्कार से उपकार करने वाले गुणीजन अपना नुकसान का खयाल तक नहीं करते है। क्योंकि दीपक की वत्ती अपने को जलाकर भी दूसरों को प्रकाश देती है। जो भी चारित्र धर्म वगैरा मेरा क्षय करने का यत्न करते है, तो भी ऐसा ख्याल कभी नहीं करना चाहिये कि ये मेरा परम शत्रु है, सो उनपर उपकार करने से क्या ? क्योंकि उपकारी अथवा मत्स रहित लोगों पर दयाकी दृष्टि रखने से क्या विशेपता है ? परन्तु शत्रुओं के हजारों अपराध सहनकर उनपर दयालुता रखना बहुत उत्तम बात है। इस पर किसी ने कहा है कि -

"अपास्य लक्ष्मी हरणोत्थवैरता-मचिंतयित्वा च तदद्रिमर्दं
ददौ निवासं हरये महार्णवो. विमत्सरा धीरधियां हिवृत्तयः॥

"लक्ष्मीका हरण होनेसे जागृत हुऐ। वैरों को अल
करके तथा पर्वत मे किये हुए मर्दन को हृदय में न
लाकर, समुद्र ने विष्णु को अपनेमें स्थानदिया है"। सच
मुच धीर पुरुषों की वृत्ती मत्सरहित होतीहै। इससे चा
धर्म आदि मेरे शुभ विभाग का सदैव पोषण करते
है और मेरे स्वरूपको विस्तार पूर्वक जानते हैं। इन्हों
ही मुझको लोगोंमें प्रसिद्ध किया है और लोगों में मे
प्रसिद्धि करते हैं नहींतो मेरा नाम कोई नहीं जानता
तथा इस जगत में प्रसिद्धिके चाहने वाले कमती हैं
दूसरों कि भी प्रसिद्धि सहन नहीं कर सकते। कहा है कि

"नसमाजनिर्जं शशांको. गमनं न त्यजति खिद्यमानोपि।
गतावती प्रसिद्धिर्यस्मादन्यत्र गमनकृताम्" ॥ १ ॥

"आकाशमें हमेशा पराजय पानेपर भी चन्द्र अ
मन को छोड़ता नहीं है। जिससे दूसरी जगह ग

करने वालोंकी इतनी ज्यादे प्रसिद्धि देखने में आती है"
इत्यादि विचार करके, कर्म महाराजा ने एक समय उस
ससारी जीव को, विजयवर्धन नाम के नगर में सुलस
श्रेष्ठी के घर पुत्रपने उत्पन्न किया। उसका नंदन ऐसा
नाम रखा, वह यौवन अवस्था को प्राप्त हुआ इतने में
कर्मपरिणाम अवसर पाकर चुपके से उसके पास आकर
यथा प्रवृत्तिकरण नाम की तलवार उसको दी। और
कानमें कहा कि:- "इस तलवार से आत्मशत्रु मोहराजा
को कुछ न्युनसत्तरमो भाग छोडकर कुछ अधिक गुण-
त्तर भाग देह को इस तीक्षण खड्गसे टुकडे करदेना।
तथा ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, वेदनीय, और अंतराय
इन सामंतो को भी कुछ न्यून एकतीसवां भाग बादकर
बाकीका कुछ ज्यादे ओगणीस भाग शरीर का खण्डन
करना। इस तरह नाम और गोत्र इन दोनों शत्रुओं का
कुछ इकीसवां भाग रखकर बाकी कुछ अधिक शरीर
का ओगणीस विभागों को छेदडालना। इस प्रकार
खण्डित करके उनका आधा पतन करने से उनकी
सारी सैना का खण्डन होकर आधा पतन होजावेगा फिर

तू निराकुल होकर समग्र सुख का कारणभूत ऐसा सम्यग्दर्शन नाम के मत्री के घर का द्वार देख सकेगा। वह द्वार निविड ऐसा राग द्वेष की परिणतिरूप ग्रंथि के कपाट से बंधा रहता है उसके उखाडने का उपाय तेरे को बाद में कहूँगा अभी तो मै जितना बताता हूँ उतना हि करना"।

नन्दकुमार ने उसी प्रकार सबकाम किया। इस प्रकार यथा प्रवृत्तिकरणने ऊपर कहे मुवाफिक सातों कर्मों की स्थिति घटाई। इसमे ये नगर के दर्वाजे के पास रहने वाला कर्म भूपति सम्यक्त्वभवन नाम के बाग में सद्गुरु और सदागम को ले आया। फिर उनके पास नन्दन को लेगया और उसके सहायक नीके उसने सचेन क्रिया दिखाई. जिससे उसकी शून्यता नष्ट होगई

इससे उस समय मोहराजा को मूर्छा आगई. ज्ञाना वर्णीयादि मर्दन कदन करनेलगे, नाम और गो आक्रन्द करने लगे और रागकेसरी, ममुख आदि स

सैना में विलाप होनेलगा। उस समय मिथ्यादर्शन आत्मा को शांतकर और कुछ हिम्मतकर खड़ाहुआ. उस अवस्था को पहुँचोहुई सारी सैना को उसने देखा. उससे वह महादुष्ट शिरसे पाँव तक ईर्षा से भरपूर होकर अश्रद्धा नामका चूर्ण लेकर दौडाहुआ नंदन के पास गया। उस समय सद्गुरु और सदागमन ने विशुद्ध श्रुति के मुख से मोह और मिथ्यादर्शनादिक के म। दोप उसको कहे. चारित्रधर्म और सम्यग्दर्शनादिक के अनेक गुण कह बताये. धर्म के फलरूप स्वर्ग और मोक्ष समझाया और पाप का फलरूप नरकादिक बताया। इसके दक्षता के प्रभावसे नंदन ने यह सब समझलिया। इतनेमें तुरन्त मिथ्यादर्शन ने अश्रद्धान नामका महादुष्ट चूर्ण उसको देदिया. उससे असर होतेही नंदन ने विचार किया:- "अहो ! मिथ्यादर्शनादिक कहा है ? और चारित्र धर्म तथा सम्यग्दर्शनादिक कहां है ? पापसे नर्क की प्राप्ति होती है. ऐसा किसने देखा और धर्म करके स्वर्ग और मोक्ष में जाकर कौन पीछा आया है ? सचमुच इसकी विचित्र चरचा महासाहसको बनादेनेवाली है"

तू निराकुल होकर समग्र सुख का कारणभूत ऐसा सम्यग्दर्शन नाम के मंत्री के घर का द्वार देख सकेगा। वह द्वार निबिड ऐसा राग द्वेष की परिणतिरूप ग्रंथि के कपाट से बंधा रहता है उसके उखाडने का उपाय तेरे को बाद में कहूँगा अभी तो मैं जितना बताता हूँ उतना हि करना"।

नन्दकुमार ने उसी प्रकार सब काम किया। इस प्रकार यथा प्रवृत्तिकरणने ऊपर कहे मुवाफिक सातो कर्मों की स्थिति घटाई। इससे ये नगर के दर्वाजे के पास रहने वाला कर्म भूपति मनुष्यभवन नाम के बाग में सद्गुरु और सदागम को ले आया। फिर उनके पास नन्दन को ले गया और उसके सहायक नीके उसकी मर्दन किया दिखाई, जिससे उसकी शून्यता नष्ट होगई।

इससे उस समय मोहराजा की मूर्छा आगई, ज्ञाना-वर्णी आदि मादन रुदन करने लगे, नाम और गोत्र आक्रन्द करने लगे और रागकेसरी, प्रमुख आदि सब

सैना में विलाप होनेलगा। उस समय मिथ्यादर्शन आत्मा को शांतकर और कुछ हिम्मतकर खड़ाहुआ. उस अवस्था को पहुँचोहुई सारी सैना को उसने देखा, उससे वह महादुष्ट शिरसे पाँव तक ईर्षा से भरपूर होकर अश्रद्धा नामका चूर्ण लेकर दौडाहुआ नंदन के पास गया। उस समय सद्गुरू और सदागमन ने विशुद्ध श्रुति के मुख से मोह और मिथ्यादर्शनादिक के म। दोप उसको कहे, चारित्रधर्म और सम्यग्दर्शनादिक के अनेक गुण कह बतावे, धर्म के फलरूप स्वर्ग और मोक्ष समझाया और पाप का फलरूप नरकादिक वताया। इसके दक्षता के प्रभावसे नंदन ने यह सब समझलिया। इतनेमें तुरन्त मिथ्यादर्शन ने अश्रद्धान नामका महादुष्ट चूर्ण उसको देदिया, उससे असर होतेही नंदन ने विचार किया:- "अहो! मिथ्यादर्शनादिक कहां है ? और चारित्र धर्म तथा सम्यग्दर्शनादिक कहां है ? पापसे नर्क की प्राप्ति होती है. ऐसा किसने देखा और धर्म करके स्वर्ग और मोक्ष में जाकर कौन पीछा आया है ? सचमुच इसकी विचित्र चरचा महासाहसको वनादेनेवाली है"

इत्यादि विचार करके अपने पास रहनेवालों को धीरे२ अपने विचार प्रगट करनेलगा और बार २ ताली देकर गुरु की हँसी करनेलगा, इससे कर्मपरिणाम उसपर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और मोहादिक संतुष्ट हुए, फिर वह पुष्ट होकर सांगोपांग शरीरवाले होगये। याने सातों कर्म की स्थिति उत्कृष्ट थी उतनी पुष्ट होगई, फिर कोपित होकर उन्होंने नन्दन को पकड़कर सम्यग्दर्शन महामात्य के भवनद्वार के सामनेसे हटादिया और हजारों पाप कराये, आखिर फिर एकेन्द्रियादिकमें उसको लेगये और वहां अनन्त कालतक बांध रक्खा।

इस तरह किसी समय नरकमें, किसी समय संज्ञि पंचेंद्रियतिर्यंच तथा मनुष्यमें और किसी समय देवगतिमें, पहिले की के माफिक मोहादिक को खण्डित करके यथोक्त स्वरूपवाला सम्यग्दर्शन मंत्री के भवनद्वार के आगे वह आखिरी नम्बरपर आया, तब कहीं अश्रद्धानसे कहीं रागादिक के वश में, कहीं क्रोधादिसे और कहीं निज बुद्धि वैभव से महापाप इकट्ठा कराकर उन्होंने

उसे द्वार में प्रवेश नहीं करनेदिया। फिर सांगोपांग हुआ, मोहादिकने पहिलेकी तरह उसे पीछाफेरा और हरेकसमय एकेन्द्रियादिकमें उसको अनन्तकालतक अटकारखा।

इस मनुष्य क्षेत्रमें एक मलयपुर नामका नगरहै, वहां इन्द्र नामका राजा और उसकी विजय नामकी स्त्रीहै। एक समय कर्मपरिणामने उस संसारी जीवको उनके पुत्र रूप पैदा किया और उसका नाम विश्वसेन रखा। वह वहां बड़ाहुआ और सब कलाकौशल सीखा और वह युवा स्त्रीयों के मनको मोहित करने योग्य जवान हुआ। फिर एक समय राजकुमारों के साथ अशोकसुन्दर नाम के बाग मे क्रिड़ा करने के लिये गया. वहां कर्मपरिणाम ने उसको फिर सद्गुरु और सदागम बताये. उनके दर्शन हीसे विशिष्टतर वीर्य उल्लसित होकर कर्मराजा के पास से प्राप्त की हुई तलवार ज्यादे तीखी बनाकर मोहादिक शत्रुओं को पहिले से ज्यादे छेदन करके राजकुमार-अपने परिवार सहित सद्गुरु और सदागम के पास गया और विनय पुर्वक नमस्कार करके बैठा. गुरुने सदागम

से कह कर श्रुतिसंगम कराया, उन्होंने कानके पास आकर इस प्रकार उसके कानमें कहाः- "हे भद्र! तेरे को दुष्ट मोहराजा के मिथ्यादर्शन मन्त्री ने ठगकर के भव सागर में फिराया, उस दुष्ट ने अपनी कुदृष्टि नामकी स्त्री के साथ अपनी पुत्री को धर्मबुद्धि नाम बनाकर तेरे पास भेजी है। परंतु सचमुचमें वह महापाप बुद्धि है तीनों जगत में घूमकर बिचारे गरीब प्राणियों को अपने वशीभूत कर धर्म के बहाने उनसे बड़े २ पाप कराकर घोर नर्कमें डालती है, वहही अपने मिथ्याद-र्शन पिता की और कुदृष्टि नाम की माता की उनके पास से बहुत सेवा कराती है, वे दोनों इन प्राणीयों की क्या दशा करते हैं ? उनका तेरे सामने कितना वर्णन किया जाय। रागादि दोषरहित और केवल गुण रूप देव में अदेव बुद्धि और हमेशा द्वेषभाव पैदा कराती है। वेही दोनो दुष्ट निःस्पृह और दयालु ऐसे गुरु में सदा अगुरू बुद्धि कराती है इतनाही नहीं परंतु दया, दान, क्षमा, शील, ध्यान और ज्ञानादिक की वृद्धि को निर्गुणी स्थापन करती है। अर्थात निर्गुणी को गुणी बनाती है।

सत्धर्म में हमेशा द्वेष कराती है और जीव हिंसारूप अधर्म में अत्यन्त पक्षपात कराती है। इससे जीव विपरीत बुद्धि-वाला होकर बहुत पाप एकत्र करता है और उसके परीणाम में इतना दुःख सहता है कि जिसका वर्णन नहीं कियाजासकता. हे भद्र ! इन सब मोहादिक वैरियोंने मिलकर तेरी इतने समय तक बहुत कदर्थतना की, उनमें दुष्ट बुद्धिवाला. दुरंत और दुःख को देनेवाला. मिथ्यादर्शन मंत्रीतो सकुटम्ब तेरा घनिष्ट वैरी है। तेरे को उसकी स्त्री और लड़की ने जितने दुःख दिये उनका वर्णन तो हजार मुखवाला भी करन सकता'' ।

इस प्रकार श्रुतिका कथन सुनकर. राजकुमार भय भीत हो फिर शान्त होकर. गुरूको प्रणाम करके गद् २ कण्ठ से इस प्रकार कहने लगाः– 'हे प्रभो ! पहिले तो इतना समय मेरा योंही गया क्योंकि मै अज्ञानता के कारण कुछभी नहीं समझसका. इसलिये अब शरण रहित और उन शत्रुओंके निरंकुशतासे दुःख पात्र कियाहुआ अब मेरेको शरण कौन दे'' फिर सद्गुरुकी

प्रेरणा से श्रुति ने पुनः कहा:-"भद्र! मैने यह बात तेरे को अनेकवार निवेदन की. परन्तु किसी समय शून्यतासे किसी समय अश्रद्धान से, कभी द्वेषसे. कहीं मोहसे, कहीं शठतासे. और किसी समय मदसे, कुदृष्टि की पुत्री में अत्यन्त रागान्ध होनेसे, तेने सब काम व्यर्थ किया! अब आत्माको शान्त रखकर. खास तेरे हित चिंतक वाक्य सुन" फिर वह हाथजोड़कर लक्षपूर्वक सुननेलगा, उसमे श्रुति कहने लगी।

"यहां सद्गुणों, अमृतका सागर और राज्यका महाभार जिसने संपादन किया है। ऐसा चारित्रधर्म नामका राजा है, उसके सम्यग्दर्शन नामका सच्चा मंत्री, सदागम नामका भाट और सब जन्तुओंका हित करनेवाला ऐसा सद्बोध नामका एक बड़ा भाट है। उसके नाम मात्र से उसका अद्भुत पराक्रम का स्मरण करनेसे मोहराजाकी अपेक्षा सैन्य डिगमग की तरह कांपती है। विशेष करके द्वेष रखनेवाला मिथ्या दर्शन का तो कुटुम्ब सहित उन्हों से अनेक समय जय करवाला वह सद्बोध धर्मका पत्ता

। मोक्षवृक्षकी जड़ है और सब गुण रूप भूमिको पीठ
र धारणकरनेमें शेषनाग के समान है। इस जगत्‌में इस
रीखी कोई समृद्धि नहीं है। ऐसा कोई सुख और स्थान
हीं है जो सम्यक प्रकार का आश्रय चाहनेवाले और
तुष्ट हुऐ प्राणीको दे नहीं सके। उसके रूप सोभाग्या-
दिक गुणोंकी खानी अपने पर्मार्थ नामसे जगत में प्र-
सिद्धि पाई हुई, धर्मबुद्धि नाम की लड़की है, जो मन में
सका ध्यान करतेही उसी क्षण प्राणीयोको सुख देतीहै
ो प्राणी उसका भजन करते हैं, उसको उसके बताने
सम्यग्दर्शन मंत्री रूप महात्मा को जो देखसकता है
ौर उनके दर्शन होतेही मोह शत्रु की सेना से दु:ख
ायेहुए प्राणीयों को हमेशा शरण मिलती है। परन्तु
ो प्राणी उसकी पुत्री के साथ सम्बन्ध नहीं रखते उन
ो शरण तो मिलना दूरही मगर वे उनके दर्शन तक
हीं करसकते इसलिये हे सुन्दर! तेरी जो इच्छा हो वह
न उसके साथ मिलतेही पूर्ण होजाएगी. मैं पहिले
सके दर्शन कराताहूं जिससे तेरेको शान्तता मिले" इस
कार सुनकर वह भव्यजीव बोला:-"मै तैय्यारहूं इसलिये

मेरेपर कृपाकरके जल्दी उनके दर्शन कराओ" उसकी उत्सुकता देखकर और उसमें विशेष योग्यता आई हुई समझकर, सद्गुरु ने सदागम और श्रुति के मुखसे फिर मोह महाचरट, मिथ्यादर्शन कुदृष्टि और कुधर्मबुद्धि वगैरा के दुर्गुणों का सविस्तार वर्णन करके शुद्धधर्म करने की बुद्धि उत्पन्न की, फिर सन्वेग युक्त होकर वह भव्य जीव बोला।

"हे भगवन ! आपके कहेहुए सदागम की कृपासे मेरे को धर्मबुद्धि प्राप्तहुई। उसकी प्रेरणा से मैं विचार करता हूं कि आपके कहेहुए धर्मकार्यों में आचरण करूं कुदृष्टि, कुधर्मबुद्धि वगैरा का मैं साथ छोड़ूँ, इसलिये कृपाकरके आपके बतायेहुए धर्म करने की विधि बतलाइये" गुरुने कहा:- "हे भद्र ! इस धर्मबुद्धि में जो तेरा स्थिर अनुराग हुआ है, वही अनुराग धर्म विधान का उपाय [illegible] इसको करने के लिये उत्साही करता है। भद्र ! धर्म करने की इच्छावालेने पहिले ही [illegible] त्याग करके [illegible] मन, वचन, और काया

से सम्यग्दर्शन मंत्री को स्वामी स्वीकारना चाहिये और उसको कलुषिता न लगे उसतरह सब प्रकार से सभाल करना चाहिये। उसका सम्यक् तरहसे आराधन करनेसे वह इस तरह से प्रसन्न होजाता है कि उसके उत्तरोत्तर सब प्रकार के गुणोंकी प्राप्ति होती है" इस प्रकार सुन कर राजपुत्रने विचार किया कि:- "अहो ! सम्यग्दर्शन कोई महाप्रभाविक पुरुष है, इसका नाम कैसा सुन्दर है। मुझको किस तरह इसको देखना और पहिचानना चाहिये। इस प्रकार राजपुत्र विचार करता है। इतनेमें 'यह समय ठीक है' ऐसा समझकर कर्मभूपालने उसको विशुद्धतर अध्यवसायरूप अपूर्वकरण नामका मजबूत और तेज कुल्हाडा दिया और कान में चुपके से कुछ कहा, इससे उत्साहपूर्वक अपूर्व वीर्यविशेष की प्राप्ति हुई। उस कुल्हाड़े से बलात्कार निबिड़ रागद्वेष की परिणतिरूप ग्रंथि नामका महाप्रतोली के दोनों किवाड़ों को तोडकर प्रति समय मोहादिक शत्रुओंका निर्दयता से नाश करताहुआ, राजकुमार सम्यग्दर्शन बड़े मंत्रीका शरद ऋतुके चन्द्रमा के प्रकाश के समान सफेद अंतःकरण

नाम का बड़े महल के आँगन में आपहुँचा। अपनी प्रतिज्ञा को निबाहने से सन्तुष्ट होकर, कर्मराजाने विशुद्धतम अध्यवसायरूप अनिवृत्तिकरण नामका वज्रदण्ड दिया। इस वज्रदण्डसे मोहराजा के पुत्र द्वेषगजेन्द्र के अनन्तानुबंधी क्रोध और मान नाम के दोनों पुत्रों का तथा मोहांगज, रागकेसरी की अनन्तानुबंधी माया नाम की कन्या तथा अनन्तानुबंधी लोभ नामका पुत्र और मिथ्यादर्शन दुष्ट मंत्री इन पांचों महाशत्रुओं को अत्यन्त हर्षा करके और दुष्टता लाकर किसी तरह पीछा नहीं छोडनेवाले ऐसे विश्वसेन कुमारने नष्ट करदिया। जिससे चिकार करतेहुए वे पांचों कुछ जीवन रहने से भगकर चित्तवृत्ति नामकी महा अटवी में आकर मूर्छित हो शिथील होगये।

फिर किसी प्रकारकी रुकावट नहीं रहने के कारण, राजकुमार ने सम्यग्दर्शन के अन्तकरण नामके गृह में प्रवेश किया और वहां सम्यक्त्व का रूप धारण करनेवाले सम्यग्दर्शन महामंत्री को देखा। फिर पुष्करावर्त

मेघकी वृष्टि से दवदग्ध वृक्ष के समान, अमृतसे सिंचन करनेवाले, सुजनवचन के प्रबन्ध से दुष्टों के दुर्वचनो को सहन करनेवाले साधुकी तरह, द्रव्य का बहुत लोभ के कारण जन्मभर महादरिद्री के समान, वसंत ऋतु के कारण शिशिर का वर्फ गिरनेसे दग्धहुआ कमलखण्ड के समान, अकस्मात प्राप्त हुआ प्रिय सङ्गम से बहुत समय से वियोगी होकर और उससे संतप्त हुई विरहिणी स्त्री के समान, अनादि काल के विरुद्ध ऐसे मोहादिक शत्रुओं से उत्पन्न किये हुए दुःखोमें दग्ध होगये हैं. ऐसा वह अमृत प्रवाह के सदृश उनके दर्शन से अत्यन्त शान्त होगया। फिर पूर्व कथित फिर पूछने से उन गुरू महाराजने उस सम्यग्दर्शन का वृत्तान्त विस्तार पूर्वक कहदिया और उसको बार २ उत्तेजित किया तथा उस राज कुमार को इस प्रकार शिक्षा दी।

"हे भद्र ! 'यावज्जीविनपर्यंत यह ही मेरे स्वामी हैं, दूसरा कोई नहीं " यह प्रतिज्ञा करले, जीससे देवता भी चलायमान नहीं करसकते, इसतरह तेरे को दृढ़ता

रखनी चाहिये, कभी प्राण जाते होवो भी दृढता नहीं छोड़ना, शङ्काकांक्षा, विचिकित्सा, पाखंडी परिचय, झूंठी प्रशंसा, पिण्डप्रदान, और प्रपादान आदि भेद, और लान्छन लगाने वाले हैं। इससे आत्महितैषीने उनका दूरमेंही त्याग करना योग्य है। नहीं तो थोड़ाही कलुषित होनेही फिर पहिले के समान मोहादिक बलिष्ठ हो जायगे और उसमे सब अपकारों को संभाल के अत्यन्त कोपित होकर दाँत पीसते हुए तेरा गला पकड़कर खींचजायंगे, निःशङ्क होकर तेरको अपने वशमें कर फिर क्रूर होकर अधिक दुःख देंगे। इसलिये हे वत्स! इन दुष्ट लोगों को मौकाही नहीं देना चाहिये, अर्थात वह नहीं आसके ऐसा सावधान रहना चाहिये, फिर सम्यक् तत्त्वके आराधन करनेसे सम्यग्दर्शन मंत्री मौकेपर तेरी योग्यता जानकर, प्रणत जनपर अतिवत्सल और सब सुखों के देनेवाले, चारित्ररूप महा चक्रवर्ती राजा को बतावेगा। फिर बहुत आरामसे संतुष्ट होकर वह चारित्रधर्म अपने मन्दिर में अचिन्त्य परमप्रिय ऐसा जगत का गौरव रूप बड़े राज्य को देनेवाला, ऐसा प्रवर लक्षणों से

सम्पन्न. सब सुखोंकी खानि व सर्वगुण और लक्ष्मी का भण्डार, ऐसी देशविरति और सर्वविरति नामकी दो पुत्रियाँ तेरेको देगा, वे दोनो निपुण पुरुषों को भी रंजनीय और दुराराध्य है। परन्तु उनके चिन्तको कष्ट कोई नहीं देता मगर उनके सेवन से परम्परा के सुखका अनुभव अवश्य होगा. परम ऐश्वर्यमय. नि:सीम ऐसा सुखयुक्त अप्रतिपाति और सकललोक याने त्रैलोक्य के ऊपर रची हुई, ऐसी निवृत्तिपुरी का परमेश्वरत्व मिलेगा। इसप्रकार गुरु के वचन शांततासे सुनकर और स्वीकार कर क्षणभरमें मिथ्यात्व टलीला का जिसमें सम और उपसम दोनो हैं ऐसे क्षयोपशमिक सम्यक्त्व का सेवक बनकर गुरु के चरण में प्रणामकर परिवार सहित विश्वसेन कुमार मनमें हर्षित होकर अपने स्थानको गया। फिर गुरु कीआज्ञा अनुसार अनुष्ठान करते हुए उस सम्यग्दर्शन की सेवामें हमेशा निर्गमन करने लगा।

एक समय कर्मपरिणाम ने विचार किया कि:-"अहो! इसने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया, जिससे स...

का इसको मिलाप हुआ, इससे अब मैं निश्चिंत हुआ,
अब मेरे बांधव इसपरकभी अतिक्रोधित होंगे तो अ
पुद्गल परावर्त्त मे कुछ कमही संसार में इसे भ्रमना
होगा । इसलिये अबतो उतना समय व्यतीत होने पर्यं
इसको बहुत सताना देकर. निवृत्तिपुरी के परमेश्वरत्व
का लाभ दिलावेंगे !

यहां एक समय विश्वसेन कुमारका पिता मरगया
इससे वह राजा हुआ और राज्य चलाने लगा, एक समय
मोहनरेन्द्र का बड़ा पुत्र अपने परिवार को निरानन्द
मग्नउन्माद और प्रायः व्यापाररहित ऐसा देखकर, अत्य
न्त क्रोधित होकर, ईर्षा को वहन करते हुए अपना कु
त्सित रूप बनाकर पिता को प्रणाम कर. अपने स्थान
से बहार निकला और विश्वसेन राजा के पास आकर
छिद्र देखनेलगा. राजाने सम्यक्त्व अङ्गीकार किया है
यह सुनकर एक दिन विश्वभूतिका त्रिदण्डी पूर्व परिचि
त होने से उसका रूप लाकर अनेक दुष्ट विद्या के मंत्र तं
दूसरे को सिखानेवाला और जो कालकूट करने

सामने कहने लगाः- "यह श्वेतवस्त्रधारी भिक्षुक कुछ भी नहीं जानते है और इन त्रिदण्डी भगवन्त के ज्ञान की तो प्रत्यक्ष महिमा दिखती है" इस प्रकार होनेसे सम्यग्दर्शन ने विचार किया "अहो ! कुदृष्टिराग, स्नेहराग और विषयराग इन तीनो रूपोंसे कुदृष्टि राग का रूप धारण करके रागकेसरी यहां प्राप्त हुआ है। और अज्ञानरतो सचमुच ! रोगीयों में जैसे ज्वर, वैसेही सबके लिये दूसरा ज्वर हाजर ही है। इन पापियों की जिस जगह सङ्गति हो वहां कहनाही क्या ? जहां इनमें से एकभी हो वहां सब मोह, क्रोध, मान वगैरा चुपके से आजाते हैं। इसलिये अब हमको इनके साथ रहना अच्छा नहीं" इस प्रकार विचार करके तुरंत सम्यग्दर्शन अदृश्य होगया. इतने में उसी क्षण किसी जगह से प्रगट होकर मिथ्यादर्शन प्रवेश हुआ और क्रोधित होकर उसका गला पकड़कर इसको मंत्र, तंत्र और कूट विद्यादिक में कुशल ऐसी [illegible] करनेवालों के पास लेगया। उसमें [illegible] के बहाने से मायाचार करते हुए उसको [illegible] [illegible] पहिले की तरह उसके

एकेन्द्रियादि में लेगया और वहां अत्यन्त दुःखीकर उसको अनन्त कालतक बांध रखा।

एक समय फिर कर्मराजा ने उसको मनुष्य क्षेत्र में धनवंत श्रेष्ठी के घर सुभगनाम का पुत्र उत्पन्न किया। वह यूवा अवस्था में आया इतने में फिर सदगुरू और सदागम के समीप लेजाकर क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप-धारी सम्यग्दर्शन का उसने सङ्ग कराया। इससे पहिले के सदृश मिथ्यादर्शनादिक भगगये। फिर कुछ वर्षों तक उसने सम्यग्दर्शन की सेवा की, विवाह होनेपर एक समय उसके पुत्र हुआ। इस मौके को जानकर दूसरे स्नेह राग का रूप धारणकर रागकेसरी ने आकर उस-को घेरलिया। उसके सन्निधान से उसके भाईपर बहुत स्नेह उत्पन हुआ मा-बाप पर असाधारण स्नेह हुआ, बन्धु वर्गपर अधिक प्रीति हुई, बहनो पर बहुत प्रेम हुआ और परिजन पर इतना स्नेह हुआ कि जिससे दूसरे लोगों को आश्चर्य होनेलगा, अरे ? ज्यादे क्या कहा जाय ? घरके दास्यादिक नोकरों को बाहर से आते

साथ जाता और पाठशाला में बैठाता. कदाचित् कभी वह बिमार होजाता तो रात दिन उसके पास बैठा रहता और अनेक वैद्यों को बुलाता, नाना प्रकार से औषधोपचार करता, ज्योतिषी, भूत प्रेत को निकालने वाले (भोपे) और मंत्र-तंत्र के जानने वालों को आदर पूर्वक बुलाता, उनके पास से अनेक डोरे-गण्डे बनाता और जहाँतक वह अच्छा नहीं होता वहां तक दुःखी होकर शोक करता, 'अरे ? अपनो को कुच्छ भी खबर नहीं पड़ती कि इसका क्या होगा' ? उसपर से उत्तारादि करता. खुद लांघण करता और रात दिन बिस्तर पर पड़ा हुआ जागाकरता।

इस प्रकार प्रेम मे मूर्ख बनकर, जवान होनेपर पुत्र का विवाह किया फिर हाट में बैठाकर और खुद उसके पास बैठकर सारी व्योपार विद्या सिखाई। अपने पिता धनदत्त शेठ के मरण से अपने पुत्र को सब उनका डाटाहुआ और छिपायाहुआ धन बताया। और सब गृह कार्य्य उसको सोंपकर आप निवृत्त होगया अर्थात अपने

नहीं देखेतो संभ्रान्त होकर पूछता कि 'अमुक' कहां गया ? फिर भूक प्यास आदि की परवाह नहीं करते हुए उसको जहांतक नहीं पाता शान्ति नहीं होती। पुत्रपर तो इसका इतना स्नेह हुआ कि उसका वर्णन ही नहीं होसकता, पर किञ्चित वर्णन इस प्रकार करके बताते हैः-बाल्यावस्था मे उसको उत्संग में लेकर बहुत आलिङ्गन करता नासिक के मेल से भरे हुए मुहको बार २ चुम्बन करता, उसके लार, मल-मूत्र और मल मे खराब हुए। वस्त्रों को अपने हाथों से धोता। मल संसर्ग मे शरीर खराब हुए बालक को अपने हाथों मे ही स्नान कराना, उसको उठाकर त्रिपथ, चतुष्पथ आदि रास्तों पर फिरना लोगों की हँसी दिल्लगी को ध्यान मे न लाते हुए उसकी चेष्टा में मग्नहोकर दिनमें कभी भोजन नहीं करना, उसको सुलाने में व्यग्र होकर रातको जागकर निद्रा नहीं लेना, वह पुत्र कुछ बड़ा हुआ इसमें इसने सर्वों का अनादर करके स्निग्ध और मधुर खाद्य पदार्थ और पेय बर्तनोंमेंसे लेकर अपने हाथमें खिला-कर पिलाता फिर वह कुछ पढ़नेलगा इसमे सुद उसके।

साथ जाता और पाठशाला में बैठाता. कदाचित् कभी वह बिमार होजाता तो रात दिन उसके पास बैठा रहता और अनेक वैद्यों को बुलाता, नाना प्रकार से औषधोपचार करता, ज्योतिषी, भूत प्रेत को निकालने वाले (भोपे) और मंत्र—तंत्र के जानने वालों को आदर पूर्वक बुलाता, उनके पास से अनेक डोरे—गण्डे बनाता और जहाँतक वह अच्छा नहीं होता वहां तक दुःखी होकर शोक करता. 'अरे ? अपनो को कुच्छ भी खबर नहीं पड़ती कि इसका क्या होगा' ? उसपर से उत्तारादि करना, खुद लांधण करता और रात दिन बिस्तर पर पड़ा हुआ जागाकरता।

इस प्रकार प्रेम मे मूर्ख बनकर, जवान होनेपर पुत्र का विवाह किया फिर हाट में बैठाकर और खुद उसके पास बैठकर सारी व्योपार विद्या सिखाई। अपने पिता धनदत्त शेठ के मरण से अपने पुत्र को सब उनका डाटाहुआ और छिपायाहुआ धन बताया। और सब गृह कार्य्य उसको सोंपकर आप निवृत्त होगया अर्थात अपने

हाथ में कुछ भी नहीं रखा। इस प्रकार पुत्रके प्रेम में मूर्ख बनाहुआ सुभग, देव को बिलकुल भूल गया। गुरुके दर्शन भी छोड़दिये और उनके हित चिन्तक वचन भी भूलगया पुत्रादिकके मोहसे मायादिकके बोलसे उसको दुःख होता. शिष्ट जनों के उपदेश में उसको प्रीति नहीं होती. धर्म कथा में उसको रुची नहीं होती और सम्यग्दर्शन का नाम लेतेही उसको दुःख होता। फिर स्नेह राग के रूप धारी रागकेसरी को इस प्रकार चेष्टा जानके सम्यग्दर्शन पहिले के माफिक अदृश्य होगया। इससे अपने कुटुम्ब परिवार सहित मिथ्यादर्शन आया और अपना जोर जमाकर सुभग को घेर लिया।

फिर मोह होकर पुत्र अपनी पूरी सत्ता जमाकर अपने बाप आदि के वचन में एकदम पहिले के सब उपकार भूल कहकर "तुम नित्य हमको उद्वेग कराते हो और सब झगड़ों के मूल हो. मेरे को सुख से बैठने नहीं देते" ऐसे मिथ्या दोष लगाकर अपने पिता सुभग को घर से निकाल दिया। फिर मिथ्यादर्शन के वशीभूत होकर

सद्धर्म बुद्धि से अलग होकर, घर २ भिक्षा माङ्गता. मन वचन, कायासे, अतिदीन और दुःखी होकर उसने बहुत पाप किये। ऐसे उस सुभग को पहिले माफिक मिथ्या-दर्शन एकेन्द्रियादिक में लेगया और वहां बहुत समय तक बॉध रखा। अन्यदा कर्मपरिणामराजा उसको फिर मनुष्य क्षेत्र में लेआया। वहां किसी गृहस्थी का सिंह नामका पुत्र हुआ, फिर सम्यग्दर्शन की सङ्गति हुई और उसने बहुत दिनो तक उसकी सेवाकी, फिर यौवन अवस्था को प्राप्त हुआ उस समय रागकेसरी तीसरे विषयराग का रूप धारण कर उसके अन्तःकरण में प्रवेश हुआ उसके सन्निधान से. मधुर वेणु और रागों से मूर्च्छित होनेलगा, अत्यन्त सुन्दर स्त्रियों के रूप से आसक्त होनेलगा, सुगंध में मस्त होनेलगा, मिठे आदि रस में लुब्ध होनेलगा, और स्त्रीयादिक के कोमल स्पर्श में तन्मय होनेलगा, उसको ललना के लालित्य का पान करने का जो अनुराग होनेलगा उसकी तो बातही क्या कीजाय ? उसका कुछ वर्णन इस प्रकार है:- कामिनी के कटाक्ष और हाव भाव में मुग्ध होकर अपने माता पिता

कहूँ" ? इस प्रकार सुनकर उसने कहा कि, "ऐसा बोलना तेरेको उचित नहीं, क्यों कि तेरे सम्बन्धमें मेरे को कुछ सन्देह हो सक्ता है क्या ? मैं दूसरे अल्पज्ञ के जैसा नहीं हूं कि दूसरेके कथन को मानकर अपने घरकी फजिहत करूं, इसलिये जा तू खुशीसे उसकी बात सुन, 'तेरे को उसका इस तरह से आदर सत्कार करना चाहिये जिससे बड़ावे अपने घर सदा प्रसन्न रहें' इस प्रकार भोले पति का हुक्म होतेही वह माया युक्त मृगांक्षी उस पुरुष के पास गई और इच्छापूर्वक उसके साथ क्रीड़ा की। फिर उसने आकर अपने पति से कहा:- "पहिले तो उसने कहाकि 'तुम हमारी बराबर भक्ती नहीं करते' ऐसे दोष बनाकर मेरी कुछ कदर्थना की, परन्तु फिर मैंने भक्ती और विनय से उसको इस तरह से सन्तुष्ट किया कि वह तुम्हारे बड़ावों को जरूर प्रसन्न करेगा। बड़ावों के इनसे बहुत कामों के कारण वह यहां आया हुआ है। इसलिये मैंने उसको न्योता दिया है कि, जहां तक तुम्हारा यहाँ रहना हो वहां तक हमारे ही घर भोजन करना" फिर उसने कहा कि:- "यह मैंने बहुत अच्छा किया। अब

दाल-भात और घेवर आदि से इसको अच्छी तरह से भोजन कराना" फिर वह उसका नित्य अच्छी तरहसे पोषण करने लगी और बहुत आनन्दित होनेलगी, फिर अपने पति को किसी दिन कङ्कु के जैसे लाल सूखे पुष्प देकर और किसी समय दाडिम आदि फल देकर या और कोई अपूर्व वस्तु देकर कहती कि 'मैंने सब प्रकार के सङ्कट सह कर तुम्हारे बड़ावों को ऐसे सन्तुष्ट किये हैं कि, जिससे तुमको इस पुरुष के साथ ऐसी वस्तु भेजते हैं. यह सुन-कर वह पुर्वजों को भक्ति पूर्वक साष्टाङ्ग प्रणाम करने लगा और शेषादिक को शिरपर चड़ाने लगा. जो कभी कोई उसको कहता कि. 'तेरी स्त्री दुःशीला है' तो वह कहता कि 'मैं सब जानता हूँ' फिर मनमें विचारता है कि 'इसलिये ही मेरी स्त्री ने पहिले ही कहदिया है' इस प्रकार मनमें विचार कर किसी को विशेष उत्तर नहीं देता. एक दिन किसी अनजान पुरुष ने उसको कहा कि. "जो तेरे यहाँ रोज भोजन करता है उसको चल मैं बताता हूँ" इससे वह उसके साथ गया और उस पुरुष को अपने घर में बैठाहुआ देखा. इससे उसने सब हाल अपनी स्त्री से

कहकर उसको पूछाः-"प्रिये ! यह क्या" ? तब उसने कहा "हैं ! तुम घर फोडनेवाले के वचनों के वश में होगये हो तो अब तुम्हारा मनोरथ पूरा होजावेगा क्योंकि इस दुनिया में एक समान बहुत लोग तुम्हारे देखने में आवेंगे, इससे किसी समय मेरे सरीखी दूसरी स्त्री को देखकर तुम आलिङ्गन करलोगे, इससे कहीं इस अनर्थ का अनुभव करना पडेगा" इत्यादि वचनों से इसका ढंका और अपना कुछ कष्टभाव बताकर उसको निरुत्तर कर दिया। उस जार पुरुष को बुलाना बंद करदिया, फिर एक दिन जो अच्छी भैंस अपने घर दूझती थी उसको जार पुरुष के हाथ से दूसरी गुप्त जगह छिपवादी, इससे सिंहने भैंस नहीं दिखने से पूछा किः- 'हे प्रिये ! भैंस दिखती क्यों नहीं'? वह बोली कि 'मैं कुछ नहीं जानती' इस बात से दुःख सहताहुआ भैंस को हर जगह ढूंढने लगा परन्तु कहीं उसका पता नहीं लगा, इससे घर आकर लाखों नि-श्वासे डालकर बोला - 'हे प्रिये ! ऐसी कौनसी भैंस गई कि जैसी इस पृथ्वीपर और नहीं है' फिर वह स्त्री बोली कि 'जैसी तुम्हारी बदचालपर मैं हूं, वैसा तुमको फल मिल

और अभी कई खोवेंगी, इससे वह एकदम खड़ा होकर उसके पाँव पकड़कर बोला कि, 'जो तू कहती है वह, सब सच्चा है, लोगों के कहने से मैने उनकी अवज्ञा की उसका फल मिलगया, अब तू इस तरह से आराधन कर कि जिससे वह फिर अपनोपर खुश होजावे' यह सुनकर वह क्रोधित होकर बोली "अरे! दुष्ट अब मेरेसे दूर रह' इस प्रकार कह कर बार २ लात मारकर उसकी निर्भ्रंछना करने लगी. इससे वह अत्यन्त भयभीत होकर उसके चरणों में शिर रखकर माफी मांगनेलगा. फिर वह शान्त होकर बोली.- 'अब तुम बड़ावों का आराधन करो जिससे तुमपर वह फिर कृपा करेंगे. परन्तु अब फिर तू परघरके पण्डित जैसे लोगों के वचन पर विश्वास मत करना: वह बोला कि 'हे प्रिये' इस जन्म में तेरे विपरीत मैं कदापि नहीं करूगा क्या मेरेको इतनेसेही शिक्षा नहीं मिली? इत्यादि बोलते हुए उस मूर्खको उस कुलटाने अपने लिये पक्का विश्वासी बनालिया. फिर उसने सब बलिदान किया और सुगंधी पुष्प लाकर बडावों की पूजा की. सुगंधी धूप दिया. फिर

रात्री का पहिला पहर बितनेपर उसने अपने जार पुरु
को बुलाकर इसके पति से कहाः- वह पितृ सम्बन्धी
पुरुष द्वारपर आकर खड़ा है। इतने में वह बोला कि
'जा वह क्या कहता है सो सुन और उसकी अच्छीतरह
से भक्ति कर ज्यादे क्या कहूँ ? जिससे अपना भलाई
बना कर' फिर वह जार पुरुष के साथ यथेष्ट स्थान
पर गई और प्रातःकाल में आकर पति को कहने लगी
किः- 'बहुत वस्तुए देकर ब्राह्मणों को प्रसन्न किये हैं
इससे चाहे जहां से भैंस पीछी आजायगी और तुम्हारा
सब तरह से कुशल करेंगे. फिर प्रातःकाल में ज्योंही प्रकाश
फैलने लगा त्योंहीं कहीं से भैंस आवाज देती हुई आकर
द्वार पर खड़ी रही। इससे फिर बहुतही सन्तुष्ट हुआ और
स्त्री पर उसका पूर्ण विश्वास हुआ और मीयतमा पर अ
त्यन्त अनुरक्त होगया। उसने मस्तक का नाम...
उसके सिरका मुण्डन आदि किया। इस प्रकार वि
लासवती नागदेमती ने उसको वश में करके उस...
से निर्णय किया कि वह देव-गुरु आदि का ...
करके अपनी स्त्री के ही चित्त लगाकर रहने लगा।

रात्री का पहिला पहर बितनेपर उसने अपने जार पुरुष को बुलाकर उसके पति से कहाः- वह पितृ सम्बन्धी पुरुष द्वारपर आकर खड़ा है। इतने में वह बोला कि 'जा वह क्या कहता है सो सुन और उसकी अच्छीतरह से भक्ति कर ज्यादे क्या कहूँ ? जिससे अपना भलाई वैसा कर' फिर वह जार पुरुष के साथ यथेष्ट स्थान पर गई और मातकाल में आकर पति को कहने लगी कि:- 'बहुत वस्तुएं देकर ब्राह्मणों को प्रसन्न किये हैं इससे चाहे जहां से भैंस पीछी आजायगी और तुम्हारा सब तरह से कुशल करेंगे, फिर प्रातःकाल में ज्योंही प्रकाश होने लगा त्योंही कहीं से भैंस आवाज देती हुई आ द्वार पर खड़ी रही। इससे सिंह बहुतही सन्तुष्ट हुआ और स्त्री पर उसका पूर्ण विश्वास हुआ और प्रीयतमा पर अ न्त अनुरक्त होगया। उसने सन्तन का ना उसके शिरका मुण्डन आदि किया। इस प्रकार नागश्री नागकेसरी ने उसको वश में करके इस त से विडंबित किया कि वह देव-गुरु आदि को छोड़के अपनी स्त्री में ही चित्त लगाकर रहने लगा।

समय किसीने उसको पूछा कि:- अरे ! तेने सम्यग्द-र्शन की सेवा करने का अभिग्रह लीया है तो फिर यह क्या ? तब सिंहने उत्तर दिया ।

"सम्यग्दर्शनमेतस्याः, प्रियाया एव निश्चितम् ।
सम्यग्दर्शनोन्यस्तु, कोऽपि धूर्त्तप्रकल्पितः" ॥ १ ॥

"हे भद्र ! इस प्रिया के मुखारविंद के दर्शन ये ही सच्चा सम्यग्दर्शन है दूसरा सम्यग्दर्शन तो किसी धूर्त्त ने कल्पित बनाया हुआ मालुम होता है." इस प्रकार बोलताहुआ ऐसे उस सिंहमें रागकेसरी की अत्यन्त व्याप्ति देखकर, पहिले के सदृश सम्यग्दर्शन चलागया । इतने में मिथ्यादर्शन ने प्रवेश किया, अनुक्रम से उस को मारकर संहार किया । इससे वह उसको पहिले के माफिक एकेन्द्रियादिक में लेगया और वहाँ बहुत समय तक बांध रखा ।

अन्यदा कर्मराजा ने उसको फिर मनुष्य क्षेत्र में

रात्री का पहिला पहर बितनेपर उसने अपने जार पुरुष को बुलाकर उसके पति से कहाः- वह पितृ सम्बन्धी पुरुष द्वारपर आकर खड़ा है। इतने में वह बोला कि 'जा वह क्या कहता है सो सुन और उसकी अच्छी तरह से भक्ति कर ज्यादे क्या कहूँ ? जिससे अपना भला हो वैसा कर' फिर वह जार पुरुष के साथ यथेष्ट स्थान पर गई और प्रातःकाल में आकर पति को कहने लगी कि:- 'बहुत वस्तुएं देकर बड़ावों को प्रसन्न किया है उससे चाहे जहां से भैंस पीछी आजायगी और तुम्हारा सब तरह से कुशल करेंगे. फिर प्रातःकाल में ज्योंही प्रकाश फैलने लगा त्योंही कहीं से भैंस आवाज देती हुई आकर द्वार पर खड़ी रही। उससे सिंह बहुतही सन्तुष्ट हुआ और स्त्री पर उसका पूर्ण विश्वास हुआ और मीयनगा पर अत्यन्त अनुरक्त होगया। उसने मन्दन का ... उसके सिरका मुण्डन आदि किया। इस प्रकार ... नागकेसरी ने उसको वश में करके उस ... निर्दोष किया कि वह देव-गुरु आदि का ... छोड़ अपनी स्त्री में ही चित्त लगाकर रहने लगा।

आतेही वह जलाकरती, मधुर शब्द तो उसके पास कभी बोलती ही नहीं, उसके भोजन में मिष्टान्न आदि कभी वह देतीही नहीं, विना कारण कडवे वचन बोला करती, किसी समय कुडछी आदि से उसके शिर में मारती, वह जो २ काम करती उसमें वह दूपणही बताती, उसके हाथ से किसी भिक्षुक को दान नहीं दिलाती, इतना होतेहुए भी वधू उसका सब तरह से विनय करती थी और परम भक्ति से उसके पाँव धोती तो उल्टी उसे अपने हाथ से मारकर निर्भत्सना करती, वह शरीर दावने को आती तो उसके दोनो हाथ पकड़कर दूर करदेती थी, परोसने के लिये कभी वह पास बैठ जाती या खड़ी रहती तो भी उसका तिरस्कार करती और बहू की मुख्त्यारी से कुछ भी काम नहीं होवे इस कारण वह क्षणभर भी अपना घर नहीं छोड़ती थी, देव-वंदन गुरू-दर्शन और धर्म-चिंतन या श्रवण कभी भी शांति से या मनोभावसे नहीं करती, पहिले बहुतसी फूटी हुई हाकणी वगैरा का स्मरण कर विना कारण अपराध खड़ाकरके सब मनुष्यों को वह कहतीफिरती और शुद्ध भाव वाली ऐसी वधू पर वारंवार

जिनदास के घर पुत्री बनाकर उत्पन्न किया, उसका
जिनश्री ऐसा नाम रखने में आया। जिनदास का सारा
कुटुम्ब सम्यग्दर्शन का उपासक होने से जिनश्री भी स
म्यक्त्व वासित हुई, उसकी भोगपुर निवासी विमल सं
के साथ शादी की। वह भी श्रावक होनेसे जिनश्री
उसके घर जैन-धर्म अच्छी तरह पाल सकी, देवको वं
करती, गुरुको नमस्कार करती और उसके पाससे
सुनती अनुक्रमसे उसके दो पुत्र हुए और उसे घर का
यक धन मिला, फिर बड़े पुत्रका सार्थवाह की धन
नाम की पुत्री के साथ व्याह किया।

अब द्वेष गजेन्द्र नामके पुत्रने मोहराजा को विज्ञप्ति
कि "मेरे बडाभाई बन्धु रागकेसरीने आपके मनको अ
तरह संतोष दिलाया है। अबतो अनुक्रमसे प्राप्त हु
[illegible] मार्ग [illegible] करनेका है" इस प्रकार क
अपने पिता को नमस्कार करके वह अवसर पा
कर जिनश्री के पास गया, उसके सन्निधान में उ
[illegible] द्वेष भाव उत्पन्न हुआ, उससे उसको [illegible]

नर्कमें फिर एकेन्द्रियादिक में अत्यन्त दुःखित होकर अनन्त काल तक फिरा।

एक समय वह संसारी जीव जगत्में ज्वलनशिख नामका श्रीमान ब्राह्मण हुआ, वहां साधु और श्रावकके सम्बन्धसे उसको किसी तरहसे सम्यक्त्वका लाभ हुआ, और बहुत वर्षोंतक जैनधर्म पाला, अन्यदा मोहराजाने उसके पास निर्धनताको भेजी, उसके साथ उसकी सहचारिणी दरिद्रता भी आई, उन दोनोंने ज्वलनशिखको घेरलिया उससे वह विचारा निर्धन और दरिद्री होकर किसी देशान्तरमें जाकर रहा, वहां आजीविका का दूसरा उपाय नहीं होनेसे वह खेती करने लगा।

अब [illegible] जिसका दूसरा नाम [illegible] है, दुष्टगजेन्द्रके वह पुत्रने दुष्टगजेन्द्रको अर्ज की कि "हे तात! मैं पहिले ज्वलनशिख के पास रहा था, लेकिन उस वक्त [illegible] सम्यक्दर्शन साथ आकर रहा और उसने हमें [illegible] कर दिया अब वहां जानेका मौका है इसमें [illegible]

नरकमें फिर एकेन्द्रियादिक में अत्यन्त दुःखित होकर अनन्त काल तक फिरा।

एक समय वह संसारी जीव जगत्में ज्वलनशिख नामका श्रीमान ब्राह्मण हुआ, वहां साधु और श्रावकके सत्संगसे उसको किसी तरहसे सम्यक्त्वका लाभ हुआ, और बहुत वर्षोंतक जैनधर्म पाला, अन्यदा मोहराजाने उसके पास निर्धनताको भेजी, उसके साथ उसकी सहचारिणी दरिद्रता भी आई, उन दोनोंने ज्वलनशिखको घेर लिया उससे वह विचारा निर्धन और दरिद्री होकर किसी देशान्तरमें जाकर रहा, वहां आजीविका का दूसरा उपाय नहीं होनेसे वह खेती करने लगा।

अब अनन्तानुबंधी क्रोध जिसका दूसरा नाम वैश्वानर है, द्वेषगजेंद्रके बड़े पुत्रने द्वेषगजेंद्रको अर्ज की: "हे तात! मैं पहिले ज्वलनशिख के पास रहा था, लेकिन वहां [illegible] सम्यग्दर्शन शत्रु आकर रहा और उसने मुझको [illegible] कर दिया अब वहां जानेका मौका है उसमें मु[illegible]

एक दिन नीचकुलवालों के माफिक कृत्य करने वाला ऐसा वह चने के खेतमें हल हांकता था, हल के साथ एक अड़नेवाला बैल जोतेहुए था, वह जवान और पुष्ट होतेहुए भी चलता नहीं था, इससे बहुत क्रोधित होकर वह ब्राह्मण उसको चाबुक और लकड़ीसे खूब मारता मगर उसके न चलनेसे, पीछेकी जांघों में, गुदके पीछेके हिस्सों में, पासके दोनोतरफ पेटमें, आगे के पाँव में, कंधे में और गर्दनपर वह रस्सी और चाबुकसे बहुत मारता, इससे वह बिचारा अड़ेल बैल जीभ निकालकर नीचे बैठ गया, इससे वह अत्यन्त क्रोधित होकर उसकी जीभ बाँधकर पूंछ मरोड़नेलगा तथा बहुत बड़े मिट्टीके ढेलोंसे उसको यहां तक मारा कि वह बैल पुष्ट होतेहुएभी जल्दीही मरगया, इतने करनेपर भी उस ब्राह्मणको क्रोधाग्नि शांत नहीं हुई, वह अधिक क्रोधित होता गया आखिर अत्यन्त क्रोधसे वह आ[illegible] बन गया। इसीसे अत्यन्त क्रोधसे उसका हृदय बंद हो गया जिससे कि वह मृत्युको प्राप्त होगया, फिर सिपाही [illegible] आदि [illegible] उसको पकड़कर चांर [illegible]

एक दिन नीचकुलवालों के माफिक कृत्य करने वाला ऐसा वह चने के खेतमें हल हांकता था, हल के साथ एक अड़नेवाला बैल जोतेहुए था, वह जवान और पुष्ट होतेहुए भी चलता नहीं था, इससे बहुत क्रोधित होकर वह ब्राह्मण उसको चाबुक और लकड़ीसे खूब मारता मगर उसके न चलनेसे. पीछेकी जांघों में, सुरके पीछेके हिस्सों में, पासके दोनोंतरफ पेटमें, आगे के पाँव में, कंधे में और गर्दनपर वह रस्सी और चाबुकसे बहुत मारता, इससे वह बिचारा अड़ेल बैल जीभ निकालकर नीचे बैठ गया, इससे वह अत्यन्त क्रोधित होकर उसकी जीभ बाँधकर पूंछ मरोड़नेलगा तब बहुत बड़े मिट्टीके ढेलोंसे उसको यहां तक मारा कि वह बड़ा पुष्ट होतेहुएभी जल्दीही मरगया, इतने करनेसे भी उस ब्राह्मणको क्रोधाग्नि शांत नहीं हुई, वह अधिक क्रोधित होता गया आखिर अत्यन्त क्रोधमें वह अंधा बन गया। इसीसे अत्यन्त क्रोधसे उसका हृदय बंध होकर फिरमें कि वह मृत्युको प्राप्त होगया, फिर मिथ्यादर्शन आदि दोषोंसे उसको पकड़कर और

"यहां क्या काम है ? क्या दूसरे किसीने तुमको सङ्कट में डाला है ? जो ऐसा हो तो बात करो, जिससे तुमको बाधा डालने वाले इन्द्रको भी बांध कर तुम्हारे पास भेजदें परन्तु हम किसी के पास नहीं जाते हैं । जो यहां हमारे पास कोई नहीं आवे तो हमको किसीसेभी प्रयोजन नहीं, ऐसाकौन समर्थ है ? क्या कोई कुछ करसकता है" इसप्रकार सुनकर मन्त्रियों ने कहा कि: " हे कुमार ! आपनी कीर्ति की कथामात्रसे दुश्मनों का नाश करने वाला और बड़ोंकी भक्ति करनेवाला, ऐसा तुम्हारे जैसा पुत्र हो वहां तक राजाको बांधनेवाला कोई नहीं परन्तु यह बात आप जैसेको कहने योग्य नहीं है कि पिता के पास नहीं आना । कहा है कि:-

"[illegible] धैर्य वा, विद्या लक्ष्मीर्विचस्विता वा ।
[illegible] न वर्धते गुणाः विनयालंकारपरिहीनः" ॥ १ ॥

[illegible] विद्या, लक्ष्मी, पाण्डित्य या और कोई [illegible] विनयरूप अलंकार रहित होवे तो वह [illegible]

"वहां क्या काम है? क्या दूसरे किसीने तुमको सङ्कट में डाला है? जो ऐसा हो तो बात करो, जिससे तुमको बाधा डालने वाले इन्द्रको भी बांध कर तुम्हारे पास भेजदूं परन्तु हम किसी के पास नहीं जाते हैं। जो यहां हमारे पास कोई नहीं आवे तो हमको किसीसेभी प्रयोजन नहीं, ऐसाकौन समर्थ है? क्या कोई कुछ करसकता है"! इसप्रकार सुनकर मंत्रियों ने कहा कि: "हे कुमार! अपनी कीर्ति की कथामात्रसे दुश्मनों का नाश करने वाला और बड़ों की भक्ति करनेवाला, ऐसा तुम्हारे जैसा पुत्र हो वहां तक राजाको बांधनेवाला कोई नहीं परन्तु यह बात आप जैसेको कहने योग्य नहीं है कि मैं पिता के पास नहीं आता। कहा है कि:-

"शौर्य सौंदर्य वा, विद्या लक्ष्मीर्विचक्षणता वा।
शोभां न वहति पुरुषो, विनयालंकारपरिहीनः" ॥ १ ॥

शौर्य, सौंदर्य, विद्या, लक्ष्मी, पांडित्य या और कोई गुण हो किन्तु विनयरूप अलंकार रहित होवे तो वह शोभा

परलोक में भी दियाजाना कठिन है" इस प्रकार कहकर वे और आगे कहने को थे कि शैलराज की प्रेरणासे कुंवर कुमार बोला:-"अरे मूर्खो ! स्वयं त्रैलोक्य के सब तत्वों को जानने वाला ऐसा मुझको तुम शिक्षा देने वाले कौन हो ! जाओ तुम्हारे पिताकोही इस प्रकार शिक्षा देना" इस प्रकार कहकर उनको पकड़कर दर्वाजे बाहर निकाल दिये । फिर जाकर उन्होंने सारी हकीकत राजा को कही, इससे राजाने विचार किया, "अहो ! मेरे पुत्र को शैलराजाने गहरी तौरपर घेरलिया है, इस लिये राज्य को छोड़देना ठीक है ऐसे राज्य से क्या कि जहां चोर महाशत्रु के सैन्य से इस प्रकार प्राणी घिरजाते हैं" इस प्रकार विचारकर उसने कुंवर कुमार का राज्याभिषेक करने की तय्यारी कराई परन्तु यह बात उसने किसी को नहीं कही ।

फिर एक दिन उसको बुलाने के लिये नगर के [illegible] भेजे, उन्होंने जाकर प्रणाम करके कहा "हे कुमार! कुछ महान कार्य है, इसलिये पद

फसाता, कुटुम्बियों को भ्रममें डालता, कला सीखते समय गुरु को भी ठगता और साथ पढ़नेवालों को बांध लेता, गृह देवालयमें या चैत्यमें उसकी माता आदि उसको लेजाती तो वहां देवको उल्टी स्तुति से साधना करना और मौका पाकर वहां चढ़ाये हुए लड्डू आदि खा जाता, वस्त्र आदि चोरकर अपनी कांख में दबालेता और मार खातेहुए भी अपना अपराध स्वीकार नहीं करता अनेक युक्ति से अपराध को छिपालेना, किसी के साथ सत्य भाव से वर्ताव नहीं करना, अपना अभिप्राय किसीको भी नहीं जनाता, माता-पिता के साथ कभी सत्य बोलता ही नहीं, इसप्रकार माया की वृद्धि पाताहुआ वह अपने कुटुम्ब या दूसरों को प्रायः ठगे बिना छोड़ता नहीं, इसके अत्यन्त मायाविपन से उसके पिता आदि उसको सद्-गुरु के पास लाये और उनसे निवेदन किया कि:- "हे भगवन्! [illegible] सरल [illegible] मायाचार [illegible] नहीं है इसलिये हे प्रभो! कृपाकर [illegible] गुरु को [illegible] जब

धर्ममें ध्यान दे." फिर धर्म कथा करने में निपुण और करुणा प्रधान ऐसे गुरु बोलेः-

"माया शीलः पुरुषो. यद्यपि न करोति कञ्चिद् पराधम् ।
सर्प इव विश्वास्यो. भवतीह यथामदोपहतः ॥ १ ॥

"मायावी पुरुष कुछभी अपराध नहीं करे. तथापि अपने दोष से दूषित होकर सर्प के समान इस जगत् में अविश्वासी बनते है" इसी माफिक माया करने वाले जीवों का हीनकुलमें उत्पन्न हुई स्त्रीयों से जन्म होता है और वे नरक में अनन्तीवार दुःखों का अनुभव करते है." इत्यादि धर्म उपदेश गुरुमाहाराज ने किया. जिससे कर्मपरिणाम की अनुकूलतासे उसकी माया कितनेक समयतक मंदहोगई कितनेक समय तक मिथ्या दर्शन छुप गाया. सम्यग्दर्शन प्रगटहुआ और बहुत दिनो तक वह उनकी सेवा करता रहा ।

अब एक दिन विश्वास आनेसे पिताने उसको अपने पास सोनेके पाटपर पर बैठाया । एक दिन

दूंगा तो बहुत दूर देशमें जावेगा और किसीको खबरभी नहीं पड़ेगी." इस प्रकार विचारकर उस मुद्रारत्नको लाकर बताया। इतनेमें संकेत माफिक वहां राज पुरुष आ पहुँचे और उस मुद्रारत्न सहित उसको पकड़कर राजमन्दिरमें लेगये वहां अपना मुद्रारत्न पहिचाना इससे बहुत दुःख देकर उसको मरवाडाला, वहां से मरकर उसने बहुत रोगोंसे जुगुप्सित ऐसा कुत्तेका अवतार प्राप्त किया और बहुत दुःखी होकर बहुत समय तक फिरा।

अन्यदा कर्मपरिणाम राजा उसको जयपुर नाम के नगरमें लेआया और वहां श्रावक कुलमें धन्नदत्त श्रावक के घर पुत्र रूप उत्पन्न किया, उसका सोमदत्त नाम रखा श्रावक कुलमें उत्पन्न होनेहीसे उसको सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई परन्तु निर्धन होनेसे निरन्तर तेल लवण बेचता फेरी फिरता. फिर कुछ द्रव्य इकट्ठा हुआ इससे इसने पन्सारीकी दुकान की और उसमें कुछ ज्यादे धन इकट्ठा किया इसवास्ते ठगाईकर ग्राहकलोगोंसे ज्यादा [illegible] इतना [illegible] सागर है ऐसे मनुष्यको

छोटे भाई अनन्तानुबन्धी लोभ नामके अपने पुत्रको भेजा, उसके उपदेशसें सोमदत्तको धन कमानेकी बहुत इच्छा बढ़ गई। एक साथ बहुतसे व्योपार करनेसे वह सहस्र-पति हुआ और लाखों क्लेश सहन कर लखपति हुआ तथा अनेकवार क्रोड़ों दुःख सहन कर वह कोटीध्वज हुआ। इस प्रकार जैसे २ उसको धन मिलता गया वैसे २ लोभकी इच्छा बढ़तीगई. फिर लोभ से अत्यन्त दबाहुआ वह अजानतासे देवपर आक्षेप करता और कहता कि 'उनके पाससे अत्यन्त याचना और आराधना करते हुए भी यह देव किसीको एक भी रुपया नहीं देते हैं।' इस तरह गुरूपर द्वेष करता और उनके उपदेश को विघ्नरूप मानता. धर्म कृत्यका अनादर करता और पाप में तत्पर रहता, इससे सम्यग्दर्शनने निःशक होकर उसका त्याग किया. इससे मिथ्यादर्शन आदि मोहसैन्य ने उसको घेरलिया. फिर उसने द्रव्य पैदा करने के लिये बहुत प्रयत्न शुरू किये हरदिन क्लेश और असं-तोष से उसका धन इतना बढ़गया कि करोड़ों रत्न उसने इकट्ठे करलिये इससे वह एक बड़े श्रेष्ठ की

एक समय सद्गुरूके पास धर्म सुनने से उसको सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई, कर्मराजाने विशेष दयाकरके उसको शुद्धतराध्यवसाय नामकी तलवार दी. उसके योग से उस सुन्दरने मोहादि शत्रुओ का पल्योपम पृथकत्व प्रमाण से अनन्त कोटा कोटि देहमे छेदडाला उससे अप्रत्याख्यावरण कषाय दूर होगया इससे सन्तुष्ट होकर सम्यग्दर्शन मन्त्रीने उसको गुरुके पास लेजाकर चारित्र-धर्म महाचक्रवर्ती के दर्शन कराये गुरू महाराजने कहा:-

"यःसेवतेऽति भक्त्या, चारित्रममु कदाचिदल्पमपि ।
सोदि महर्द्धिक देवो, भूत्वा निर्वृत्तिवि भुर्भवति" ।१।

"जो प्राणी किसी समय इस चारित्र धर्म का अति भक्ति पूर्वक थोडा भी सेवन करता है, वह महर्द्धिक देव होकर मोक्षका अधिकारी होता है" इत्यादि चारित्र धर्म के गुणोंका सविस्तार वर्णन किया। इससे सुन्दर ने उसका सम्यग स्वामीभावसे स्वीकार किया। फिर चारित्रधर्म राजा उसकी योग्यतापर विचारकर उसपर

का वध करता कितनों को चाबुक से मारता. कितनो को शीत या गर्मी में बैठाता, कितनों को गरम तेलके छिटकने के दुःखदेता, कितनों को शूली देकर हैरान करता। इसमे देश विरती भियाने विरक्त होकर उसको छोड़दिया. फिर वह सिर्फ कुल क्रमसे चलीआईहुई रीतिसे देवालय में जाता वहां जिनेश्वर भगवन्त को वंदना करता. पूजादिक करता, चैत्यवन्दन करता. शासन का कार्य करता जिससे शासन का ऐसा अग्रसर होगया इससे वह नर्कादि में नहीं गया, परन्तु देश विरति से भ्रष्ट होनेसे और सम्यक्त्वगुण की विराधना करनेसे. मरकर नीच जाति के भवन पति देवोंमें उत्पन्न हुआ और वहा से फिर बहुत संसार में फिरा।

फिर वह कोई समय सम्यग्दृष्टि शालिभद्र शेठ के माणिकभद्र नामका पुत्र हुआ। वहांपर वह सम्यग्दृष्टि हुआ एक समय देश विरति बालिका के अनुराग से. पहिले के माफिक कन्या गाय के भूमि संबन्धी. थापन रखने सम्बन्धी, खोटी साक्षी देने सम्बन्धी और कूट

का वध करता कितनों को चाबुक से मारता, कितनों को शीत या गर्मी में बैठाता, कितनों को गरम तेलके छिटकने के दुःखदेता, कितनों को शूली देकर हैरान करता। इससे देश विरती भियाने विरक्त होकर उसको छोडदिया, फिर वह सिर्फ कुल क्रमसे चलीआईहुई रीतिसे देवालय मे जाता वहां जिनेश्वर भगवन्त को वंदना करता, पूजादिक करता, चैत्यवन्दन करता, शासन का कार्य करता जिससे शासन का ऐसा अग्रसर होगया इससे वह नर्कादि में नहीं गया, परन्तु देश विरति से भ्रष्ट होनेसे और सम्यक्त्वगुण की विराधना करनेसे, मरकर नीच जाति के भवन पति देवोंमें उत्पन्न हुआ और वहा से फिर बहुत संसार में फिरा।

फिर वह कोई समय सम्यग्दृष्टि शालिभद्र शेठ के माणिकभद्र नामका पुत्र हुआ। वहापर वह सम्यग्दृष्टि हुआ एक समय देश विरति बालिका के अनुराग से, पहिले के माफिक कन्या गाय के भूमि संबन्धी, थापन रखने सम्बन्धी, खोटी साक्षी देने सम्बन्धी और कूट

कि-'निश्चयसे तुमको इसका इतनाही मूल्य देनाहोगा'
इत्यादि वक्रवचनों से ग्राहक उनके कूट वचनों को सत्य
मानकर और उसको नफादेकर लेजाते ।

एक समय लोभ और मृषावदने अत्यन्त उदय होकर
माणीकभद्रको कहा कि, " भद्र ! असत्य बोलनेमें तू
क्यों शका करता है ? कृत्रीम न्याय की रचना करके ही
तू बोलताजा क्योंकि तेरे घरका खर्चा ज्यादे है.
दुकानों का भाड़ा बहुत भरना पडता है. वणिक पुत्रोंको
तनखा देनी पड़ती है और खान—पान वगैरा भोग
भोगने के है । इसलिये सत्य बोलनेसे ज्यादे कोई नहीं
देता है । दूसरे बहुतसे लोग झूठ बोलते है उनकी जो
गति होगी वह ही तेरी होगी और यह साधु कहते हैं
उसको कहां तक सुनेगे यह दूसरों के घरमें विक्रमादित्य
जैसे है: संसार के व्यापार रहित और घरबार नहीं
होने से यह सुख से सच्च बोलते है। परन्तु इनको संसार
की व्यवस्था का अनुभव नहीं है. इनके अभीमाय
माफिक तो शिर का लोच कराकर तुरन्त साध

अनंग क्रीडा करना, पर विवाह करना और कामका तीव्राभिलाषी होना यह पाँच अतिचारोंसे विशुद्ध तथा भोग का नियमरूप चौथा स्थूल मैथुन विरमण व्रत ग्रहण किया। उसको तीव्र पुरुष-वेदके उदयसे, तीव्र विषयाभिलाषासे और चक्षुइन्द्रिय तथा स्पर्शेन्द्रिय आदिको उपाधि से भग्न करके सम्यक्त्वको विराध करके यह हीन जाति के देवादिकमें उत्पन्न होकर अनुक्रमसे नपुंसकत्वादिक दारिद्र्य दुःख भोगकर संसारमें बहुत फिरा।

और परपरिवाद. व्रतियोको तजना दुर्लभ है तेरे सरीखी
चुपचाप बैठरहनेवाली मेरे देखनेमे कोई नहीं आती.
सब बातें करतीहै; हमतो सिर्फ आनन्दसे ही वार्तालाप
करतीहैं दूसरों की तरह हमको माया करते नहीं आती.
जो कुछ हो वहही पिता सम्बन्धी हमतो सत्यही कहती
है। जो किसीको अच्छा नहीं लगेतो भलेही रोष करे चाहे
अच्छा लगेतो सन्तुष्टहो ' इसप्रकार उत्तर सुननेसे उस
विचारी को सदुपदेश के अयोग्य जानकर साध्वियोंने
कहना छोडदिया ऐसा करते २ वह नि शक होकर गुरू
के पास व्याख्यान में बैठी होतो वहा भी वस्त्रसे मुह ढाँक
कर किसी स्त्री के कानके पास जाकर कुछ कहती और
दूसरी उसको उत्तर देती. इसप्रकार वहा बैठी हुई स्त्रियों
में परस्पर वार्त्तालाप चलता था। इस प्रकार जंगली मदो-
न्मत्त भैंस कलुषित किये हुए पत्ते और तालाब के जल
के माफिक व्याख्यान सभा में बैठे हुए सब लोगों को
विक्षिप्त करके वह दूसरों को भी सुनने में अन्तराय
करती थी. शेठ की पुत्री होने से उसको गुरू शिक्षा देते
तो वह कहती कि:- "हे भगवन ! मै तो किसी के भी

भायी है। एक समय कर्मपरिणाम राजाने उस संसारी जीवको वहां लाकर उसके पुत्ररूप उत्पन्न किया॥ उसका अरविंद ऐसा नाम रखा वह सब कला पढ़कर यौवन अवस्थाको प्राप्त हुआ। मौकापाकर कर्मराजाने वहां गुरु महाराजको लाकर बगीचेमें घूमते हुए अरविन्द कुमारको उनके दर्शन कराये. फिर वह कुमार उनके पास गया और हर्षपूर्वक प्रणाम करके बैठा. तब कर्मराजाने उसको शुद्धतमाध्यवसायरूप तलवार दी. उससे उसने मोहादि शत्रुओंके संख्याता सागरोपमकी स्थिति रूप शरीर भाग को छेदडाला। फिर गुरु महाराजने सम्यग्दर्शन और चारित्रधर्मका उपदेश करके उसके पास सर्व विरति कन्या के गुणोंका वर्णन किया। वैराग्यके अनुरागसे मातपितादि सबके संगको छोड़कर गुरुके दियेहुए वेषसे परम विभूतिपूर्वक अरविंदकुमारने उस चारित्रकन्यासे शादी की। इससे धर्मराजाका समस्त सैन्य प्रमुदित हुआ। सद्बोध आनन्द पाकरके उसके पास रहा. सम्यग्दर्शन स्थिर हुआ. सदागमका प्रतिदिन परिचय होनेलगा। प्रत्युपेक्षणादि क्रियाओं पास आनेलगी. प्रशमसे वह

भार्या है। एक समय कर्मपरिणाम राजाने उस संसारी जीवको वहां लाकर उसके पुत्ररूप उत्पन्न किया॥ उसका अरविंद ऐसा नाम रखा वह सब कला पढ़कर यौवन अवस्थाको प्राप्त हुआ। मौकापाकर कर्मराजाने वहां गुरू महाराजको लाकर बगीचेमें घूमते हुए अरविन्द कुमारको उनके दर्शन कराये, फिर वह कुमार उनके पास गया और हर्षपूर्वक प्रणाम करके बैठा. तब कर्मराजाने उसको शुद्धतमाध्यवसायरूप तलवार दी. उससे उसने मोहादि शत्रुओंके सख्याता सागरोपमकी स्थिति रुप शरीर भाग को छेदडाला। फिर गुरू महाराजने सम्यग्दर्शन और चारित्रधर्मका उपदेश करके उसके पास सर्व विरति कन्या के गुणोंका वर्णन किया। वैराग्यके अनुरागसे मातपितादि सबके संगको छोड़कर गुरूके दियेहुए वेषसे परम विभूतिपूर्वक अरविंदकुमारने उस चारित्रकन्यासे शादी की। इससे धर्मराजाका समस्त सैन्य प्रमुदित हुआ। सत्‌बोध आनन्द पाकरके उसके पास रहा. सम्यग्दर्शन स्थिर हुआ.- सदागमका प्रतिदिन परिचय होनेलगा। प्रत्युपेक्षणादि क्रियाओं पास आनेलगी. प्रशमसे वह

वह उसपर प्रहार करता और पीड़ादेता, किसी समय एक साथ उठेहुए ऐसी क्षुधा पिपासा आदि परिसहरूप बहुत शत्रुओंसे वह दुःख पाता, पुनः स्वस्थ होकर युद्ध करता, वह उनको दूर करता, किसी समय दिव्य मानुषिक और तिर्यन्च सम्बन्धी उपसर्गरूप सुभट उसको सताते, फिर सदागमकी शिक्षासे वह स्थिर होता फिर वे शत्रु उसको अस्थिर करते, गच्छमें रहेहुए बाल, तरुण और वृद्ध साधुओंका सारण वारण और प्रेरणसे उत्पन्नहुआ सज्वलनकषायरूप रिपुवर्गसे वह दुःख पाता, परन्तु प्रशम मार्दवादिककी सहायतासे किसी तरह फिर वह स्थिर होता, फिर शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श तथा लौल्याध्यवसायरूप मोहरिपुका सुभट समरागणमें उसको कायर करदेते मगर संतोष सुभटसे फिर उत्साहित होकर उस शत्रुसैन्यको पराजित करता। इस प्रकार जय और पराजय होते २ चारित्र-धर्मकी सेना सहित अरविंदसाधु जबकी जयलक्ष्मी प्राप्त करनेकी तैय्यारीमें ही था तब कुछ अपराध होनेसे गुरुमहाराजने उसको बहुत उपालम्भ दिया इससे 'यह समय ठीक है' ऐसा विचारकर प्रत्या-

वहां अपना क्या कहना और क्या देखना" फिर सद्बोध
हंसकर बोला, "अरे तुम बेफायदा रंज करते हो, इससे
नई बात क्या है। क्योंकि अनादिकाल से यह व्यवहार
चलाआता है, तुम हितकर होतेहुए और उसको उच्चपद
पर स्थापना करतेहुए जिस ससारी जीवको भवसागर
में अतिशय फिरने का होता है. वह उपशांत मोह गुण-
स्थान के आतेहुए और चौदह पुर्वधर पदपर होतेहुए
भी वहां से पीछा पडकर पूर्व शत्रुओं से मिलकर उत्कृष्ट
कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्त्त प्रमाण ससारमें फिरता है।
अनादिकाल से जीवोंका यह निश्चिन्त व्यवहार है। इसलिये
आश्चर्य करनेका क्या काम है ? तुम्हारे वशमें होकर
कोई पीछा नहींपड़े ऐसा कुछ नियम नहीं, इसलिये तठ
स्थ होकर सिर्फ देखते हुए बैठे रहते क्यों नहीं ? तुमको
मिथ्याभिमान मात्र इतनाही है कि इसकी कुछ सहायता
से अपने शत्रु पक्ष का क्षय करके किसी तरह प्रसिद्ध
होकर और उसको सुखी करें, यह अपनी धारणा जबही
सफल होगा जबकि सुखी होगा। अपन यह विचारते है कि
"अपने को एकही सहायक मिला है" परन्तु ऐसा विचार

में होने वालानहीं।

कर्मपरिणाम राजा के इस प्रकार वचन सुनकर सम्यग्दर्शनादि सब आनन्द पातेहुए उठे और जैनेन्द्रपुर में गये-वहां जनलोगों के पास सब जगह हर एक घरके द्वारपर तोरण बँधाते हुए. कमलों से आच्छादित करके. सोनेके कलश तरतीबवार रखके. दुकानों की शौभाके लिये ऊंचे बाँसो पर आगेके हिस्से पर कीमती वस्त्र लटकाके. कस्तूरी धनसार से मिश्रित करके चन्दनरस से राज मार्गों को सिंचन कराके. ढेर किये हुए सुवर्ण और रत्नों का महादान दिलाकर, अभय दान कराकर. बाजे बजाकर और नये २ नाटक कराकर अपना आनन्द प्रदर्शित करनेलगे।

अब यहां सिद्धरथ बाल्यावस्था सेही अत्यन्त हर्ष पूर्वक देनों को नमस्कार करताहुआ, गुरुमहाराज को वन्दन करताहुआ. पिताके साथ जिन मन्दिरों में जाता, वहां स्नात्रादिक देखकर खुश होता, मुनि दर्शन से सन्तुष्ट

होता. उनके वचन सुनकर आनन्द मनाता और उनको भोजन आदि का दान देकर सन्तुष्ट होजाता । इसप्रकार पुरोहित हमेशा उसका पोषण करनेलगा और उसके सन्निधानमें वह थोड़ेही समय में सब कला सिखगया। जब कि वह युवावस्थामें आया तो कामदेव से भी ज्यादे रूपवान होगया और नूतन उत्पन्न हुए रूप से भी अतिशय कान्तीवान हुआ तो भी वह विषयों से अलग रहता. स्त्रियोंकी कथाभी उसको अच्छी नहीं लगती, उसके साथ मन लगाने की भी इच्छा नहीं होती. सिर्फ मुनियोंकी ही वह सेवा करता, उनसे धर्म ज्ञान सुनकर हृदय में तत्त्व को विचारता, संसारसे प्रतिक्षण अलग [illegible] रहकर मोक्ष सुख की इच्छा करता।

महाविभूति पूर्वक दीक्षाली। जिससे चारित्रधर्म राजाके समस्त सैन्य हर्पित हुए. फिर सदागमको अति परिचित करके. पूर्वोक्त विधिसेही मोहसैन्यका दलनकर, पुण्योदय को ज्यादे पुष्ट बनाकर, चिरकाल तक अकलक चारित्र पालकर, मोहसैन्यका क्षय होनेसे पूर्ववत अनशन करने के लिये समाधि प्राप्त करके नवमें ग्रैवेयकमें देव पनको उत्पन्न हुआ, वहाँ ईकतीस सागरोपम प्रमाण आयु पालकर वहांसे चलकर पूर्व विदेह में पद्मकुण्ड नामके नगर में सीमन्त नामके राजाके ईन्द्रदत्त नामका पुत्र हुआ। वहां भी महानरेन्द्रके भोग २ कर पूर्व प्रमाणे साधुपना अंगीकार कर मोहबल बहुत क्षीण होतेहुए और पुण्योदय अति पुष्ट होतेहुए पूर्वोक्त अनशन विधिसे ही समाधि पाकरके वह सर्वार्थ सिद्धि विमान में परमर्द्धिक अहमिन्द देव हुआ।

अब यहां इसी गंधिलावती विजयमें विलासवेप और विभूतिसे ईन्द्रपुरी के जैसी. चन्द्रपुरी नामकी महा नगरी है वहां नमस्कार करते हुए अनेक राजाओंको

हर्षित करके विदाकिये, फिर राणी आनन्दित होकर सुख पूर्वक गर्भका परिपालन करनेलगी. देवपूजा, अभयदान, आदि दोहला जिसका सपूर्ण करनेमें आया है। ऐसी उस रानी के गर्भ स्थिति सम्पूर्ण होतेही रत्न के पुञ्ज जैसी अपनी प्रभाके विस्तारमे सूतिका गृहको जिसने उद्योतित कर दिया है। ऐसे पुत्रको प्रसन्नतासे जन्मदिया, तब हर्षके प्रकर्षसे परिपुष्ट होकर तथा जिसके स्तनतट पर मोतीकी माला उछलरहीथी, ऐसी चन्द्रधारा नामकी दासीने राजाको निवेदन कियाकि. हेनाथ! आपके पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ है। यह सुनकर अत्यन्त खुशहोकर राजा ने उसको सात पीढ़ी तक चलसके इतना तुष्टिदान दिया, फिर राजाने सारी नगरीमें आनन्दके बाजे बजाकर महान् उत्सव कराया सुवर्ण आदिका महादान दिया और सब कैदियोंको छोड़दिये।

इस प्रकार गीत, वाजित्र, नृत्य, खान. पान, प्रदान आदि प्रमोद से पुत्र जन्मके महोत्सव होरहे है। ऐसे समय राजाने ज्योतिःशास्त्रका परम रहस्यके जाननेवाला सिद्धार्थ

पानीसे भय माननेवाला स्त्रियोंके प्रीय, कृतज्ञ, राजमान्य, प्रचण्ड कर्म करनेवाला मगर अन्तःकरणमें कोमल और प्रवासी होता है। उसकी मृत्यु अठारा वर्षमें होती है या पचीश वर्षके बाद होती है। इन दोनोमेंसे बचजाय तो एकसो वर्ष जीए और मंगलवारको वह मरता है।

वृष राशिमें जन्माहुआ मनुष्य भोगी, दाता, पवित्र, दक्ष, गण्डस्थलमें स्थूल, महाबलवाला, धनवान, अल्पभाषी, स्थिरमन, लोकप्रिय, परोपकारी, मनोहर, बहुत पुत्रवाला, किर्तीवान्, तेजस्वी, बहुतरागी, कण्ठमें रोगी, अच्छे मित्रवाला, विलासवाली गतिसे चलनेवाला, सत्यवादी, और स्कन्ध पर मसके लान्छनवाला, ऐसे गुणोंसे युक्त होता है। और पचीस वर्षका होकर जो वह चौपायेसे नहीं मरेतो वह सौ वर्षतक जीता है। और रोहिणी नक्षत्र बुधवारको मरता है।

मिथुन राशिमें जन्माहुआ पुरुष, मिष्टान्न खानेवाला, दृष्टिमें चपल, मैथुनमें आसक्त, धनाढ्य, दयालु, [illegible]

वल्लभ, व्यसनी, लोगोंमें प्रसिद्ध, पीले नेत्रवाला, राज भक्त, मिष्टान्न खानेवाला, पराक्रमी और पीछेसे वैराग्य पानेवाला होता है। और पचास वर्षका होकर मरे या नहींतो अस्सी वर्षका होकर चैत्रमहिने मघा नक्षत्रमें शनीवारको तीर्थ क्षेत्रमें मरता है।

कन्या राशिमें जन्माहुआ मनुष्य, स्त्रियोंको आनन्द देनेवाला, धनवान, दाता, दक्ष, कवि वृद्धपनेमें धर्मपरायण, सर्व लोगोंको प्रीय, नाटक और गानेके व्यसनमें आसक्त, प्रवासी, स्त्रीसे दुःखी, नेत्र रोगी, निर्भय तथा कमर और उदरमें दर्दवाला, बीस या तेवीस वर्दका होकर शिररोग, जल, अग्नि या शस्त्रसे मरे या नहींतो अस्सी वर्षमें मूल नक्षत्रमें वैशाख महिनेमें बुधवारको मरे।

तुला राशिमें जन्माहुआ मनुष्य, अति रीसवाला, दुःखी, स्फुट बोलनेवाला, क्षमाशील, चपल नेत्रवाला, चञ्चल, लक्ष्मीवाला, घरमें बल बतानेवाला, व्यौपारमें कुशल, देवपूजक, मित्रवत्सल, प्रवासी, मित्रोंको प्रिय, उदार, सत्यवक्ता, अलुब्ध, दाता, लम्बे नेत्रवाला, दयालु

देवताओंकोही स्पृहणिय ऐसे महाभोग भोगे।

अब एकदिन चौदसके रोज उपवास करके वलिरा-जाने सूर्यास्त समय देवार्चन करके स्वाध्याय ध्यानमें एकाग्र होकर सामायिकयुक्त पौषध ग्रहणकर, शुभ भावसे रात्री व्यतीत करके प्रातःकाल सद्बोधादि चारित्रधर्म रा-जाके सैन्य विशेषपास आते समय इसप्रकार विचार किया कि:–" अहो! देखोतो सही, मै सामान्य आदमीकी तरह विषयरूप मासके लव मात्रमें लुब्ध होकर अति दुर्लभ ऐसे मनुष्य जन्मको पाकर हार रहा हूँ। सागरोपम तकके दिव्य भोगसे जो प्राणी तृप्त हुआ नहीं उसको विण्डवना और असार ऐसे इन पाँच दिनोंके मनुष्य सम्बन्धी उपभोगसे क्या तृप्ति होनेकी है? इस ःचःधमें तत्व दृष्टिसे विचार किजिये तो इस जीवलोकमें कुछभी रमणीक वस्तु देखनेमें नहीं आती है तो भी यह सब अनित्यतारूप महासिंहणी के मुख्य रूप खड्डेमें पड़ा हुआही है। वो इस प्रकार:–

मूर्खलोग अपने रूप और यौवनसे अपने शरीरको

प्रभुत्वका अभिमान करना किसकामका है ? 'मेरी आज्ञामें रहनेवाले बहुत पुत्र है, स्नेहवती और रूपवती मेरी स्त्री है, और दूसरे कुटम्बी मेरी आज्ञाके वशमें है. इसलिये मेरा कुटुम्ब श्लाध्य है' इसप्रकार विचार करनेवाले कितनेक प्राणी प्रेमसे परवश होजाते हैं, यहभी विना विचारकी बात है। क्योंकि पुत्र कलत्रादिक सब अभिष्टलोग स्वार्थीही होते हैं और जो उनका स्वार्थ नहीं होता तो वे सब प्रेमरहित हो जाते हैं उसमेंही कभी अपन उसको अत्यन्त अभीष्ट होंगे तो रोग, बुढापा, और मृत्यु आदिसे अपना रक्षण करने के लिये वे समर्थ नहीं. इससे थोडे समय में मरकर पुत्रादिक सबोंका अवश्य त्याग करना पडता है। इसलिये ऐसी सुन्दरतासे क्या ? 'मै कर्म प्रिय गीता सुनताहूँ, सुन्दर रूप देखता हूँ, सुगन्ध आदि द्रव्योंका उपभोग करता हूँ, मनोज्ञरसोंका स्वाद लेता हूँ और कोमल तथा अभीष्ट ऐसे स्पर्शोंका उपभोग लेता हूँ' इसप्रकार कितनेक जीवों को विषय की सुन्दरता का अभिमान होता है. यह सब अज्ञानताहीका प्रभाव है, क्योंकि अभि प्राप्त हुए २ विषयोंका उपभोग करते. समयान्तरमें जैसा अत्यन्त

अभिप्राय जानकर और योग्यसमय देखकर चन्द्रपुरी नगरी के पासके मृगरमण नामके वगीचेमें पधारे। वहां देवताओंने तुरत सुवर्णमय कमल रचा। उसपर केवली भगवान विराजमान हुए। फिर वहां आये हुए देवता और विद्याधराने अमृत तुल्य धर्म देशना देनेकी उनसे प्रार्थनाकी। उनके आनेकी वात सुनकर हर्षसे रोमाञ्चित शरीरवाला हुआ २ वलिराजा सव ऋद्धि सहित वहा आया और पञ्चाभिगम करके तीन प्रदिक्षणा देकर भक्तिपूर्वक उनको प्रणाम कर शुद्ध जमीनपर उनके पास वैठा। फिर धर्म सुनकर प्रसगवस उसने कहा किः-"हे भगवन्! यह मनुष्य जन्म लगभग सव निरर्थक हारकर अव मैं आपके चरण युगल के शरण आया हूँ। इसलिये वाकी रहे हुए मेरे मनुष्य जन्मको आप किसी तरह सफल करो" केवली भगवंत वोले कि -"हे राजन्! इस जन्ममें तू क्या हारगया है? यहतो वहुत कम है परन्तु पूर्व भवोमें तू इतना ज्यादे हार गया था कि उसका वर्णन करनेसे सारे संसारको भय और आश्चर्य होता है" तव वलिराजाने कहा कि:-हे स्वामिन्! तो मैं पहिले यहही सुननेकी इच्छा करता हूँ.

आर्यक्षेत्रमें तेरेको मनुष्यजन्म कई समय दिया. परन्तु कहीं कुजाति भावसे, कहीं कुलदोपसे, कहीं जात्यध, बधिरत्व और पशुपन दोषसे, कही मनुष्य होतेहुए धर्मके नाम मात्रको जाने वगैर पूर्ववत तेरेको पीछा पलटाकर मोहादि शत्रुओंने एकेन्द्रियादिकमें लेजाकर अनेक पुद्गल परावर्त्त तक फिराया ।

एक समय श्री निलय नगरमें धनतिलक श्रेष्ठीका तू वैश्रमण नामका पुत्र हुआ, वहा 'स्वजन, धन, भवन, यौवन, वनितादि सब अनित्य समझकर हे भव्यों ! आपत्तिसे रक्षण करनेवाला ऐसा धर्मका रक्षण करो'! इस प्रकारका उपदेश सुनकर तेरेको धर्म करनेकी बुद्धि हुई। परन्तु वहां सिर्फ कुदृष्टि होनेसे परमार्थमेंतो महा पाप बुद्धिही थी। उसके वशसे तू स्वयंभू त्रिदण्डीका शिष्य हुआ। इससे वहांभी मनुष्यजन्मको हारकर फिर संसारमें अनन्त पुद्गल परावर्त्तनक फिरा। फिर अनन्तकाल बीतनेपर फिर तू मनुष्य जन्ममें आया, मगर शुद्ध धर्म श्रवणके अभावसे वह कुधर्म बुद्धि निवृत न हुई। किसी समय

समयतक तुझे सम्यकत्व रत्न मिला। मोक्षवृक्षका मूलरूप और अति दुर्लभ ऐसे उस सम्यकत्वको पाकरभी कुदृष्टि रागके वशसे पीछा तू हारगया। फिर धनश्रेष्ठीका पुत्र सुभगके भवमे उस सम्यकत्वको प्राप्त करके स्नेह रागसे उसका नाश किया। गृहपतिका पुत्र सिंहके भवमे विषरागसे उसका नाशकिया और जिनदत्तकी लड़की जिनश्रीके भवमें द्वेषसे उसका नाश किया। फिर ब्राह्मणका पुत्र ज्वलनशिखके धनञ्जय पुत्र कुबेरका, धनाढ्यका पुत्र सोमदत्तके भवमें अनुक्रमसे क्रोध, मान, माया और लोभसे तू सम्यकत्व रत्न हारगया।

इसप्रकार मोहादि शत्रुके वशहो असख्यात् भवोंमें तू सम्यकत्व हारगया। धर्मश्रेष्ठीका लड़का सुन्दरके भवमें हिंसासे देशविरती ऐसा मणिभद्रके भवमें मृषावादसे, सोमदत्तके भवमें अदत्तादानसे, दत्तके भवमें मैथुनसे, धनबहुल श्रेष्ठीके भवमें परिग्रहसे और रोहिणी श्राविकाके भवमें विकथारूप अनर्थदण्डसे इसप्रकार क्रमसे मोहादिकके दोषसे समग्र सुखकी हेतुभूत ऐसी देशविरतीके

कमलाकर नगरमें भीचन्द्रराजाका तू भानु नामका पुत्र हुआ, वहां उसी तरह सर्वविरतीका आराधन किया, मोहादिकको अधिकतर क्षीण किया और पुण्योदयको विशेष पुष्ट किया, वहांसे नौग्रवैकमें जाकरके पश्चात् पद्मखण्ड नगरमें तू ईन्द्रदत्त नामका राजा हुआ, वहां सम्यग्प्रकारसे सर्वविरतिका आराधनकर मोहादिकको ज्यादे क्षीण कर परम प्रकर्षसे पुण्योदयको पुष्ट बनाकर तू सर्वार्थ सिद्ध विमानमें उत्पन्न हुआ। वहासे चलकर तु इस भवमें बलि नरेन्द्र हुआ है"।

इसप्रकार अपना चरित्र सुनकर बलिनरेन्द्र सभ्रान्त होउठा कुवलयचन्द्रकेवलीके पाँव लगा और बोला कि:— "हे भगवन्! मोहादि शत्रुतो बहुत दुष्ट हैं। इसलिये इस भवमें पूर्ववत् मेरेको दुःख न देनेको आवे उसके पहिलेही कृपा करके चारित्र धर्म राजाकी सैनाके साथ मुझे भेजदो और ऐसा उपाय बताओ कि जिससे वे मेरा पराभवही नहीं करसके और मैं उनका नाश करसकुं। फिर केवली भगवन्तने कहा कि:- "हे राजन्! तुम्हारे जैसेको ऐसाही

फिर मिलना मुश्किल है' ऐसा विचारकर तत्त्वज्ञ ऐसा बलि नरेन्द्रने रति सुन्दरी पटराणीके नयसारनामके बड़े पुत्रको राज्यासनपर बिठाने की सामंतोको आज्ञादी उसको राज्यासनपर बैठाकर फिर जिन चैत्यमें पूजा, महादान, और भारी पटहकी निरूपणा वगैरा महोत्सव पूर्वक राजाओं, माण्डलिको, मन्त्रियोंको, सामंतोको और पौरजनों वगैरा पांचसौ मनुष्योंके साथ तथा अपनी कितनीक रानियोंके साथ वह केवली भगवंतके पास आया, और विधि पूर्वक दीक्षा ली।

फिर गुरुमहाराजकी दीहुई प्रथमकी सब शिक्षा उसने तुरन्त क्रियामें रखदी। सद्बोध और पुण्योदयके प्रभावसे थोडेही दिनोंमें वह बाराअंग पढगया और अनेक अतिशय सम्पन्न हुआ, फिर मोका जानकर कुवलयचन्द्र भगवन्तने उसको अपने आचार्य पदपर स्थापन किया और उनको सर्व गच्छका अधिष्ठाता बनाकर आप शैलेशीकरणसे भवोपग्राही कर्मकी निर्जराकर मोक्षमें गये। फिर सद्बोध और सदागमकी कहीहुई विधिसे समरांगणमें मोहसैन्यका

मकृतिओं को उसने क्षय करडाला, फिर अर्ध क्षपित, आठ कपायों, नपुंसक वेद, स्त्रीवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुस्सा, पुरुपवेद, संज्वलन क्रोध, मान, माया और लोभका क्षय किया मगर सज्वलन लोभका क्षय करते हुए वह सूक्ष्म होकर सूक्ष्म सपराय नामका दशवें पंगिथिये पर जाकर छिप रहा, वहा उसने पिछाड़ी जाकर क्षपक श्रेणीरूप तलवार से उनका नाशकिया।

· इस मकार अट्ठावीश सोदर्य मनुष्य रूप मोहराजा के पतित होनेपर, वलि राजर्षिसूरि अस्खलित मकार से आगे चलकर सिद्धि सौध के क्षीक्ष मोहगुणस्थानक नाम की वारवीं सीढ़ीपर गये, वहा मतिज्ञानवरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मन.पयार्थ ज्ञानावरण और ज्ञानावरण इन पांच रूप को धारण करनेवाले ऐसे ज्ञानावरण का नाश किया दानांतराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय इन पांच प्रकार के अंतराय का नाशकिया, निद्रा, पचला, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, और

इस प्रकार केवली भगवन्तके वचन सुनकर अतिशय हर्षसे रोमांञ्चित होकर चन्द्रमौलिक राजाने तुरन्त उठ कर पाँव पड़कर कहा:-'हे भगवन् आपने यहां पधारकर मेरेपर बहुत उपकार किया है। और विशेषकर आगम के सब स्वरूपका ज्ञान देनेवाला ऐसा आपका चारित्र कथनसे हमको उपकृत किये हैं" फिर केवली भगवन्तने कहा कि:-"हे राजन्! अपना चरित्र स्वय कहना ये ठीकनहीं. क्योंकि इसमें अपने गुणोंकी श्लाघा होजाती है और वह धर्म तथा नीति विरुद्ध है. परन्तु तुम्हारे जैसे को उपकारी जानकर मैने सक्षेपमें कहा है। विस्तारसेतो सारी उम्र खतम होजावे तोभी वह नहीं कहाजा सकता, ऐसा मेरा ही चरित्र नहीं मगर सबका समझलेना चौदह राजलोकों में एकेन्द्रिय में ऐसा कोई स्थान नहीं दो. तीन या चौरिन्द्रियों में ऐसा कोई रूप नहीं. जलचर स्थलचर और खेचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं. नर्क में ऐसी कोई जगह नहीं. इन भूमियों में ऐसा कोई नर्कावास नहीं और मनुष्यपनमें गाम. नगर या स्थान नहीं, कि जहां यह जीव अनन्तबार उत्पन्न

शरणभूत हुआ है। वही जिनधर्म तेरेको शरणभूत होगा दूसरा शरण होही नहींसकता।

फिर संवेगसे उद्भव हुए अश्रुजलसे जिसके नेत्र भरगये हैं ऐसा चन्द्रमौलि राजाने कहा कि:-" हे भगवन्त! आपनेजो मेरे ऊपर अनुग्रह करनेके लिये इस गम्भीरार्थसे व्याप्त ऐसा अपने चरित्रको कहनेका श्रम कियाहै। अन्यथा भवसागरके किनारे पहुँचेहुए और समग्र स्वकार्य जिसके सिद्ध होगये है। ऐसे आपको कहनेका क्या मतलब है? मगर भगवन् अव्यवहार निगोदमेंसे एक समयमें कितने जीव बाहर आते हैं? सो कृपाकर फर्मावें तब केवलीभगवंतने कहा कि:—

" सिज्झंति जत्तियाखलु, इहय ववहाररासि मज्झाओ।
इंति अणाइवणस्सइमज्झाओ तत्तिया चेव" ॥ १ ॥

"यहां व्यवहार राशिमेंसे जितने जीव सिद्ध होते हैं उतनाही अव्यवहार वनस्पतिमेंसे आते हैं" फिर राजाने कहा कि '—यहतो ठीक, मगर वहांसे निकलेहुए सब जीव

किये। फिर आप कुछ कम चालिस पूर्व पर्यन्त सर्व विर-तिपनेको पालकर अन्तसमय शैलेपीकरणरूप करनेसे कर्म शत्रुके बाकी रहेहुए वेदनीय, आयु नाम और गोत्र नामके भवोपग्राही कर्म चतुष्टयका क्षयकर, चारित्र धर्मकी समस्त सैन्य की उन्नती कर, सब शरीर और कर्म का सम्बन्ध छोड़, समस्त संसार के दुःख प्रपञ्च से विमुक्त होकर बलिराजर्षि केवली निवृत्तिपुरी के स्वमी हुए।

"इति श्री मर्हिंद्र हंसगणि विरचितं श्री भुवनभानु केवली चरितम्"

समाप्तौ ग्रंथः॥

किये। फिर आप कुछ कम चालिस पूर्व पर्यन्त सर्व विर-
तिपनेको पालकर अन्तसमय शैलेपीकरणरूप करनेसे
कर्म शत्रुके बाकी रहेहुए वेदनीय. आयु नाम और गोत्र
नामके भवोपग्राही कर्म चतुष्टयका क्षयकर, चारित्र धर्मकी
समस्त सैन्य की उन्नती कर, सब शरीर और कर्म का
सम्बन्ध छोड़, समस्त संसार के दुःख प्रपञ्च से विमुक्त
होकर बलिराजर्शि केवली निवृत्तिपुरी के स्वमी हुए।

"इति श्री मर्दिद्र हंसगणि विरचितं श्री भुवनभानु
केवली चरितम्"

समाप्तौ ग्रंथः॥

ग्रन्थमें द्रव्य सहायता देनेवालों की शुभ नामावली ।
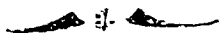
१२८ श्रीयुत सेठ लक्ष्मीचन्दजी वैश्य आगरा वालेकी धर्म पत्नी सुगन बाई ।
१०० श्रीमती प्यारी बीबी देहली ।
५० ,, वासु बीबी ,,
५० श्रीयुत बछराजजी चोरडिया की धर्म पत्नी सम्पत बाई नागोर ।
५१ श्रीयुत भीखणचन्दजी नेमचन्दजी गोलेछा फलोदी
४० सौभाग्यवती रत्नबाई जैपुर ।
४० श्रीयुत गजराजजी मदनराजजी मुणहत कोटा ।
४० देहली की श्राविकाओं के ओरसे ।
२५ श्रीमती कृष्णबाई मुलतान ।
२० श्रीमती लल्लीबाई देहली ।
१० श्रीमती कुन्दन बीबी देहली ।

महारोगी को अमृतरस के समान मुझ अपने पूर्ण भाग्योदय से श्रीमान् के आगमन की सूचना मिली-आपके आगमन की सूचना मिलते ही मैं घोर संग्राम में हारा हुआ व्यक्ति के समान आपसरीखे महाबलवान की शरण में दौड़ कर आया हूं अब आप कृपाकर मुझे बताइये कि इस संसार में मेरी रक्षा कौन करेगा –

राजा का यह प्रश्न सुनकर अपनी वाणी से अज्ञान अंधकार को दूर करनेवाले मुनिराज ने उत्तर दिया कि हे महाराज जिसने आप सरीखे अनेक प्राणियों की रक्षा की है और विशेष कर मेरी भी रक्षा की है वही तुम्हारी भी रक्षा करेगा।

यह सुन राजा अचंभित हो कहने लगा-हे महामान्य आपतो संसार के रक्षक हैं आपको रक्षा करने वाला कोई अन्य व्यक्ति हो यह बड़े आश्चर्य की बात है कृपया साफ र यह बतलाइये कि वह अति ऊँचा व्यक्ति कौन है?

इस प्रश्न को सुनकर मुनीश्वर कहने लगे, "हे महाराज,

यह विषय बहुत लम्बा है और आपका मन विक्षिप्त है इसलिये इस समय इसका विवरण नहीं कियाजासक्ता" ।

ऐसा सुनकर राजाने कहा, हे भगवन ! ऐसा न कह क्योंकि एक मूर्ख प्राणी भी सुधापान की प्राप्ति होतेहुए विषपान की प्राप्ति के लिये उत्सुक नहीं होता तथा जैसे मयूर मेघके आगमन की राह देखता है वैसे ही मैं आपकी राह देखता था इतनेही में आपका यहां पधारना होगया, हे भगवन ! मुझे अभी किसी प्रकार का दूसरा व्याक्षेप नहीं है इसलिये हे पूज्य! आप बिनाकिसी विकल्पके अपने अमृत मय वचनो से मेरे श्रवणयुगल को सन्त कीजिये राजा को ऐसी जिज्ञासा जानकर ज्ञानी बोले, यदि ऐसा हो तो सावधान होकर सुनो ।

अनन्त जीवों का निवासस्थान, सर्व सम्पत्तियों का मन्दिर, समस्त उत्तम जनो से अनियुक्त, समस्त आश्चर्यों का स्थान, ऐसा लोकोदर नाम का एक नगर था, हर एक प्रकार के वर्ण, जाति, गोत्र, फल, पुन्य, शिल्पकला,

विद्या, धन, रत्न, नीति, धर्म. कर्म. विलास. सुन्दर नेपथ्य, नाटक, आदि अनेक प्रकार की वस्तुयें उस नगर में दृष्टि गोचर होती थीं उस नगर में परस्पर अत्यन्त विरुद्ध और महावल्ष्ठि, धर्म्मात्मक. और पापात्मक नाम की दो सेना हमेशा रहती थीं उनका नायक जिसने कि तीनों जगत् वशमें करलिये थे तथा नित्य सर्व प्राणियों का अहितही करने में तत्पर रहनेवाला मोहराज नाम का महिपति था वह राजा इन्द्रों को भी अपनी आज्ञा में रखता था चक्रवर्त्तियों को भी अपने निर्देश में रखताथा तथा अन्य तमाम राजा तो उसके दास की तरह रहतेथे, वहां के रहनेवाले तमाम उसके किंकर वने हुए थे, ऐसी प्रवलता होनेसे देव नहीं होते हुए भी वह अपने को देव मानताथा, तत्व नहीं जानतेहुएभी अपने को तात्त्विक समझताथा. सर्वदा कुप्रकृति पक्ष में वह विशेष लगा रहता था महा पाप क्रियाओं में लगा रहना पसंद करताथा वह राजा महाहिंसक, असत्य भाषी, चोर, परस्त्रीलम्पट, महारम्भ करनेवाला, रात्री भोजन में रत, क्रोधी, मानी, मायामय लोभी था तथा

पुत्रादिक के प्रेमबन्धन रूपपाश में बँधाहुआ कलत्रादिक के अनुराग रूप सांकल से नियन्त्रित हमेशा शोक को उत्पन्न करानेवाला, दुर्गति का बिलकुल भय नहीं रखने वाला, नर्क तिर्यञ्च आदि की हलकी गति में वार २ ले-जानेवाला आदि अनेक दुर्गुणों से भरा हुआ मोहराजा की सेना निरन्तर सर्व प्राणियों को दुःखही देती रहती है।

दूसरा चारित्र धर्म नामका राजा धर्म्म सैन्य का नायकथा वह सम्यक्त्व, सतबोध, सुशास्त्र. शम, मृदुता, गाम्भीर्य सरलता, औदार्य्य, सत्य, शौच. और दम आदि अनेक सुभटों से घिराहुआ था, सचमुच वह प्राणियों को बहुत हितकर था, वह अपनी सत्ताका उपयोग इस प्रकार करता था-देव को ही देव माने. गुरु को ही गुरु माने. तत्त्व मे ही तत्त्व बुद्धि करावे, अवस्तुओं के प्रतिबन्ध को त्याग करावे. सत्य क्रियाओं में लगावे. आत्मवत् समग्र प्राणियों का रक्षण करावे. असत्य का त्याग करावे, चोरी को दूर करावे ब्रह्मचर्य्य पलावे. परिग्रह की बुद्धि को शीतल करावे, रात्रि भोजन को दूर करावे, प्रथम रस से विभूषित

करे, मृदुतासे मण्डित करावे, सरलता से श्रृंगार करावे, सन्तोष से परिचय रक्खे, निविड़ स्नेह बन्धन से मुक्त करे, अनुराग रूप सांकल का बन्धन तोड़े, इस भव में भी महासमृद्धि देवे, श्रेष्ठत्व प्राप्त करावे, लघुता को दूर करावे सर्व मनुष्यों की प्रशंसा को प्राप्त करावे, सुगति प्राप्त करावे, नरक और तिर्यंगति को रोके, महर्धिक देवताओं में जन्म देवे, राज्यकामा, ऐश्वर्यकामा, और पूज्यत्व प्राप्त करावे।

इस प्रकार से वह राजा संसार में सुखकर होने से और अखीर में मोक्ष लेजानेवाला होनेसे उसको हितकर की उपमा दीजाती है।

इस प्रकार ये दोनों राजा अपनी २ सेनाओं को लिये हुए निरन्तर सुख दुःख प्राप्त कराते हुए अनतकाल से युद्ध के अन्दर लगे हुए हैं परन्तु दोनों में से एक का भी पराजय नहीं होता कारण कि उन दोनों से भी गरिष्ठ और तीन लोक का नायक ऐसा कर्म परिणाम नामक महर्धिक

राजा है शुभ और अशुभ रूप से उसका वर्णन किया जाता है परन्तु वह मात्र योगियो के ही लक्ष में आसक्त है। स्थूलबुद्धि वाले प्राणी उसका यथार्थ रूप देख नहीं सक्त वह मोहराजा का बडा भाई कहलाता था और लोकस्थिति का छोटा भाई था तथा काल परिणति नाम की स्त्री का पति था वह बड़ा समर्थ है और नाटक का उसको बड़ा शोक है।

वह राजा इस प्रकार से हमेशा विचित्र लीला करता रहताथा। "देवताओ को वह किसी समय गधे बना देता था और गधे को देवता बनाता था, तिर्यञ्चो को नारक और नारक को तिर्यञ्च बनादेताथा। हाथियों को कीड़े और किड़ों को हाथी बनाता था चक्रवर्त्तियो को भिखारी और भीखारियों को राजा बनाता था, धनाढ्य को निर्धन और निर्धन को एक क्षण में धनाढ्य बनादेता था, निरोगी को तुरन्त रोगी और रोगी को निरोगी बनाता था, चिन्तावान् को निश्चिन्त और निश्चिन्त को चिन्तावान् बनादेता था, सुखी को दु:खी और दु:खी को सुखी

करे, मृदुतासे मण्डित करावे, सरलना से शृंगार करावे, सन्तोष से परिचय रक्खे, निविड़ स्नेह वन्धन से मुक्त करे, अनुराग रूप सांकल का वन्धन तोड़े, इम भव में भी महासमृद्धि देवे, श्रेष्ठत्व प्राप्त करावे, लघुता को दूर करावे सर्व मनुष्यों की प्रशंसा को प्राप्त करावे, सुगति प्राप्त करावे, नर्क और तिर्यग्गति को रोके, महर्धिक देवताओं में जन्म देवे, राज्यकामा, ऐश्वर्यकामा, और पूज्यत्व प्राप्त करावे।

इस प्रकार से वह राजा संसार में सुखकर होने से और अखीर में मोक्ष लेजानेवाला होनेसे उसको हितकर की उपमा दीजाती है।

इस प्रकार ये दोनों राजा अपनी २ सेनाओं को लिये हुए निरन्तर सुख दुःख प्राप्त कराते हुए अनतकाल से युद्ध के अन्दर लगे हुए हैं परन्तु दोनों में से एक का भी पराजय नहीं होता कारण कि उन दोनों से भी गरिष्ठ और तीन लोक का नायक ऐसा कर्म परिणाम नामक महर्धिक

राजा है शुभ और अशुभ रूप से उसका वर्णन किया जाता है परन्तु वह मात्र योगियो के ही लक्ष में आसक्त है। स्थूलबुद्धि वाले प्राणी उसका यथार्थ रूप देख नहीं सक्त वह मोहराजा का बडा भाई कहलाता था और लोकस्थिति का छोटा भाई था तथा काल परिणति नाम की स्त्री का पति था वह बड़ा समर्थ है और नाटक का उसको बड़ा शोक है।

वह राजा इस प्रकार से हमेशा विचित्र लीला करता रहताथा। "देवताओं को वह किसी समय गधे बना देता था और गधे को देवता बनाता था. तिर्यञ्चो को नारक और नारक को तिर्यञ्च बनादेताथा। हाथियों को कीड़े और किड़ों को हाथी बनाता था चक्रवर्त्तियों को भिखारी और भीखारियों को राजा बनाता था, धनाड्य को निर्धन और निर्धन को एक क्षण में धनाड्य बनादेता था, निरोगी को तुरन्त रोगी और रोगी को निरोगी बनाता था, चिन्तावान् को निश्चिन्त और निश्चिन्त को चिन्तावान् बनादेता था, सुखी को दु:खी और दु:खी को सुखी

वना देता था." इस प्रकार करने से यह सर्व शक्तिमान् और बहुरूपी के सदृश प्रसिद्ध हुआ था. मोहराजा असंख्य प्राणियों को, असंख्य देवताओं को, अगणित मनुष्यों को तथा अनन्त तिर्यञ्चों को पात्र बनाकर नाटक की रचना करता था, कर्म परिणाम को वह अत्यन्त प्रिय होने से वह सबों को वचाता था और स्वयं वह उसमें आनन्द मानता था. जब कर्म परिणाम चरित्र धर्म के पक्ष में जाय तब अवश्य वर्तन चलाता था और कुछ नहीं तो वह मोहराजा के पक्ष का पोषण करता था। यह साधारण नियम था कि जिस पक्ष में वह उपस्थित रहता था उस पक्ष की अवश्य जय होती थी और विपक्षवालों की हारहोती थी।

एक समय मोहमहिपति उस को दोनो तरफ की सेना में जाते देख क्रोधित होकर उससे कहनेलगाः- "हे महानुभाव! हम हमेशा तेरा पक्ष करते रहते हैं, प्रिय भाषण बोलते हैं, हमेशा हृदय से आप को प्रिय लगे वैसा नाटक करते रहते हैं, सदागमादि वैरी तो हमेशा नाटक को छिन्न भिन्न किया करते हैं इतना करते हुए भी तुम सदा

इनका पक्ष लेकर किस प्रयोजन से हमेशा इतनाही नहीं वरन् इस जैसे पात्रों को तत्कालही मोक्ष का चूर्ण करते हो? यह हम नहीं समझसकते अथवा यह तुम्हारी बहुरूपी चेष्टा को न जानसकते हैं।

इस प्रकार मोहमहिधर के वचन सुनकर मन्दहास्य से उसके शिर का चुम्बन कर ओर आनन्द पूर्वक उसका आलिङ्गन कर कर्मसचय राजा आँखों मे आँसू लाकर कहने लगाः–"हे वत्स ! उसकी सर्व चेष्टाये मैं अच्छी तरह जानता हूं। और जो चेष्टायें तू कहता है वैसी ही है व कई वख्त मेरी आज्ञा का भी उलङ्घन करके स्वेच्छा पूर्वक वर्तता रहता है तथापि इसमें मै निरुपाय हूं मेरा इनके साथ भी अनन्त काल से सम्बन्ध है, इसलिये कदाचित कोई २ समय पर इनका भी भला करना पडता है परन्तु मेरे चित्त में तो तूही हमेशा निरन्तर निवास करता रहता है, वास्ते हे वत्स ! तेरी इच्छा हो सो भी तू प्रकट कर मै तेरी इष्ट सिद्धि करूंगा"। यह बात सुनकर मोहराजाने कहा-हे महा-राज जो आपकी ऐसी ही प्रसन्नता है तो आप के अव्यय

पुरमें से ऐसे ससारो जीव दीजिये कि जिनकी सहायता से मुग्व को देने वाला समग्र शुक्ल पक्ष का निर्मूल कर सकू, ऐसे वचन सुनकरके कर्म परिणाम राजा ने असम् व्यवहार नगर में से दूर भव्य और अभव्य ऐसे सहाय उसको दिये। मोहराजा भी उनको पाकर सर्वत्र विलास करने लगा यह बात चारित्र धर्म के सैनिकोंने अपने राजा से कही जिसको कि सुनकर सर्व सैन्य आनन्द रहित, निरुत्साहित और क्रिया रहित होगया। सेना की इस प्रकार की व्यवस्था देख कर सतबोध नामका मंत्री अपने स्वामी से कहने लगा, हे देव इस प्रकार से आप सत्व और उत्साह रहित होकर क्यों बैठ रहे हो। महापुरुष तो आपत्ति में सदा कुछ न कुछ उपायही ढूढा करते है। पॉव पसार कर पड़रहना ये तो अबल औ कायर पुरुषों का काम है। अग्नि मे जलते हुए घर को देख कर जो हाथ बान्धकर बैठे रहे उसका और सर्वस्व नाश के क्य हो सक्ता है, राहूसे ग्रसित सूर्य क्या अपने पराक्रम को छो देता है ? वैसेही यदि वह समस्त ग्रस्त हो जाय तो क्या जगत को प्रकाशित नहीं करता है अतः धैर्य का अवलम्बन करे

इस विषय में कोई भी उपाय सोचना चाहिये। इस प्रकार सुन करके चारित्रधर्म राजा ने कहा "हे मंत्री! उपाय सोचने का काम खास तुम्हारा है। इसलिये इस विषय में जो तू कहे हम करने को तैयार हैं"। यह बात सुनकर सतबोध मंत्री प्रणाम करके विनय पूर्वक बोला "हे नाथ! जो ऐसाही है तो अपने को शीघ्र उस कर्म परिणाम राजा के पास चलना चाहिये। क्योंकि अग्नि से जले हुए के लिये अग्नि ही अच्छी औषधि है उसको शत्रु समझ करके उसके पास नहीं जाना ये उचित नहीं है क्योंकि सर्वस्व जला देनेवाली अग्नि की भी लोग उपासना करते हैं और अपन तो उसके शुभ पक्ष का हमेशा पोषण करते रहते हैं. यद्यपि अपन जानते हैं कि वह अपना सर्व नाश करने वाला है तथापि वह अपना सत्कार जरूर करेगा, क्योंकि वह दुष्ट मोहादिक के सदृश दुष्ट नहीं है"। यह बात सुनकर चारित्र धर्मराजा अपने सतबोध मंत्री को आगे करके थोड़ासा अपना परिवार लेकर कर्म परिणाम राजा के पास गया और कहनेलगा "हे महाराज! आपने एकही पक्ष में रहकर

ऐसी बात कभी नहीं की क्योंकि आप समदृष्टि वाले हो इसलिये अब हमारी उपेक्षा न करते हुए आप अपनी असली स्थिती का परिपालन करो"। यह बात सुनकर वह राजा बहुत काल पर्यन्त चुपचाप बैठारहा तत्पश्चात् बहुत विचार करके उसी नगरी में से एक सहायक लाकर और उसे सत्बोध मन्त्री को बताकर चुपकेसे कान मे कहा. सांप्रत मे तो यद्यपि यह मेरी आज्ञा से इसका अनुगामी होगा, क्योंकि ऐसा नहीं करने से मोहराजा के कुटम्ब का तुरन्त नाश होजावेगा, तदपि धीरे २ आपको प्रगट रीति से सहाय करेगा। यह सुनकर के चारित्र धर्म राजा अपने मन्त्री सहित स्वस्थान को गया और वहां जाकर अपने मंत्री से कहनेलगा, "हे महानुभाव! यह उसने क्या किया मोहराजा को तो उसने बहुतसे सहायक देदिये और अपने को केवल एकही दिया और सो भी किसीसमय में दर्शन देगा" यह बात सुनकर जरा हँस कर बोला– हे प्रभो! क्या जगत् में आपने ऐसा नहीं सुना? कि गायों का नाश करने पर गोबर की प्राप्ति की भी तारीफ होती है। और वह मोह उसका प्रेमपात्र भाई है और

अपन तो मोह के हमेशा वैरो हैं इतनाही नहीं वरन् अपनतो हमेशा उसका नाश करने का प्रयत्न किया करते हैं और कर्मराजा की बड़ी बहिन लोकस्थिति का प्रेम मोहराजा से अपने ऊपर बहुतही कम मीठी दृष्टि है परन्तु मै अकेला हूँ और दुश्मन बहुत हैं उनसे कुच्छ भी डरनेका कारण नहीं क्योंकि सूर्य्य अकेला होते हुए भी गाढ़ अंधकार का नाश करता है, ऐसा विचार करके कि बहुत समय पश्चात् अपने सहायक का अपने को दर्शन होगा, दुःख करना उचित नहीं क्योंकि क्षुधातुर की पीड़ा से उदम्बर जल्दी पकता नहीं है। इसलिये हे देव ! आप धैर्य्य-धारण करो क्योंकि धीरे २ अशुभ का नाश होकर सब ठीक होजाएगा ।

इस बातको अत्यन्त सावधान हो सुनताहुआ चन्द्र-मौलिक राजा हर्षपूर्वक. मनमें इस प्रकार विचार करने लगाः-अहो ! सतबोध मन्त्री की भी श्रेष्ठता कैसी अनुपम है। वह यथा नाम तथा गुणा करके शोभित है और ऐसा बोलना भी किसीको आए। इन महात्माने ऐसी आश्चर्ययुक्त

ऐसी बात कभी नहीं की क्योंकि आप समदृष्टि वाले हो इसलिये अब हमारी उपेक्षा न करते हुए आप अपनी असली स्थिती का परिपालन करो" । यह बात सुनकर वह राजा बहुत काल पर्यन्त चुपचाप बैठारहा तत्पश्चात् बहुत विचार करके उसी नगरी में से एक सहायक लाकर और उसे सत्बोध मन्त्री को बताकर चुपकेसे कान में कहा. साम्प्रत में तो यद्यपि यह मेरी आज्ञा से इसका अनुगामी होगा, क्योंकि ऐसा नहीं करने से मोहराजा के कुटम्ब का तुरन्त नाश होजावेगा, तदपि धीरे २ आपको प्रगट रीति से सहाय करेगा। यह सुनकर के चारित्र धर्म राजा अपने मन्त्री सहित स्वस्थान को गया और वहां जाकर अपने मंत्री से कहनेलगा. "हे महानुभाव! यह उसने क्या किया मोहराजा को तो उसने बहुतसे सहायक देदिये और अपने को केवल एकही दिया और सो भी किसीसमय में दर्शन देगा" यह बात सुन कर जा हँस कर बोला– हे प्रभो ! क्या जगत् में आपने ऐसा नहीं सुना ? कि गायों का नाश करने पर गोबर की प्राप्ति की भी तारीफ होती है। और वह मोह उसका प्रेमपात्र भाई है औ

अपन तो मोह के हमेशा वैरी है इतनाही नहीं वरन् अपनतो हमेशा उसका नाश करने का प्रयत्न किया करते है और कर्मराजा की वडी वदिन लोकस्थिति का प्रेम मोहराजा से अपने ऊपर वहुतही कम मीठी दृष्टि है परन्तु मै अकेला हूँ और दुश्मन वहुत हैं उनसे कुच्छ भी डरनेका कारण नहीं क्योंकि सूर्य अकेला होते हुए भी गाढ़ अंधकार का नाश करता है, ऐसा विचार करके कि वहुत समय पश्चात् अपने सहायक का अपने को दर्शन होगा; दुःख करना उचित नहीं क्योंकि क्षुधातुर की पीड़ा से उदम्बर जल्दी पकता नहीं है। इसलिये हे देव ! आप धैर्य्य धारण करो क्योंकि धीरे२ अशुभ का नाश होकर सव ठीक होजाएगा ।

इस वातको अत्यन्त सावधान हो सुनताहुआ चन्द्र-मौलिक राजा हर्षपूर्वक, मनमें इस प्रकार विचार करने लगाः-अहो ! सतवोध मन्त्री की भी श्रेष्ठता कैसी अनुपम है। वह यथा नाम तथा गुणा करके शोभित है और ऐसा वोलना भी किसीको आए। इन महात्माने ऐसी आश्चर्ययुक्त

बात कहकर मेरे ऊपर वडा उपकार किया है । ऐसा विचारकर आँखे वन्द करके, क्षणवार परमानन्द का अनुभव कर, राजा कहने लगा:- " हे भगवन् ! चारित्र धर्म के सहायता देनेवाले जीवका फिर क्या हुआ यह वात सुनने की मुझे वहुत अभिलापा है। इसलिये कृपाकर सर्व वृतान्त सुनाओ।

इस प्रकार शुभाग्रह से ज्ञानी बोले:- " हे महाराज सावधान होकर सुनो कर्मपरिणाम राजा ने उन जीवों को असंव्यवहार नगरमेंसे लेकर व्यवहार निगोद में रखे और स्वयं गुप्त रूप धारण कर उनके पास रहा यह व्यतिकर मोहादिक ने जव जाना तो उन्होंने विचार किया:- "अहो ! ये अपना नायक नारदजी के समान कलाप्रिय लगता है। घंटा के लटकन सदृश, डमरु के मणि सदृश, कमल की नली के समान और पातंग के मृदंग सरीखा हमेशा दोनों पक्ष में आता जाता रहता है और इसको वार २ कहते हुए भी वह कुछ भी ध्यान नहीं देता। भरे हुए घड़े के पासही सव आया करते हैं

इसने यह कहावत सत्य करके बताई है, कहा है। कि—

'स्वभावो नोपदेशेन, शक्यते कर्त्तुमन्यथा !
. सुतप्ताव्यपि तोयानि, पुनर्गच्छति शीतताम्' ॥

उपदेश करते हुए भी स्वभाव फिरनहीं सकता है क्योंकि पानी को बहुत गरम कियाजाय तो भी पीछा ठंडा होजाता है। इसलिये अब अपने भुजबल से ही समयानुसार उपाय करना ठीक है"। इस प्रकार विचार करके क्रोधित हुए मोहादिक, चारित्र धर्म की सेना के सहायता करने वाले, उस ससारी जीव के पास आये और उस व्यवहार निगोद में विचित्र प्रकार के अनेक प्रकारके दुःखों का अनुभव करते हुए ऐसे उस ससारी जीवको उन्होंनें अत्यन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल तक वहीं पकड़ रक्खा। अन्यदा कभी मोहादिक जब कुछ आगे पीछे हुए, तब कर्म परिणाम ने उस नीगोद जीवको पृथ्वीकायमें लाकर रखा। उससे मोहादिक ने वहां-सुनकर, लाखों प्रकार के दुःख दिखाते हुए

बात कहकर मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है । ऐसा विचारकर आँखे बन्द करके, क्षणवार परमानन्द का अनुभव कर, राजा कहने लगाः- " हे भगवन् ! चारित्र धर्म के सहायता देनेवाले जीवका फिर क्या हुआ यह बात सुनने की मुझे बहुत अभिलाषा है। इसलिये कृपाकर सर्व वृतान्त सुनाओ ।

इस प्रकार शुभाग्रह से ज्ञानी बोलेः- " हे महाराज सावधान होकर सुनो कर्मपरिणाम राजा ने उन जीवों को असंव्यवहार नगरमेंसे लेकर व्यवहार निगोद में रखे और स्वयं गुप्त रूप धारण कर उनके पास रहा यह व्यतिकर मोहादिक ने जब जाना तो उन्होंने विचार किया.- "अहो ! ये अपना नायक नारदजी के समान कलाप्रिय लगता है । घटा के लटकन सदृश, डमरु के मणि सदृश, कमल की नली के समान और पातंग के मृदंग सरीखा हमेशा दोनों पक्ष में आता जाता रहता है और इसको बार २ कहते हुए भी वह कुछ भी ध्यान नहीं देना । भरे हुए घड़े के पासही सब जाया करते हैं

इसने यह कहावत सत्य करके बताई है. कहा है। कि—

'स्वभावो नोपदेशेन, शक्यते कर्त्तुमन्यथा ।
. सुतप्ताव्यपि तोयानि. पुनर्गच्छति शीतताम्' ॥

उपदेश करते हुए भी स्वभाव फिरनहीं सकता है क्योंकि पानी को बहुत गरम कियाजाय तो भी पीछा ठंडा होजाता है । इसलिये अब अपने भुजबल से ही समयानुसार उपाय करना ठीक है" । इस प्रकार विचार करके क्रोधित हुए मोहादिक. चारित्र धर्म की सेना के सहायता करने वाले. उस ससारी जीव के पास आये और उस व्यवहार निगोद में विचित्र प्रकार के अनेक प्रकारके दुःखों का अनुभव करत हुए ऐसे उस ससारी जीवको उन्होनें अत्यन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल तक वहीं पकड़ रक्खा । अन्यदा कभी मोहादिक जब कुछ आगे पीछे हुए. तब कर्म परिणाम ने उस नीगोद जीवको पृथ्वीकायमें लाकर रखा । उससे मोहादिक ने वहां-सुनकर. लाखों प्रकार के दु'ख दिया —

असंख्य उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल पर्यन्त उसकी कदर्थना की। वहां कुछ अंतर पाकर कर्मपरिणाम उसको अपकाय में ले आया, वहांसे तेजस्कायमें औरफिर वहांसे वायुकाय में उसको लेगया। वहापर प्रत्येक कायमें क्रोधित होकर सामने पड़ेहुए उन मोहादिक ने उस-को नाना प्रकार के दुःख दिखाकर असंख्य उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालतक उसकी कदर्थना की पश्चात् उसको सत्तर कोटि सागरोपम तक वनस्पतिकाय में अ-टका रक्खा और बीच २ में अत्यन्त क्रोधित हो उन दुष्टोने विचारे संसारी जीवकी बहुत कदर्थना की, पराङ मुख होनेसे मोहादिक ने उसको व्यवहारी निगोद में और पृथ्वी निगोदमें बार २ पीछा लेजाकर एकेंद्रिय जन में बार २ अटकाकर असंख्य पुद्गल परावर्त्त तक, उसी प्रकार कदर्थना की। समय पाकर कर्मपरिणाम उसको विकलेन्द्रिय में लेगया यह खबर पड़ते ही मोहादि दुष्टों ने उसके पीछे आकर उसको बांधकर असंख्य वर्षों तक उसकी वहां ही स्वलना की। वहांसे अत्यन्त क्रोधित कर मोहादिक ने फिर उसको पकड़कर उसी एकेन्द्रिय

मे डाला और वहां उसको अटकाकर पूर्ववत् असख्य पुद्गल परावर्त्त तक बांध रखा । फिर किसी समय वह विकलेन्द्रिय में आया, इतनेमे उसको बांध कर वहांही असख्य काल तक उन्होंने उसकी कदर्थना की। इस प्रकार विकलेन्द्रिय में आवागमन करते हुए अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उन्होंने उसकी कदर्थना की । पश्चात् किसी समय कर्मपरिणाम महाकष्ट से उसको सम्मूर्च्छिम् पञ्चेन्द्रिय में लेगया । इतनेही में उन दुष्टोंने दौड़हुए वहां जाकर उसको आठ भव में पूर्व कोटि पृथकत्व तक अटका रखा और 'आगेपर चारित्र धर्म का सैन्य इसका सहायक होगा' इस प्रकार भयभीत होकर उन्होंने फिरकर पूर्वोक्त एकेन्द्रिय में डाला, और वहां से पहिलेजैसा विकलेन्द्रिय में और वहां से सम्मूर्च्छिम् पञ्चेन्द्रिय में डाला । वहां आवागमन करते हुए उसको अनन्त पुद्गल परावर्त्त पर्यन्त अटका रखा । पश्चात् एक समय कर्म राजा बड़ी मुश्किल से उसको गर्भज पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चमें लेगया । वहां भी वे दुष्ट तुरन्त पहुंचगये और आठ भव में पूर्व कोटि पृथकत्व काल तक उसको वहां

असख्य उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल पर्यन्त उसकी कदर्थना की। वहां कुछ अतर पाकर कर्मपरिणाम उसको अपकाय में ले आया, वहांसे तेजस्कायमें औरफिर वहांसे वायुकाय में उसको लेगया। वहांपर प्रत्येक कायमें क्रोधित होकर सामने पड़ेहुए उन मोहादिक ने उसको नाना प्रकार के दुःख दिखाकर असंख्य उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालतक उसकी कदर्थना की पश्चात उसको सत्तर कोटि सागरोपम तक वनस्पतिकाय में अटका रखा और बीच २ में अत्यन्त क्रोधित हो उन दुष्टाने बिचारे ससारी जीवकी बहुत कदर्थना की, पराङ मुख होनेसे मोहादिक ने उसको व्यवहारी निगोद में और पृथ्वी निगोद में बार २ पोछा लेजाकर एकेंद्रिय जन में बार २ अटकाकर. असंख्य पुद्गल परावर्त्त तक, उसी प्रकार कदर्थना की। समय पाकर कर्मपरिणाम उसको विकलेन्द्रिय में लेगया यह खबर पड़ते ही मोहादि दुष्टों ने उसके पीछे आकर उसको बांधकर असंख्य वर्षों तक उसकी वहांही स्वलना की। वहांसे अत्यन्त क्रोधित होकर मोहादिक ने फिर उसको पकड़कर उसी एकेन्द्रिय

में डाला और वहां उसको अटकाकर पूर्ववत् असख्य पुद्गल परावर्त्त तक बांध रक्खा। फिर किसी समय वह विकलेन्द्रिय में आया, इतनेमें उसको बांध कर वहांही असख्य काल तक उन्होंने उसकी कदर्थना की। इस प्रकार विकलेन्द्रिय में आवागमन करते हुए अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उन्होंने उसकी कदर्थना की। पश्चात् किसी समय कर्मपरिणाम महाकष्ट से उसको सम्मूच्छिम् पञ्चेन्द्रिय में लेगया। इतनेही में उन दुष्टोंने दौड़ेहुए वहा जाकर उसको आठ भव में पूर्व कोटि पृथकत्व तक अटका रखा और 'आगेपर चारित्र धर्म का सैन्य इसका सहायक होगा' इस प्रकार भयभीत होकर उन्होंने फिरकर पूर्वोक्त एकेन्द्रिय में डाला, और वहां से पहिलेजैसा विकलेन्द्रिय मे और वहा से सम्मूच्छिम् पञ्चेन्द्रिय में डाला। वहां आवागमन करते हुए उसको अनन्त पुद्-गल परावर्त्त पर्यन्त अटका रखा। पश्चात् एक समय कर्म राजा बडी मुश्किल से उसको गर्भज पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चमें लेगया। वहां भी वे दुष्ट तुरन्त पहुचगये और आठ भव में पूर्व कोटि पृथकत्व काल तक उसको वहां

पकड़ रखा उसके बाद बहुत क्रोध करके एकेन्द्रिय से तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त लेगया और वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त काल तक अटका रखा ।

एकसमय पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चमें मत्स्यादि भव में आया हुआ उसको देखकर मोहादिक ने विचार किया कि— "अहो यह कर्मपरिणाम इसको आगे २ लिये बिन रहता नहीं है, और किसी समय अपना दुश्मन होजावेगा' इससे ज्यादे क्रोधित हो उन्होंनें उसको महापाप में डाला हमेशा जीव हिंसा कराकर, सिर्फ मांस भक्षण में उसकं प्रेरित किया और वहां में उसको महानरक में डाल वहां अनेक दुःखों का अनुभव करने से असंख्य का तक उसको बांध रखा, अन्यदा वहां से कर्मराजा उसकं पक्षी आदि की योनियों में लेगया, इससे अति क्रोधित मोहादिकों ने फिर पूर्ववत् एकेन्द्रिय से नरकावास त लेजाकर उसको वहांही आवागमन कराकर अन पुद्गल परावर्त्त पर्यन्त उसको अटका रखा । फिर ए समय वहांसे कर्मभूप उसको बडे कष्टसे समूहि

मनुष्यों में लेगया। इतने में वहां सत्वर आकर मोहादिकों ने आठ एकेन्द्रियो से सम्मूर्च्छिम मनुष्य तक आवागमन कराकर, अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उसको बांध रखा। इसके बाद बडी मिहनत से कर्म-परिणाम राजा उसको वहां से अनार्य देश के गर्भज मनुष्यों में लेगया। इससे मोहराजा विस्मित होगया और उसके सब सैनिक भयभीत हुए 'अहो ! अपन मरगये, क्योंकि दुश्मन अब बहुत नजदीक आगया है'। इस प्रकार उत्साह रहित होकर वे निराश होगये. इतने में रसगृद्धि और अकार्यप्रवृत्ति नाम की दो स्त्रियें खडी होकर बोली किः- "अरे यों तुम क्यों डरते हो? क्योंकि यहां रहे हुए इस गरीब को तो हम वशमें करलेंगे, अगर जो आपकी आज्ञा हो तो इसका गला पकडकर तुम्हारी सेवा मे हाजिर करें." इस प्रकार सुनकर मोह-राजा अत्यन्त प्रसन्न होकर बोलाः- "अहो हो ? अपनी सेना में स्त्रियें भी इस प्रकार बलवान है? हे वत्से ! तुम वहां जल्दी जाओ और तुमने कहा वह कार्य्य करो तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होगा और हम सेना सहित आकर तुम्हारी

सहायता करेंगे" मोहराजा के ये वचन सुनकर 'हम बहुत हिम्मत से काम करेंगी' इस प्रकार प्रतिज्ञा कर वे दोनों वहां गई। फिर रसगृद्धि ने उसको शराब, मांस, अपेयभग्न और अभक्ष्यभक्षण में लगाया और अकार्य प्रवृत्तिओं माता और बहिन आदि के साथ कुकर्म में प्रवर्त्ताया। वहां से थोड़े समय में उसको महा नरक में डालदिया और फिर पूर्ववत् मत्स्य, एकेन्द्रिय स्थान में लेजाकर वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त पर्यन्त उसको अटका रक्खा, फिर एक समय कर्मपरिणाम राजा लाग रक्ख कर उसको अनार्य देश की मातंग जाति में लेगये इतने मे वहां रसगृद्धि और अकार्यप्रवृत्ति ने अभक्ष्यभक्षण आदि में प्रवर्त कर नरकादिक में डालकर, फिर लीला मात्रों में उसका एकेन्द्रिय आदि में फिरा कर, अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक बांध रक्खा। फिर वहां से आर्य देश में वैश्यादिकों के कुल में उत्पन्न हुआ वहां भी उन दोनों दुष्टाओं ने उसको पाप कराकर एकेन्द्रियादि में लेजाकर फिरा २ कर अनन्त काल तक बांध रक्खा फिर वह किसी समय विशुद्ध जाति और क्षेत्र के मनुष्य योनी

में डालागया । यह देखकर मोहमहाराजा ने उसके पास दर्शनावरण नाम का खुदका सामत भेजा। उन्होने उसको अधा वनाया और अशुभ नाम कर्म में उसको पापण के सदस बेडोल वनाया। इस तरहसे उसकी सर्वथा शोचनीय दशा कराकर और कष्टप्राप्त मनुष्य भवको वृथा कराकर फिर एकेन्द्रिय में डाला और वहां अनन्त काल तक बांधरखा । कदाचित् फिर कर्मपरिणाम फिरा कर उसको मनुश्य भव में लेगया । इतनेमें दर्शनावरण सामंतने उसको पकड़कर मुकत्व आदि दुःख देकर उसकी कदर्थना की। इसप्रकार उसको लीला मात्र में कणहीन, पङ्गु आदि वीभत्स रूपवाला धनाकर फिर अनन्त वार अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उसको विडम्बनाए डाली ।

एक समय कर्मपरिणाम फिरवडे कष्टसे उसको मनुष्ययोनि मे लेआया । इतने में मोहराजा ने असाता वेदनीय नामका एक दुष्ट चोर भेजा। उसने किसी समय उसको जन्मसे ही महा कुष्टी वनाया । किसीसमय

सहायता करेंगे" मोहराजा के ये वचन सुनकर 'हम बहुत हिम्मत से काम करेंगी' इस प्रकार प्रतिज्ञा कर वे दोनों वहां गई। फिर रसगृद्धि ने उसको शराब, मांस, अपेयभग्न और अभक्ष्यभक्षण में लगाया और अकार्य प्रवृत्तिओं माता और बहिन आदि के साथ कुकर्म में प्रवर्त्ताया। वहां से थोड़े समय में उसको महा नरक में डालदिया और फिर पूर्ववत् मत्स्य, एकेन्द्रिय स्थानों में लेजाकर वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त पर्यन्त उसको अटका रखा, फिर एक समय कर्मपरिणाम राजा ... रक्ख कर उसको अनार्य देश की मातंग जाति में लेगया इतने में वहां रसगृद्धि और अकार्यप्रवृत्ति ने ... आदि में प्रवर्त कर नरकादिक में डालकर, फिर लीला मात्रों में उसको एकेन्द्रिय आदि में फिरा कर, अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक बांध रखा। फिर वहां से आर्य ... में वैश्यादिकों के कुल में उत्पन्न हुआ वहां भी ... दोनों दुष्टाओं ने उसको पाप कराकर एकेन्द्रियादि ... लेजाकर फिरा २ कर अनन्त काल तक बांध रखा वह किसी समय विशुद्ध जाति और क्षेत्र के मनुष्य यो...

में डालागया। यह देखकर मोहमहाराजा ने उसके पास दर्शनावरण नाम का खुदका सामत भेजा। उन्होने उसको अंधा बनाया और अशुभ नाम कर्म में उसको पापण के सदृस बेडोल बनाया। इस तरहसे उसकी सर्वथा शोचनीय दशा कराकर और कष्टमाप्त मनुष्य भवको वृथा कराकर फिर एकेन्द्रिय मे डाला और वहां अनन्त काल तक बांधरखा। कदाचित् फिर कर्मपरिणाम फिरा कर उसको मनुश्य भव में लेगया। इतनेमें दर्शनावरण सामतने उसको पकडकर मुकत्व आदि दुःख देकर उसकी कदर्थना की। इसमकार उसको लीला मात्र में कणहीन, पङ्गु आदि वीभत्स रूपवाला बनाकर फिर अनन्त वार अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उसको विडम्बनाए डाली।

एक समय कर्मपरिणाम फिरबड़े कष्टसे उसको मनुष्ययोनि में लेआया। इतने में मोहराजा ने असाता वेदनीय नामका एक दुष्ट चोर भेजा। उसने किसी समय उसको जन्मसे ही महा कुष्टी बनाया। किसीसमय

वातकी, किसीसमय जलोदरवाला, किसीसमय श्वासवा-
ला, किसीसमय भगन्दरवाला. किसीसमय रक्की गां-
ठोंवाला, किसीसमय पित्तवाला, किसीसमय हरसवाला,
किसीसमय शिरदर्दवाला, किसीसमय कपालरोगी. कि-
सीसमय नेत्ररोगी. किसीसमय कान, कंठ, तालु, जीभ
दांत, ओष्ठ, शाल और मुखरोगी. किसीसमय हृदयशूली
कुक्षिशूली, पृष्ठशूली, आमरोगी बनाया । उसकी
स्थिति हमेशा बढ़ती जातीथी । इतनी तेज पीड़ा
से शरीर दुर्बलहोता, आक्रन्दन करता, दुःख सहता
शोककरता, विलापकरता, परिचित् या अपरिचित्
सुजनोंमे अपनी हीनता निवेदन करता, लाचार
कन्दमूल आदिका अहार करता, बहुत कडवेक्वाथ
पीता, अत्यन्त तेज मेंकडो चूर्णखाता, अनार्य जनं
उपदेश से अथवा अपने विचार से अपने शरीर
शुद्धना के लिये नहीं खानेयोग्य औषधि खाता, न
नेयोग्य वस्तु पीता, नहीं करने योग्य कामकरता,
तंत्र. और बलिदान आदि के प्रयोग में महारंभ
और महापापोंका सञ्चय करता, । ऐसा वह मनुष्य

हारकर प्रत्येक समय एकेन्द्रियादिक में अनन्त पुद्गल परावर्त्त पर्यन्त फिरा।

एक समय फिर किसी तरह से मनुष्य जन्म को प्राप्त हुआ इतने में मोहराजा द्वारा नियत किए हुए महापाप नामक कोतवाल के उपदेश से किसी समय शिकारी, किसी समय धीवर, किसी समय पारधी और किसी समय जिव हिंसक, किसी समय केवल मांसहारी, शराबी बना और भी किसी जगह खात देने से, किसी वख्त घोडा डालने से. किसी समय बन्दिगृह से तथा किसी जगह कर्णादि काटने आदि अनेक प्रकार के पाप एकत्रित करने लगा। किसी समय कूटकार, किस समय जुआरी और धूर्त्त विद्या के प्रयोग से लोगों को ठगनेसे कहीं कोतवाल, गुप्तिवाल और अमात्यादिक के अधमा चरण की सेवना करने से, किसी समय मनोबन्ध तिल और शेलडी पीलने से, किसी समय मांस बेचने से, किसी समय शराब बेचनेसे और किसी समय शस्त्र, लाख, लोह, हल, मूसल, ऊखल, शिलापट्ट और घट्टी आदि

सुकुमारी प्रणाम करके बोली.- "हे देव ! ये आप नहीं जानते ? समग्र संसार को कष्ट देने के लिये स्व तुमने महा आपत्ति रूप इष्ट जन वियोजिका नाम की मेरे को नियुक्त की है। क्या तैसेही तीनों लोकों के सामर्थ्य को हरानेवाले नरेंद्र और देवेन्द्र को अपने वशीभूत रखने वाले, महाघाटी का राजा, अकस्मात् सब जगह उपद्रव करने वाला और तुम्हारी कृपा से सदैव आबाल वृद्ध सारे जगत् के जन्तुओं में प्रसिद्ध, ऐसा यह मरण नाम का नपुंसक है। इसका पराक्रम तुम जानते ही हो मैं अधिक क्या कहूं ? तुम्हारे बन्धु कर्म परिणाम राजा ने इस संसारी जीवको कनकपुर मे रहने वाले अमर सेठ के घर लेजाकर नदा के गर्भ में उत्पन्न किया, उस बात को तो छः महिने हो गये है। मैं तुम्हारे मन का अभिप्राय जानकर उसी क्षण वहां जाकर इस मरण की सहायता की। पहिले उसके पिता को मारा और उसका जन्म होते ही उसकी माता और दूसरे कुटुम्बी जनों को इस मरण महासुभट ने क्षण भर में मार डाले। फिर इन बिचारों का इस तरीके नाश किया की पीछे

से उसके कुल का नाम तक न रहा। वहां से उसको एकेन्द्रियादिक में डाला। वहां फिरता २ वार २ अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक बहता रहा। इस प्रकार यह बड़ा कार्य हम दोनों ने किया। इसलिये यह मिथ्या दर्शन की असत्य वचन चतुराई सुनकर हमको हँसना आया"। इस प्रकार सुनकर मोहराजा खुश होकर खुद सेना के सन्मुख बोलाः- "अहो? सैनिकों यह नपुंसक कितना बड़ा साहसी है"? यह सुनकर मरण बोलाः- "हेस्वामिन्! ऐसा न कहो। क्योंकि यह सब आपका ही प्रभाव है. कहा है किः—

सिद्धयन्ति मंद मतयोपि यदत्र कार्ये,
संभावना गुण मवेहि तमीश्वराणाम्।
भिद्यात्सपंगु रुरुणोपि कथं तमांसि,
सूर्यो रथस्य धुरितं यदि नोऽकरिष्यत् ॥ १ ॥

"इसकाम में जो मदमतिवाले पारंगत होते हैं वे उन के नेताओं का ही प्रभाव समझते हैं। क्योंकि जो अगर सूर्य अरूण को खुदका सारथी न बनाया होता तो वह अकेला इतने घने अन्धकार को किस तरह से नाश

सुकुमारी प्रणाम करके बोली.— "हे देव ! ये आप नहीं जानते ? समग्र ससार को कष्ट देने के लिये स्वयं तुमने महा आपत्ति रूप इष्ट जन वियोजिका नाम की मेरे को नियुक्त की है। क्या तैसेही तीनों लोकों के सामर्थ्य को हरानेवाले नरेंद्र और देवेन्द्र को अपने वशीभूत रखने वाले, महाघाटी का राजा, अकस्मात् सब जगह उपद्रव करने वाला और तुम्हारी कृपा से सदैव आबाल वृद्ध सारे जगत् के जन्तुओं में प्रसिद्ध, ऐसा यह मरण नाम का नपुसक है। इसका पराक्रम तुम जानते ही हो मैं अधिक क्या कहूँ ? तुम्हारे बन्धु कर्म परिणाम राजा ने उस ससारी जीवको कनकपुर मे रहने वाले अमर सेठ के घर लेजाकर नदा के गर्भ में उत्पन्न किया, उस बात को तो छः महिने हो गये है। मैं तुम्हारे मन का अभिप्राय जानकर उसी क्षण वहां जाकर इस मरण की सहायता की। पहिले उसके पिता को मारा और उसका जन्म होते ही उसकी माता और दूसरे कुटुम्बी जनों को इस मरण महासुभट ने क्षण भर में मार डाले। फिर उन बिचारों का इस तरीके नाश किया की पीछे

एकेन्द्रियादि में पीछा गया और वहां अनन्त काल तक फिरा। फिर कर्मपरिणाम के कष्ट से उसको पहिलेगर्भ-वाली स्त्रीके गर्भमें लाया। वहां वह योनियन्त्र से पीड़ा रहित हो वडी वेदना से बाहर आया। वहां जन्म लेतेही मरणने माता सहित उसका नाश किया और फिर पूर्ववत् एकेन्द्रियादिक में फिराकर, अनन्त काल तक बांधरक्खा। इसप्रकार किसीसमय एकवर्ष का होकर, किसी समय दोवर्ष, किसीसमय तीनवर्ष का होते हुए जवानी में पहुंचने के पहिलेही, बाल्यावस्था में ही, धर्माक्षर की प्राप्ति के विना, सर्वांपत्ति रूप परिवार सहित, मरणने उसका अनेक समय संहार करके बार २ उसको एकेन्द्रियादिक में डाला और अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक फिराया।

इस मनुष्यक्षेत्र में श्रीनिलय नाम का नगर है। वहां धनतिलक नामका सेठ की धनवती नामकी स्त्रीके गर्भ में एकसमय कर्मपरिणाम राजा इस संसारी जीवको लाया। यह खबर मिलतेही मोहराजा ने भयभीत होकर

कर सकता" ? एक डाली से दूसरी डालीपर कूदने जितनी शक्तीवाले बन्दर को समुद्र तैरजाने की जो शक्ती प्रगटी वह सिर्फ रामचन्द्रजी का ही प्रभाव था।

इस प्रकार मोहराजा सुनकर बोलाः- "हे वत्स अबसे सब आपत्ति में सहायता करने के लिये तुझ को ही नियत करता हूँ। इसलिये तुझे अब सब तरह से खबर रखना पडेगी, मनुष्यगति में आये हुए दुष्ट को किसी भी जगह ठहरने नहींदेना चाहिए इस तरह से जल्दी उसका मूल से ही निक्रदन कर डालना चाहिए कि जिसमें वह धर्म का एक अक्षर भी न जानने पावे और उसको उल्टे मुंह निकाल डालना"। मोहराजा के ऐसे वचन सुनकर "हे स्वामिन तुम्हारा आदेश यथार्थ है। यों कह कर मरणादिक सब खड़े हो गये। फिर कुछ समय एके-न्द्रियादिक में रखे बाद कर्म परिणाम ने उसको लेकर किसी कुटल्या स्त्री के गर्भ में मनुष्यगति में डाला। वहां तेज औषधियों के पान करने से बडे कष्ट से मरणगति को प्राप्त हो गर्भ में ही गल गया। फिर वहां से पूर्ववत् वह

एकेन्द्रियादि में पीछा गया और वहां अनन्त काल तक फिरा। फिर कर्मपरिणाम बड़ेकष्ट से उसको पहिलेगर्भवाली स्त्रीके गर्भमें लाया। वहां वह योनियन्त्र से पीड़ा रहित हो बड़ी वेदना से बाहर आया। वहां जन्म लेतेही मरणने माता सहित उसका नाश किया और फिर पूर्ववत् एकेन्द्रियादिक में फिराकर, अनन्त काल तक बांधरक्खा। इसप्रकार किसीसमय एकवर्ष का होकर, किसी समय दोवर्ष, किसीसमय तीनवर्ष का होते हुए जवानी में पहुंचने के पहिलेही, बाल्यावस्था में ही, धर्माक्षर की प्राप्ति के विना, सर्वापत्ति रूप परिवार सहित, मरण ने उसका अनेक समय संहार करके बार २ उसको एकेन्द्रियादिक में डाला और अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक फिराया।

इस मनुष्यक्षेत्र में श्रीनिलय नाम का नगर है। वहां धनतिलक नामका सेठ की धनवती नामकी स्त्रीके गर्भ में एकसमय कर्मपरिणाम राजा उस संसारी जीवको लाया। यह खबर मिलतेही मोहराजा ने भयभीत होकर

"हां, वह मेरे सुनने में आई" इतने में मिथ्यादर्शन ने कहा कि:- "हे कमलवदने। यह बहुत कठिन काम है। क्योंकि कर्मपरिणाम दूसरे पक्षमें मिलगया है तथा उस सेठ के कुल में हमारी सत्ता बराबर अभी तक जमी नहीं। हे प्रिये ! ज्यादे क्या कहूं। हमारी सत्तामें के कुल को फसाने में दूसरे पक्षवाला निपुण है। और उसमें सबों से तेज सम्यग्दर्शन तो अपना कट्टर शत्रु है। उसके. इन्द्र से सेवा कराने लायक, चक्रधर के भी प्रार्थना योग्य, देवता और मुनियों के मनमें बसी हुई, राजाओं के मनको वशमें करने वाली, महाविद्वानों की अभिलाषिणी, ध्यानियों का ध्येय और परम सौभाग्यरूप अमृत की नदीसमान, समस्तधर्मबुद्धि नामकी पुत्री है। प्राणियों को अपने वशमें करने के लिये कर्मपरिणाम राजा पहिले उसी को भेजता है। उसको देखकर कितनेक प्राणीतो हमारे होते हुए भी, हमारे स्वामी के भक्त होते हुए और हमारे चरणों में हमेशा रहते हुए भी तुरन्त उसके आने पर मोहित हो जाते हैं और हमारे कामों को बन्द करदेते हैं और बड़े कुल

पैदा हुई ऐसी और सौभाग्यसमन्विता दूसरी कन्याओ-
को छोडते है । हमारा उपदेश उनपर असर नहीं कर-
ता और अपने कुटुम्ब को सर्वथा छोडकर पागल की
तरह उसके पीछे २ फिरते रहते है और उसके सम्य-
ग्दर्शन पिता को ही मानदेते हैं और हमारे मोह स्वामी
का तिरस्कार करते है, सर्वथा इसके ही वश हो जाते हैं,
उसही पर आसक्त होकर हमको तो एक दुश्मन समझते
है और हमारे सारे पक्षवालोंको जडसे ही उखाड डा-
लने जैसा मथन करते हैं । हे प्रिये ! इसप्रकार हमारे
पक्षको क्षय करती हुई उसको देखकर मेरे मन में हमेशा
चिन्ता बढ़ती रहती है । " इतना सुनकर कुछ अज्ञान व-
श मुस्कराकर कुदृष्टि बोली - ' हे आर्यपुत्र ! शरद ऋतु
के चन्द्रमा की चाँदनी युक्त पूर्णिमा की रात्री में दूरसे
आकड़े के पत्ते को देखकर सिंह के कर्ण की कल्पना
करके जैसे बनिया डरजाता है। वैसेही आपकी यह
स्थिति है । इसमें जो अगर तुमको शङ्का होती हो तो
मै उसका समाधान करतीहूँ कि 'कर्मपरिणाम दूसरे पक्ष
में चलागया है' ऐसा तुम्हारा कहना यद्यपि सत्य है तो-

भी यह वलवान जिस २ पक्षमें मिलता है वहां स्वामीप-
न अपनाही रखते है। इसलिये ये एक समय अपनों
को मिलते है और दूसरी वक्त उनमें जा मिलते है। 'इस
से भय है'। ऐसी जो तुम्हारे मनमें शङ्का आती हो तो
भी वह यथार्थ नहीं क्योंकि बहुत वक्त तो वह अपने
साथही मिलता है। वह अपनो में बहुत निविड है।
और उनके साथ दाक्षिण्य मात्र ही से वर्ताव करता है।
अपना तो वह स्वजाति जैसा है। वैरी के पक्ष से उसका
इतना ज्यादे परिचय नहीं है। इससंसारी जीवको वार २
फिराकर इतनी वखत तुमने उसको तकलीफ पहुँचाई
यह सब कर्मपरिणाम के बीचमें होनेसे हुआ है। इसके
विना तुमसे कभी उसका नाश नहीं हो सकताथा इसमे
दूसरा कोई उसका इष्ट नहीं करसकता, उसने तुमको क-
हा:- "हमारी सत्ता नीचे रहनेवालों को फिरादेने
में दूसरे पक्षवाले बल्वान है" इसवात को सुनने से
मुझको हँसी आती है। क्योंकि वह चतुर अनादि काल-
से एक निगोद में रहने वाले अनन्ता जीवों को अपने
वश में नहीं करसका. केवल उनका अनन्तमा हिस्साही

वप में करपाया. वाकी तो तीनों जगत् के अनन्त जीवों का समूह तुम्हारा ही दासत्व करते हैं। और संसार की रंग भूमि मे वह हमेशा नाटक करता है तो कहिये सच्चा निपुण कोन है ? तुमको निर्भय हो कर रहना चाहिये। और तुमने कहाकि 'उसकी कन्या इन्द्रको भी सेवनीय है' सो यहतो भयङ्कर चोर के दर्शन से भयभीत होकर भ्रमित मनसे घोड़े पर सवार हुआ बहुत कायर पुरुष जिसतरह घोड़ों को भूलजाता है। उसी तरह हे-प्रियतमः ! तुम तुम्हारा खुदका भान भूलगये हो। ऐसा मुझको मालूम होता है क्योंकि अपने उसकेही सदृश अधर्मबुद्धि नामकी कन्या है। और वह उसकी कन्या से अनन्त गुणा सौभाग्यवन्त पुरुषों कोही वल्लभ है। उसके पाँव के पाना से दबाये हुए तीनों लोक प्रायः हमेशा उसकी सेवामेंही हाजिर रहते हैं। उस सम्यग्दर्शन की कन्या तो मेरी पुत्री के भय से डरकर चुपचाप किया करती है। अपनी पुत्रीसे दबाये हुए बहुत बकवादी और दुर्विदग्ध ऐसे कितनेक गिने गिनाए मनुष्यही उसका आश्रय लेते हैं। इसलिये उस विचारी गरीब बालिका

भी यह बलवान् जिस २ पक्षमें मिलता है वहां स्वामीप-
न अपनाही रखते है। इसलिये ये एक समय अपनों
को मिलते है और दूसरी वक्त उनमें जा मिलते है। 'इस
से भय है'। ऐसी जो तुम्हारे मनमें शङ्का आती हो तो-
भी वह यथार्थ नहीं क्योंकि बहुत वक्त तो वह अपने
साथही मिलता है। वह अपनो में बहुत निविड है।
और उनके साथ दाक्षिण्य मात्र ही से वर्ताव करता है।
अपना तो वह स्वजाति जैसा है। वैरी के पक्ष से उसका
इतना ज्यादे परिचय नहीं है। इससंसारी जीवको बार २
फिराकर इतनी वख्त तुमने उसको तकलीफ पहुँचाई
यह सब कर्मपरिणाम के बीचमें होनेसे हुआ है। इसके
विना तुमसे कभी उसका नाश नहीं हो सकताथा इससे
दूसरा कोई उसका इष्ट नहीं करसकता, उसने तुमको क-
हा:- "हमारी सत्ता नीचे रहनेवाल्लों को फिरादेने
में दूसरे पक्षवाले बलवान है" इसबात को सुनने मे
मुझको हँसी आती है। क्योंकि वह चतुर अनादि काल-
से एक निगोद में रहने वाले अनन्ता जीवों को अपने
वश में नहीं करसका. केवल उनका अनन्तमा हिस्साही

वप में करपाया, बाकी तो तीनों जगत् के अनन्त जीवों का समूह तुम्हारा ही दासत्व करते है। और ससार की रंग भूमि में वह हमेशा नाटक करता है तो कहिये सच्चा निपुण कोन है ? तुमको निर्भय हो कर रहना चाहिये। और तुमने कहाकि 'उसकी कन्या इन्द्रको भी सेवनीय है' सो यहतो भयङ्कर चोर के दर्शन से भयभीत होकर भ्रमित मनसे घोड़े पर सवार हुआ वहुत कायर पुरुप जिसतरह घोडों को भूलजाता है। उसी तरह हे-प्रियतमः ! तुम तुम्हारा खुदका भान भूलगये हो। ऐसा मुझको मालूम होता है क्योंकि अपने उसकेही सदृश अधर्मवुद्धि नामकी कन्या है। और वह उसकी कन्या से अनन्त गुणा सौभाग्यवन्त पुरुषों कोही वल्लभ है। उसके पाँव के पानी से दवाये हुऐ तीनों लोक प्रायः हमेशा उसकी सेवामेंही हाजिर रहते हैं। उस सम्यग्दर्शन की कन्या तो मेरी पुत्री के भय से डरकर चुपचाप क्रिया करती है। अपनी पुत्रीसे दवाये हुऐ वहुत वकवादी और दुर्विदग्ध ऐसे कितनेक गिने गिनाए मनुष्यही उसका आश्रय लेते हैं। इसलिये उस विचारी गरीव वालिका

का मेरे सामने क्यों वर्णन करते हो ? ज्यादे क्या क
तुम वहां चलो और जो तुम बहुत डरते होतो मेरे क
ही वहां भेजो कि जिससे उसको तुम्हारी लड़की क
दासी बनाकर और गला पकड़कर यहां तुम्हारे पा
लाकर हाजिर करूं। पहिले कईवक्त उसका अनुभव
करने से उस विचारी को मै अछी तरह से जानती हूं।
हे प्रियतमः ! इस प्रकार खुदकी बड़ाई बताकर बोलना
यह उन स्त्रियों का काम है जो लायक नहीं हों। क्यों
कि स्त्रिया नम्रता से, अल्प भाषण से और लज्जा से ही
शोभती हैं। ऐसी धृष्टता तो उसकी दूषण रूप गिनी
जाती है तथापि विशेश कारण होने से ही मै ऐसे वचन
बोली हूं। इस लिये कृपा कर यह मेरा अपराध क्षमा
कीजिये"। इस प्रकार का भाषण सुनकर मिथ्यादर्श
जरा हँस कर बोला कि:- "हे प्रिये ! मोहराजा क
स्त्रीयों में अधिक प्रीति होने के कारण उनको ऐसे बो
लने में लज्जा सभव नहीं। हे कांते ! तूने ठीक ही कहा
है। इसलिये तूही वहां जा और वहां अपने राजा क
...र जीनहो वैसा कर" वहबोली:- "हे प्राणेश

ऐसा मत करो, तुम्हारे उदय में ही हमारी प्रसन्नता है तुम्हारे विना हम किस गिनती मे हैं। इसलिये तुमको हमारे साथ वहांही आना पड़ेगा" यह सुनकर मिथ्या-दर्शन साथ जाना स्वीकार कर बोलाः- "हे भद्रे हमे अलग रहकर कभी भी कोई काम नहीं करना चाहिये, यही ठीक है। इसलिये में वहां आकर तटस्थ होकर देखा करूगा" इसप्रकार कहकर मिथ्यादर्शन अपनी पुत्री तथा स्त्रीके साथ वहांगया और उसके पीछे मोहराजाने व्यसन, धनपिपासा और लभान्तराय आदि सब आप-त्तियों को भी भेजा।

अब श्रीनिलय नगरमें धनतिलक की स्त्रीने पुत्रको जन्म दिया, तबश्रेष्ठी ने वर्धापन महोत्सव करके वैश्रमण नाम रखा धीरे २ पुत्र बड़ाहुआ और सम्पूर्ण कला ओंको सीखी, जोहींवह जवान हुआ त्योंही धनपिपासा-ने अपना अवसर जान. हर्ष पूर्वक उसका आलिङ्गन किया। इससे वह हर्षावेश मे आया फिर धनपिपासा के साथ खेलने को रसिक, ऐसे उसको उसने कहा, हे भद्र!

जोतुम मेरी कृपा सम्पादन करना चाहते हो तो द्रव्यप्राप्त करने के अनेक उपाय करो। तुम रत्न, सुवर्ण और वस्त्रादिक वेचने की दुकान लगाओ। सुपारी, गंध, धान्य, कपास, कुली, लोहा और लाख आदि का व्यापार करो और वणिक पुत्रों को अन्यदेशों में भेजो। वहुत प्रकार का करियाणा को भरके गाडियें दूर २ भेजो। वेलों तथा ऊँटो को खरीदकर दूसरे मुल्कों को भेजो, गधों की तलाश करो, कीमती करियाणों को जहाजों में भरकर सामुद्रिकमार्ग मे भेजो। तोते, मैना आदि पक्षीओं को खरीदो, वातुनियों का अभ्यास करो, खानें खुदवाओ। रसादीक संग्रह करने का यत्न करो और वनावटी करियाणा वनाने की कोशीस करो." इस प्रकार उसके एक साथ लाखों उपदेश सुन कर ऊँचा स्वांस लेकर वः वोला:-

"हे नन्वंगी! तूंने मेरे को अच्छा उपदेश किया। क्योंकि इतना परिश्रम करें विना घरमें रत्नों के ढेर इकट्ठे नहीं होसकते तथा सोने के ढेर लगते नहीं"। इस प्रकार

कह कर प्रथम बाजार में जाकर उसने सोनेका लेन देन शुरू किया। इतने में लाभान्तराय ने अपना दाव जान कर उस वैश्रमण को जा पकडा। उसके प्रभाव से उसको एक फूटी कौड़ी का भी लाभ होना कठिन होगया। इस से वह विचारने लगा:- "अहो! आजतो बाजार का भाड़ा भी पैदा नहीं हुआ"। भाडे की प्राप्ति होतेही उसने विचार किया कि:- "अहो! आजतो नोकरों के वेतन जितनी भी प्राप्ति नहीं हुई" उसकी प्राप्ति होतेही उसने याद किया कि:- "घरके खर्च इतना भी लाभ नहीं हुआ उसका लाभ होतेही. भोगोपभोगादि की आशङ्का करता हुआ और खर्च कियेहुए धन से क्या २ प्राप्ति होती इसकी ज्यादे २ अभिलाषा होने से उसका द्रव्य मूल में से कुछ कम होने लगा। धन की पिपासा से आर्त्तध्यान करता हुआ वह इधर उधर झांकने लगा। इतने में एक विक्षिप्त उद्भ्रांतनेत्र वाला कोई पुरुष जल्दीसे उसके पास आया और उसको एकान्त में लेजाकर मस्तक और कटांदिके के गहनों की बड़ी गठरी बतलाई. इससे उसने शरीर के इशारे से ये जानते हुए कि यह चौरी का माल

है । इसको कौन जानता है सब लेलूं, आगे जो होना होगा सो होगा, इस प्रकार धनपिपासा से अपने मनः विचार करते हुए थोड़े मोल मे सब माल लेलिया. उसके जातेही तुरन्त पीछे से राज पुरुष आये उन्होंने धन माल सहित उस वणिक पुत्र को बांध कर आगे किया और लकड़ी से मारते हुए, कृपाण वगैरह शस्त्रों से निर्दयतामे कूटते हुए और रास्ते में सब लोगों में निन्दा करते हुए उसको राजदरबार में लेगये। वहां राजा मे इस प्रकार निवेदन किया:– "हे प्रभो! आपके जेवर इसने लिये है" इसपर से राजाने उसको मारने की आज्ञादी। फिर उसके पिताने महाजन एकत्रित करके राजासे प्रार्थना की। महाजनों के अनुरोध से राजाने उसको छोड़दिया। फिर धनपिपासा से प्रेरित होकर नगर में वह बहुत पापयुक्त व्यौपार करने लगा। परन्तु अंतराय ने उसके बड़े लाभको सब जगह अटका दिया। उससे धीरे २ बड़ी आपत्तीयों मे पी.। पानेलगा।

एक समय धन पिपासाने उससे देशान्तर जाने की

ार्थना की इस लिये मा-बाप को छोड़ कर, बहुत किरि
ाणोसे गाड़ियों को भरकर देशान्तर चला. मार्ग मे एक
थान पर विश्राम किया । वहां सब साथियो को तृषा
लगी, खोज करने से किसी भी जयह पानी नहीं मिला
मलिये जलकी आशा छोड़कर सब आँखें बन्दकरके
र्छित होकर पड़ेरहे. इतने में वहा चोरों का झुड
आया और उनको मूर्च्छित देखकर उनका सारा धन
ाल हरणकर लेगया । इतने में वहा कोई मुसाफिर
आया. देखकर उसको दया आई. उसने कहींसे थोड़ा
ा पानी लाकर उनको पिलाया- इससे सब सचेत हुए
फिर उनको उसने जलाशय का रास्ता बताया- इससे
सब वहां जाकर मज्जनादि करके जल पीकर शान्त हुए
ौर आगे चलनेलगे. परन्तु शखल वगैरह के अभाव
सब अपने ठिकाने चले गये. वैश्रमण एक गांव के
ास आपहुँचा. वह क्षुधातुर होकर एक पेड़ की छांयां मे
र्छित होकर पड़रहा । वहां किसी दयालु पुरुष ने
सको देखा और उसको कुछ चांवल वगैरह खिलाकर
ान्त किया । फिर आगे जाने से वह बहुत थका. पैदल

है। इसको कोन जानता है सब लेलू, आगे जो होना होगा सो होगा, इस प्रकार धनपिपासा से अपने मनमें विचार करते हुए थोड़े मोलमे सब माल लेलिया. उसके जातेही तुरन्त पीछे से राज पुरुष आये उन्होंने सब माल सहित उस वणिक पुत्र को बांध कर आगे किया और लकड़ी से मारते हुए, कृपाण वगेरह शस्त्रों से निर्दयतामे कूटते हुए और रास्ते में सब लोगों से निन्दा करते हुए उसको राजदरबार में लेगये। वहां राजा से इस प्रकार निवेदन कियाः– "हे प्रभो! आपके जेवर इसने लिये है" इसपर से राजाने उसको मारने की आज्ञादी। फिर उसके पिताने महाजन एकत्रित करके राजासे प्रार्थना की। महाजनों के अनुरोध से राजाने उसको छोड़दिया। फिर धनपिपासा से प्रेरित होकर नगर में वह बहुत पापयुक्त व्योपार करने लगा। परन्तु अंतराय ने उसके बड़े लाभको सब जगह अटका दिया। उससे धीरे २ बड़ी आपत्तीयों मे पी. । पानेलगा।

एक समय धन पिपासाने उससे देशान्तर जाने की

ार्थना की इस लिये मा-बाप को छोड़ कर, बहुत किरि
ाणोंसे गाड़ियों को भरकर देशान्तर चला. मार्ग में एक
स्थान पर विश्राम किया। वहां सब साथियों को तृषा
लगी, खोज करने से किसी भी जयह पानी नहीं मिला
इसलिये जलकी आशा छोड़कर सब आँखें बन्दकरके
मूर्च्छित होकर पड़ेरहे. इतने में वहा चोरों का झुंड
आया और उनको मूर्च्छित देखकर उनका सारा धन
माल हरणकर लेगया। इतने में वहा कोई मुसाफिर
आया. देखकर उसको दया आई, उसने कहींसे थोड़ा
सा पानी लाकर उनको पिलाया- इससे सब सचेत हुए
फिर उनको उसने जलाशय का रास्ता बताया- इससे
सब वहां जाकर मज्जनादि करके जल पीकर शान्त हुए
और आगे चलनेलगे. परन्तु शंबल वगेरह के अभाव
से सब अपने ठिकाने चले गये, वैश्रमण एक गांव के
पास आपहुँचा. वह क्षुधातुर होकर एक पेड़ की छाया में
मूर्च्छित होकर पड़रहा। वहां किसी दयालु पुरुष ने
उसको देखा और उसको कुछ चाँवल वगैरह खिलाकर
शान्त किया। फिर आगे जाने से वह बहुत थका, पैदल

है। इसको कोन जानता है सब लेलूं, आगे जो होना होगा सो होगा, इस प्रकार धनपिपासा से अपने मनमें विचार करते हुए थोड़े मोलमें सब माल लेलिया, उसके जातेही तुरन्त पीछे से राज पुरुष आये उन्होंने धन माल सहित उस वणिक पुत्र को बांध कर आगे किया और लकड़ी से मारते हुए, कृपाण वगेरह शस्त्रों से निर्दयतासे कूटते हुए और रास्ते में सब लोगों में निन्दा करते हुए उसको राजदरबार में लेगये। वहां राजा से इस प्रकार निवेदन किया:- "हे प्रभो! आपके जेवर इसने लिये हैं" इसपर से राजाने उसको मारने की आज्ञादी। फिर उसके पिताने महाजन एकत्रित करके राजासे प्रार्थना की। महाजनों के अनुरोध से राजाने उसको छोड़दिया। फिर धनपिपासा से प्रेरित होकर नगर में वह बहुत पापयुक्त व्योपार करने लगा परन्तु अंतराय ने उसके बड़े लाभको सब जगह अटका दिया। उससे धीरे २ बड़ी आपत्तीयों में पी . । पानेलगा

एक समय धन पिपासाने उससे देशान्तर जाने

चलने से बहुत असमर्थ होगया और कोमलता के कारण पैदल चलने से पॉव फटकर खून की धारा निकलने लगी। इससे उसे वारम्वार मूर्छा आनेलगी। इस मार्ग के श्रम से पृथ्वीपर लोटता, पड़ता, दुखित होता, आक्रन्द करता, शोक और विलाप करनेलगा। धन और कुटुम्ब के वियोग से हृदय में दुःखी होता हुआ दीनता से अति कङ्गाल होकर, दीन चेष्टा करनेलगा। फिर बड़ी मुश्किल से प्रत्येक गांव में भिक्षा के लिये भटकनेलगा परन्तु बड़ा [illegible] और अति क्रूर अन्तराय उसके लाभ को अटकानेलगा।

इस प्रकार पॉव २ पर आनेवाली बड़ी आ[illegible]यों से व्याकुल होताहुआ, बडे कष्ट से समुद्र के किसी किनारे जा पहुँचा। यह विचार करके कि "यह कोई वणिक पुत्र है" एक श्रेष्ठी उसको अपने साथ लेगई। वहां उसकी मदद से कुछ उसको धन की प्राप्ति हुई। इससे फिर धन पिपासा की प्रेरणा से व्यापार शुरू किया इससे उसको बहुत धन मिला। एक समय [illegible] इस प्रकार श्लोक सुनाः—

ईक्षु क्षेत्रं समुद्रश्च, योनिपोषणमेवच ।
प्रसादो भू भुजां चैव, सद्योघ्नति दरिद्रताम् ॥

इक्षु क्षेत्र, समुद्र, योनिपोषण और राजप्रसाद ये दरिद्रता का नाश करनेवाले, है इससे उसको धनपिपासा ने ज्यादे उत्मादित किया, इसलिये किरियाणे के जहाज भर कर सामुद्रिक मार्ग से चला, वहां वीच में जातेही आकाश मे घनमण्डल फैला, बादल और समुद्र से लेकर आकाश तक गुंजने वाली गर्जना होनी लगी, विजलिया चारों तरफ चमकने लगी, और हवा सन्मुख दिशा से वहनेलगी, इससे वहुत ऊंची २ लहरे उठने से उसके जहाज के सैकडों टुकडे होगये । वहां वैश्रमण के हाथ में एक जहाज का पाटिया आजाने से वह जलचर जन्तुओं का और लहरों की चोटों से दुःख का अनुभव करता हुआ, समुद्र की लहरों की श्रेणी से घसीटता हुआ, एक दूर देश में 'जहां उसका नाम नहीं जानाजाय और अपने मित्र तथा रिश्तेदारो के समाचार तक नही मिल सके' जा निकला, वहां कष्ट के भार से दवा हुआ

फोड आदि बीमारियों से कष्ट पानेलगा । उसके प्रभाव में उसको ज्वर होगया, शिरदर्द शुरुहोगया. शूल रूप शल्य से और अन्य रोगों से पीडित होनेलगा। वहां निर्जन देवालय में सोता, वृक्षों के निचे बैठना, मठों में फिरता. धर्मशालाओं में अक्रन्द करता. घर २ फिरता. दीन वचन बोलता, याचक औषधि आदि मांगता और सब जगह लाभांतराय से निराश होता हुआ वह बहुत समय तक दुःखी रहा । आखिर बडी कठिनाई से रोग मुक्त हुआ फिर धन पिपासा से प्रेरित होकर वह क्यों पार कर बहुत वक्त कष्ट सहन करने परभी वह थोड़ासा द्रव्य प्राप्त कर सका। इतने में फिर कहीं राजाओं से दण्डित हुआ, किसी वक्त धूर्तों से ठगाया. किसी समय चोरों से लुटाया. कहीं अग्नि से सताया गया. इस प्रकार कष्ट सहता अनेक देशों की यात्रा करताहुआ वह किसी समय धातु फूकने का काम करता, न खाने योग्य खाता और अनाचार सेवता. किसी जगह खाने खोदता, वहां शिला और उपल आदि से सन्निपात सहता, किसी जगह सर्प और बिच्छु के डंक मारने से कष्ट सहता इस

प्रकार वह बड़े कष्ट सहन करनेलगा।

इस प्रकार हरसमय पडीहुई आपत्तियों से कष्ट सहता, धन, स्वजन, देश और स्त्रीसे अलग होकर अत्यन्त दुःखसे ग्राम, नगरादिकमें भटकता २ एक समय किसी मठ में गया वहां किसी धर्म शास्त्र वांचनेवाले के मुखसे उसने यह श्लोक सुना—

"स्वजन धन भवन यौवन-वनितातन्वाद्यनित्यमिदम खिलम्
ज्ञात्वापत्त्राणसमं, धर्म शरण भजतरे लोकाः" ॥ १ ॥

"स्वजन, धन, घर, यौवन, वनिता, और बन्धु अनित्य है, इसलिये केवल धर्म कोही आपत्ति से रक्षण करने वाला समझ कर, हे भव्यजनो! उसका शरण लो" यह श्लोक सुनकर उसने विचार कियाः- "अहो ! दुःखी प्राणी जहां जिसके पास जाकर अपना दुःख निवेदन करता है वे सब इसी प्रकार कहते है कि "तुमने पूर्व जन्म में धर्माराधन नहीं किया इसलिये धर्म रहित अशरण प्राणीयों को पाँव २ पर कठिन दुःख भुगतने

पड़ते हैं तो सचमुच दुःख से व्याप्त इस संसारमें केवल धर्मही शरण देनेवाला है दूसरा कोई शरण देनेवाला नहीं है' इस प्रकार वह विचार करता है, इतने में मिथ्यादर्शन की कुदृष्टि नाम की स्त्री ने विचारकिया। ' अहो ! आज दीर्घकाल के पश्चात् मेरे को समय मिला है क्योंकि अभी दूसरे पक्षवालों का वैराग्य नाम के मनुष्य के साथ इसकी सङ्गति हुई मालूम होती है इसके पीछेही हमारा रास्ता रोकनेवाली सम्यग्दर्शन की पुत्री किसी तरह आजावेगी तो सारी बाजी बिगड़ जावेगी" । इस प्रकार विचार करके उसने अब धर्मबुद्धि नामकी अपनी पुत्री को उसके पास भेजदी वह वैश्रमण के पास गई उसके प्रभाव से उसको धर्मकर्म करने की मति उत्पन्न हुई । फिर उसने विचार किया कि "जो सारे सज्जन पुरुषों के एक ही अभीप्राय है तो सब अभीष्टार्थ को सिद्ध करने वाला ऐसे धर्म का आराधनही प्रथम क्या न करना चाहिये ? जहांही जिसकी सद्भाव होगा सो काम स्वयमही सिद्ध होगा । इसलिये अपने देवोंके जाकर अपने माता पिता का दर्शन करूं वहां जाने बाद

अवश्यही धर्मकाही आरधन करूंगा" इस प्रकार वह निश्चय करके समुद्र किनारे गया। वहां नौकर होकर किसी जहाज में चडा और सामने के किनारे जापहुंचा फिर बड़ेकष्टसे स्थलमार्ग से अपने देश पहुंचा।

अब वह श्रीनिलयनगरमे आया उस समय उसके मातापिता मरगयेथे बन्धु आदि किसी दूसरी जगह चलेगये थे। घर पुराना होगयाथा, हवेली गिरगई थीं और सब वैभव नष्टहोगए थे। इस प्रकार की स्थिति देखकर वह बहुत दुःखीहुआ, बहुत विलाप किया, अपनी आत्मा को वारंवार निन्दनेलगा। फिर मनमें धर्मबुद्धि लाकर के बड़े कष्टसे आत्मा को समझाकर उसने पिता की उत्तर क्रिया की।

इतने समयमें चारित्र धर्म वगैरह सबोने इकट्ठे होकर सतबोध मंत्री को कर्मपरिणाम के पास भेजा उसने वहां जाकर प्रार्थना की कि "हे महाराज! यह एक संसारी जीव आपका सहायक है, आपने पहिले कबूल किया है परन्तु आपकी इस बात को अब तक

अनन्त पुद्गल परावर्त्त होगये परन्तु तोभी वह हमारे प्रसंग में आताही नहीं सो क्याकारणहै। क्योंकि, बड़े पुरुषों के वचन युगों तक अन्यथा नहीं होते" इस प्रकार सुनकर कर्मराजा ने भृकुटी चड़ाकर मुँहऊपर करके कहाः– "हे वत्स! वह व्यतीकर कैसे बनता है तू जोभी उसको जानता नहीं है तोभी मैं तो तुम्हारे सामने लाकर रखता हूँ; परन्तु मेरे बन्धु लोग, बहुत उत्ताकर उस विचारे को, बार २ पीछा फिरा कर घुमाते हैं तो इस गृह विरोध में मेरा क्या उपाय चले? मुझ अकेले से कुछ भी नहीं हो सकता, भावी स्वभाव लोक स्थिति, उद्यम, काल और नियति आदि की यहां जरूरत है, उनके साथ विचार कर अवसर पाकर तुम्हारा मन इच्छित कार्य्य सब सिद्ध करूंगा मेरा वचन नहीं भूलाहूँ" इस प्रकार सुनकर मतबोध बोला– "अभी बराबर धर्म बुद्धि उसके पास गई है, ऐसा सुनने में आता है तो हमारा वहां जानेका समय क्यों नहीं आया"? इस प्रकार कर्मराजा सुनकर अपने स्वभाव नाम के मंत्री के हाथ पर ताली देकर जोरसे हँसकर बोलाः- "अहो? वह धर्म

बुद्धि जरूर! देखो यह सद्‌बोध क्या कहता है? वह महा पापबुद्धि ही सिर्फ हिंसारूप है सिर्फ वह नाम से ही अपना धर्म बुद्धिपना बताकर नामसे ही सदृशता में घुमनेवाला विचारे सारे जगत् को ठगती है। जिस धर्म्मबुद्धि को तूं सम्यग्दर्शन की पुत्री करके जानता है, वह तो दूसरी ही है। क्योंकि वहतो प्राणियों के लिये अमृतकीदृष्टिके समान है और तुम्हारे अभ्युदय का हेतुहै यहतो उनको कुपथ्य औषधि और महा कालकूट विष की लता के समान है; और तुम्हारा जड़से ही नाश करने वाली है। जगत् में ऐसे पदार्थ हैं जो नाम के विपरीत स्वभाववाले होते हैं। हमेशा नाश करनेवाला विष और जीवन देनेवाली औषधि विशेष इन दोनों का विष ऐसे नाम हैं। धतुरे के पत्ते और नागरवेल के पत्ते इन दोनो का नाम 'पत्ते' सदृशही है, कांसी के, शीशे के, ताँबे के, चाँदी के और सोने वगैरह के बने हुए रुपये का नाम 'रुपया' सरीखाही है दही, दूध, घी, सरसोंका तेल, कुरंज का तेल और अनार आदि के रस की 'रस' ऐसी सञ्ज्ञा समान है, मगर इन पदार्थों का स्वभाव अलग २ है वह हिंसा हमारे भाई के मंत्री की लड़की होने से उसके सम्बन्ध में ऐसा

अनन्त पुद्गल परावर्त्त होगये परन्तु तोभी वह हमारे प्रसंग में आताही नहीं सो क्याकारणहै। क्योंकि बड़े पुरुषों के वचन युगों तक अन्यथा नहीं होते" इस प्रकार सुनकर कर्मराजा ने भृकुटी चढ़ाकर मुंहऊपर करके कहाः- "हे वत्स ! वह व्यतीकर कैसे बनता है तू जोभी उसको जानता नहीं है तोभी मैं तो तुम्हारे सामने लाकर रखता हूं; परन्तु मेरे बन्धु लोग, बहुत उत्काकर उस बिचारे को, बार २ पीछा फिरा कर घुमाते हैं तो इस गृह विरोध में मेरा क्या उपाय चले? मुझ अकेले से कुछ भी नहीं हो सकता, भावी स्वभाव लोक स्थिति, उद्यम, काल और नियति आदि की यहां जरूरत है, उनके साथ विचार कर अवसर पाकर तुम्हारा मन इच्छित कार्य्य सब सिद्ध करूंगा मेरा वचन नहीं भूलाहूं" इस प्रकार सुनकर मतबोध बोला- "अभी बराबर धर्म बुद्धि उसके पास गई है, ऐसा सुनने में आता है तो हमारा वहां जानेका समय क्यों नहीं आया"? इस प्रकार कर्मराजा सुनकर अपने स्वभाव नाम के मंत्री के हाथ पर ताली देकर जोरमें हँसकर बोलाः- "अहो ? वह धर्म

बुद्धि जरूर! देखो यह सद्बोध क्या कहता है? वह महा पापबुद्धि ही सिर्फ हिंसारूप है सिर्फ वह नाम से ही अपना धर्म बुद्धिपना बताकर नामसे ही सदृशता में घुमनेवाला बिचारे सारे जगत् को ठगती है। जिस धर्म्मबुद्धि को तूं सम्यग्दर्शन की पुत्री करके जानता है, वह तो दूसरी ही है। क्योंकि वहतो प्राणियों के लिये अमृतकीवृष्टिके समान है और तुम्हारे अभ्युदय का हेतुहै यहतो उनको कुपथ्य औपधि और महा कालकूट विप की लता के समान है; और तुम्हारा जड़सेही नाश करने वाली है। जगत् में ऐसे पदार्थ है जो नाम के विपरीत स्वभाववाले होते हैं। हमेशा नाश करनेवाला विप और जीवन देनेवाली औपधि विशेप इन दोनो का विप ऐसे नाम हैं। धतुरे के पत्ते और नागरवेल के पत्ते इन दोनो का नाम 'पत्ते' सदृशही है. कांसी के, शीशे के, ताँबे के, चाँदी के और सोने वगेरह के बने हुए रुपये का नाम 'रुपया' सरीखाही है दही, दूध, घी, सर्सोंका तेल, कुरंज का तेल और अनार आदि के रस की 'रस' ऐसी संज्ञा समान है, मगर इन पदार्थों का स्वभाव अलग २ है वह हिंसा हमारे भाई के मंत्री की लड़की होने से उसके सम्बन्ध में ऐसा

अनन्त पुद्गल परावर्त्त होगये परन्तु तोभी वह हमारे प्रसंग में आताही नहीं सो क्याकारणहै । क्योंकि बड़े पुरुषों के वचन युगों तक अन्यथा नहीं होते" इस प्रकार सुनकर कर्मराजा ने भृकुटी चढ़ाकर मुहकुरर करके कहाः- "हे वत्स ! वह व्यतीकर कैसे बनता है तू जोभी उसको जानता नहीं है तोभी मैं तो तुम्हारे सामने लाकर रखता हूं; परन्तु मेरे बन्धु लोग, बहुत उत्कारकर उस विचारे को, बार २ पीछा फिरा कर घुमाते हैं तो इस गृह विरोध में मेरा क्या उपाय चले? मुझ अकेले से कुछ भी नहीं हो सकता, भावी स्वभाव लोक स्थिति, उद्यम, काल और नियति आदि की यहां जरूरत है, उनके साथ विचार कर अवसर पाकर तुम्हारा मन इच्छित कार्य्य सब सिद्ध करूंगा मेरा वचन नहीं भूलाहूं" इस प्रकार सुनकर मनबोध बोला- "अभी बराबर धर्म बुद्धि उसके पास गई है, ऐसा सुनने में आता है तो हमारा वहां जानेका समय क्यों नहीं आया" ? इस प्रकार कर्मराजा सुनकर अपने स्वभाव नाम के मंत्री के हाथ पर ताली देकर जोरसे हँसकर बोलाः- "अहो ? वह धर्म

बुद्धि जरूर! देखो यह सद्बोध क्या कहता है? वह महा पापबुद्धि ही सिर्फ हिंसारूप है सिर्फ वह नाम से ही अपना धर्म बुद्धिपना बताकर नामसे ही सदृशता में घुमनेवाला विचारे सारे जगत् को ठगती है। जिस धर्म्मबुद्धि को तूं सम्यग्दर्शन की पुत्री करके जानता है, वह तो दूसरी ही है। क्योंकि वहतो प्राणियों के लिये अमृतकीवृष्टिके समान है और तुम्हारे अभ्युदय का हेतुहै यहतो उनको कुपथ्य औषधि और महा कालकूट विष की लता के समान है; और तुम्हारा जड़सेही नाश करने वाली है। जगत् में ऐसे पदार्थ है जो नाम के विपरीत स्वभाववाले होते हैं। हमेशा नाश करनेवाला विष और जीवन देनेवाली औषधि विशेष इन दोनो का विष ऐसे नाम है। धतुरे के पत्ते और नागरवेल के पत्ते इन दोनो का नाम 'पत्ते' सदृशही है, कासी के, शीशे के, तांबे के, चाँदी के और सोने वगेरह के बने हुए रुपये का नाम 'रुपया' सरीखाही है दही, दूध, घी, सर्सोंका तेल, कुरंज का तेल और अनार आदि के रस की 'रस' ऐसी संज्ञा समान है, मगर इन पदार्थों का स्वभाव अलग २ है वह हिंसा हमारे भाई के मंत्री की लड़की होने से उसके सम्बन्ध में ऐसा

बोलना हमको उचित नहीं है, लेकिन शत्रु और मित्र को यथार्थ कहने में हमको कुछ हानि नहीं है" इस प्रकार सुनकर स्वभाव नाम के मंत्री ने कहा- "हे देव! ऐसा कहने से क्या? हमेशा अनुभव करते हुए लोक इसकी सर्व चेष्टा नहीं जानते हों ऐसा नहीं है" फिर शिर घुमाकर कर्मपरिणाम राजा बोला- "अहो! इसने सच्चा कहा क्योंकि यह खुद सद्बोध है, इसलिये इससे क्या अज्ञात है। यह सब जानता है मगर यह जवान और धूर्त होने से हमको बडे पुरुष बनाकर ठगता है" तब दोनों कानों पर हाथ रखकर सद्बोध बोलाः- "अहो! तुम ऐसे न कहो यह सब तुम्हारी ही कृपा है। अब हम जाते हैं हमारे लायक कुछ काम काज होतो फरमाओ" कर्म राजा ने कहा- "ऐसा ही करूंगा, तुम जाओ रास्ते में तुमको कुशलता प्राप्त हो" फिर चारित्र धर्म के पास आकर सब वृतान्त कहा—

अब माता पिता की मृत्यु के दुःख से दुःखित वैश्रमण को कुबेरदत्ती पुत्रीने विशेषतासे धर्म करने का

निश्चय कराया और उस नगर में रहने वाले स्वयभू नाम के त्रिदंडि के मठ में उसको खिचकर लेगई। वहां उसको धर्म सुनवाया और नित्य वहां आने की प्रतिज्ञा कराई. वहां वार २ आने से उसकी इच्छा इतनी वड़ गई की उसने उसके पास से दीक्षा ले ली. फिर त्रिदंडि ने अपने आचार की शिक्षा दी. इससे वह शौचवाद करने लगा, नदी आदि में दिन में तिन वार स्नान करने लगा और तांबे के वर्तन और लंगोट आदि उपकरणों को वार २ धोने लगा, जब उसके गुरु मृत्यु को प्राप्त हुए, तब उनकी जगह उसको स्थापन किया। हमेशा उनके मार्ग काही उपदेश देता, सत्मार्ग को दुषित करता और सद्धर्मचारियों पर द्वेष रखता. हमेशा अपने आत्मा को वडा मानने लगा। इस प्रकार कुधर्मबुद्धि के वशमें हो व मठ आदि में वहुत आशक्त होकर वह मृत्यु को प्राप्त हुआ फिर. अकेन्द्रियादिक में गया और वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक वार २ फिरा। अपनी पुत्री के कार्य्य को देखकर कुदृष्टि उसपर प्रसन्न होकर उसने अपने स्वमी मिथ्यादर्शन को सन्तुष्ट किया. उसने

बोलना हमको उचित नहीं है, लेकिन शत्रु और मित्र को यथार्थ कहने में हमको कुछ हानि नहीं है" इस प्रकार सुनकर स्वभाव नाम के मंत्री ने कहा- "हे देव! ऐसा कहने से क्या? हमेशा अनुभव करते हुए लोक उसकी सर्व चेष्टा नहीं जानते हों ऐसा नहीं है" फिर सिर घुमाकर कर्मपरिणाम राजा बोला- "अहो! इसने सच्चा कहा क्योंकि यह खुद सद्बोध है, इसलिये इससे क्या अज्ञात है! यह सब जानता है मगर यह जवान और धूर्त होने से हमको बडे पुरुष बनाकर ठगता है" तब दोनों कानोंपर हाथ रखकर सद्बोध बोला:- "अहो! तुम ऐसे न कहो यह सब तुम्हारी ही कृपा है। अब हम जाते हैं हमारे लायक कुछ काम काज होतो फरमाओ" कर्म राजा ने कहा- "ऐसा ही करूंगा, तुम जाओ रास्ते में तुमको कुशलता प्राप्त हो" फिर चारित्र धर्म के पास आकर सब वृतान्त कहा—

अब माता पिता की मृत्यु के दुःख से दुःखित वैश्रमण को कुदृष्टिकी पुत्रीने विशेषतासे धर्म करने का

निश्चय कराया और उस नगर में रहने वाले स्वयंभू नाम के त्रिदंडि के मठ में उसको खिंचकर लेगई। वहां उसको धर्म सुनवाया और नित्य वहां आने की प्रतिज्ञा कराई, वहां वार २ आने से उसकी इच्छा इतनी वड़ गई की उसने उसके पास से दीक्षा ले ली, फिर त्रिदंडि ने अपने आचार को शिक्षा दी. इससे वह शौचवाद करने लगा, नदी आदि में दिन में तिन वार स्नान करने लगा और तांवे के वर्तन और लंगोट आदि उपकरणों को वार २ धोने लगा. जव उसके गुरु मृत्यु को प्राप्त हुए, तव उनकी जगह उसको स्थापन किया। हमेशा उनके मार्ग काही उपदेश देता, सत्मार्ग को दुषित करता और सद्धर्मचारियों पर द्वेष रखता, हमेशा अपने आत्मा को वड़ा मानने लगा। इस प्रकार कुधर्मवुद्धि के वशमें हो व मठ आदि में वहुत आशक्त होकर वह मृत्यु को प्राप्त हुआ फिर. अकेन्द्रियादिक में गया और वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक वार २ फिरा। अपनी पुत्री के कार्य्य को देखकर कुदृष्टि उसपर प्रसन्न होकर उसने अपने स्वमी मिथ्यादर्शन को सन्तुष्ट किया, उसने

बोलना हमको उचित नहीं है, लेकिन शत्रु और मित्र को यथार्थ कहने में हमको कुछ हानि नहीं है" इस प्रकार सुनकर स्वभाव नाम के मंत्री ने कहा- "हे देव ! ऐसा कहने से क्या ? हमेशा अनुभव करते हुए लोक उसकी सर्व चेष्टा नहीं जानते हों ऐसा नहीं है" फिर शिर घुमाकर कर्मपरिणाम राजा बोला- "अहो ! इसने सच्चा कहा क्योंकि यह खुद सद्बोध है, इसलिये इससे क्या अज्ञात है ! यह सब जानता है मगर यह जवान और धूर्त होने से हमको बडे पुरुष बनाकर ठगता है" तब दोनों कानोंपर हाथ रखकर सद्बोध बोलाः- "अहो ! तुम ऐसे न कहो यह सब तुम्हारी ही कृपा है। अब हम जाते हैं हमारे लायक कुछ काम काज होतो फरमाओ" कर्म राजा ने कहा- "ऐसा ही करूंगा, तुम जाओ रास्ते में तुमको कुशलता प्राप्त हो" फिर चारित्र धर्म के पास आकर सब वृत्तान्त कहा—

अब माता पिता की मृत्यु के दुःख से दुःखित वैश्रमण को ऋद्धिकी पुत्रीने विशेषनामसे धर्म करने का

निश्चय कराया और उस नगर में रहने वाले स्वयंभू नाम के त्रिदंडि के मठ में उसको खिंचकर लेगई। वहां उसको धर्म सुनवाया और नित्य वहां आने की प्रतिज्ञा कराई, वहां बार २ आने से इसकी इच्छा इतनी बढ़ गई की उसने उसके पास से दीक्षा ले ली. फिर त्रिदंडि ने अपने आचार की शिक्षा दी. इससे वह शौचवाद करने लगा, नदी आदि मे दिन में तिन बार स्नान करने लगा और तांबे के बर्तन और लंगोट आदि उपकरणों को बार २ धोने लगा, जब उसके गुरु मृत्यु को प्राप्त हुए, तब उनकी जगह उसको स्थापन किया। हमेशा उनके मार्ग काही उपदेश देता, सत्मार्ग को दुषित करता और सद्धर्मचारियों पर द्वेष रखता, हमेशा अपने आत्मा को बडा मानने लगा ; इस प्रकार कुधर्मबुद्धि के वशमें हो व मठ आदि में बहुत आशक्त होकर वह मृत्यु को प्राप्त हुआ फिर, अकेन्द्रियादिक में गया और वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक बार २ फिरा। अपनी पुत्री के कार्य्य को देखकर कुदृष्टि उसपर प्रसन्न होकर उसने अपने स्वमी मिथ्यादर्शन को सन्तुष्ट किया, उसने

मोहराजा को यह बात सुनाकर बहुत प्रसन्न किया

फिर बड़े कष्ट से कर्मपरिणाम राजा उसको मनुष्य गति में ले आया, वहां ब्रह्मदत्त नाम के ब्राह्मण का सोमदत्त नामका पुत्र हुआ। वहां मोहराजा की भेजी हुई अपनी पुत्री, उसका पति और अपने कुग्रहादि परिजन की सहायता से आगे होकर कुदृष्टि उसके पास की पास रही। वहां पर उसने यज्ञ आरम्भ करनेमें उत्साह दिलाया, पशु वध में इच्छा कराई, उसको मांस खिलाया, हल, लोह, तल, नमक, कपास, अश्व, बैल भूमी और शस्त्रादिक सम्बन्धी व्यौपार महारंभ में उसको प्रेरा, अन्य की कन्याओं का व्याह करने में उसकी प्रेरणा की। इस प्रकार धर्म के छल से बहुतसा पाप कराकर उसको नरक में डाला, वहां से अेकेन्द्रियादिक में लेजाकर और बहुत भटका कर, अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक उसको फिराया। इस तरह से अन्य २ बोध मत आदि का उपासक बनाकर और वहां धर्म के बहाने से बहुत पाप कराकर, कुदृष्टि सहित मिथ्यादर्शन मत्री ने उस बिचारे के बार

पीछा फिराकर एकेन्द्रियादिक में डाला और वहां अनन्त पुद्गल परावर्त्त तक फिराया।

एक समय मनुष्य क्षेत्र में सौभाग्यपुर नाम के नगर में सुन्दर गृहस्थ के घर वरुण नामका पुत्र उत्पन हुआ देखकर कर्मपरिणाम ने विचार कियाः- "अबतो इसे किसी प्रकार चारित्र धर्म के पास लेजाना चाहिये, परन्तु सिर्फ नामही की धर्मबुद्धि महापापिणी जहांतक इससे दूर नहीं होवे वहां तक ऐसा होना अशक्य है, इसका तिरस्कार तो सम्यगदर्शन की कन्या शुद्धबुद्धि का इसको स्वीकार हो तोही होसक्ता है। जो उन दोनों की विशेषता इसको जानने में आवेतोही यह स्वय उसका स्वीकार करलेगा। उसकी विशेषता तो शुद्धसिद्धांत श्रुति नामकी दृति के कथन सेही वह समझसकता है और उस दूती का आना तो सदागमन के पासही सभव है और वह सदागमन हमेशा सद्गुरु के पासही रहता है. इससे इसको सद्गुरु के पास लेजानेसेही काम पार पडेगा"।